खण्ड–07 सत्र–02 (भाग–03) अंक–16

शुक्रवार 26 नवम्बर, 2021 / 05 अग्रहायण, 1943 (शक)

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्यमेव जयते

सातवीं विधान सभा

दूसरा सत्र

अधिकृत विवरण

(खण्ड–07 (भाग–03) में अंक 16 सम्मिलित हैं।)

दिल्ली विधान सभा सचिवालय

पुराना सचिवालय, दिल्ली–54

सम्पादक वर्ग

EDITORIAL BOARD

राज कुमार

सचिव

RAJ KUMAR

Secretary

महेन्द्र गुप्ता

उप सचिव (सम्पादन)

MAHENDRA GUPTA

Deputy Secretary(Editing)

विषय–सूची

सत्र–2 (भाग–3) शुक्रवार, 26 नवंबर, 2021/05 अग्रहायण, 1943 (शक) अंक–16

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची	3–4
2.	निधन संबंधी उल्लेख	5–7
3.	सदन द्वारा संविधान की उद्देशिका का पढ़ना	8
4.	सदन में अव्यवस्था	9–10
5.	सदन पटल पर प्रस्तुत कागजात	11
6.	प्रतिवेदन का प्रस्तुतीकरण	12
7.	माननीय अध्यक्ष द्वारा व्यवस्था	13
8.	माननीय परिवहन मंत्री द्वारा सदन में अव्यवस्था कर रहे विपक्ष के सदस्य श्री जितेन्द्र महाजन के विरूद्ध प्रस्ताव	15
9.	विशेष उल्लेख (नियम–280)	16–23
10.	नियम–90 के तहत केंद्र सरकार के 3 कृषि कानूनों के संबंध में सरकारी संकल्प तथा उस पर चर्चा	24–86
11.	प्रतिवेदन पर सहमति	87

दिल्ली विधान सभा
की
कार्यवाही

सत्र–2 (भाग–3) शुक्रवार, 26 नवंबर, 2021 / 05 अग्रहायण, 1943 (शक) अंक 16

दिल्ली विधान सभा
सदन पूर्वाह्न 11:04 बजे समवेत हुआ।

निम्नलिखित सदस्य सदन में उपस्थित हुए

1	श्री अजेश यादव	16	श्रीमती प्रीति जितेंद्र तोमर
2	श्रीमती ए धनवंती चंदीला ए	17	श्रीमती प्रमिला धीरज टोकस
3	सुश्री आतिशी	18	श्री प्रकाश जारवाल
4	श्री अब्दुल रहमान	19	श्री रघुविंदर शौकीन
5	श्रीमती बन्दना कुमारी	20	श्री विजेंद्र गुप्ता
6	श्री बी0एस0जून	21	श्री वीरेंद्र सिंह कादियान
7	श्री धर्मपाल लाकड़ा	22	श्री अखिलेश पति त्रिपाठी
8	श्री गिरीश सोनी	23	श्री अभय वर्मा
9	श्री गुलाब सिंह	24	श्री अनिल कुमार बाजपेयी
10	श्री हाजी युनूस	25	श्री अजय कुमार महावर
11	श्री जय भगवान	26	श्री जरनैल सिंह
12	श्री करतार सिंह तंवर	27	श्री जितेंद्र महाजन
13	श्री कुलदीप कुमार	28	श्री महेंद्र गोयल
14	श्री मुकेश अहलावत	29	श्री महेन्द्र यादव
15	श्री नरेश यादव	30	श्री मदन लाल

31	श्री मोहन सिंह बिष्ट	39	श्री रोहित कुमार
32	श्री ओमप्रकाश शर्मा	40	श्री शिव चरण गोयल
33	श्री पवन शर्मा	41	श्री सोमनाथ भारती
34	श्री प्रलाद सिंह साहनी	42	श्री सौरभ भारद्वाज
35	श्री ऋतुराज गोविंद	43	श्री सही राम
36	श्री राज कुमार आनंद	44	श्री एस0के0बग्गा
37	श्रीमती राजकुमारी ढिल्लों	45	श्री सुरेंद्र कुमार
38	श्री राजेश ऋषि	46	श्री विनय मिश्रा

दिल्ली विधान सभा
की
कार्यवाही

सत्र – 02 (भाग–03), शुक्रवार, 26 नवंबर, 2021/अग्रहायण 05, 1943 (शक) अंक–16

सदन पूर्वाह्न 11.04 बजे समवेत हुआ।

माननीय अध्यक्ष महोदय (श्री राम निवास गोयल) पीठासीन हुए।

(राष्ट्रीय गीत –वन्दे मातरम्)

भारत माता की जय

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्यगण, सातवीं विधानसभा के द्वितीय सत्र के तीसरे भाग में आप सबका हार्दिक स्वागत है।

सभी माननीय सदस्यों से मेरा अनुरोध है कि वे कम से कम समय में शालीनतापूर्वक अपने विचार रखें ताकि सदन का समय व्यर्थ न हो।

मैं माननीय सदस्यों को यह बताना चाहूंगा कि एक दिन का विशेष सत्र होने के कारण कार्यसूची में सूचीबद्ध विषयों के अलावा किसी अन्य विषय पर विचार नहीं किया जा सकेगा। अतः मेरा सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि वे सदन को सुचारू ढंग से चलाने में सहयोग दें।

निधन संबंधी उल्लेख

माननीय सदस्यगण, आप सब को यह जानकर अत्यंत दुःख होगा कि दिल्ली विधान सभा की पूर्व सदस्य श्रीमती ताजदार बाबर का दिनांक 02 अक्टूबर, 2021 को देहांत हो गया। वे 72 वर्ष की थी। वे वर्ष 1952 में राजनीति में सक्रिय थीं। वे वर्ष 1983 से 1989 तक दिल्ली महानगर परिषद की उपाध्यक्ष रहीं। वे पहली बार वर्ष 1993 में दिल्ली विधानसभा की सदस्य चुनी गईं। इसके बाद वर्ष 1998 में दूसरी बार तथा वर्ष 2003 में तीसरी बार दिल्ली विधान सभा की सदस्य रहीं।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः उस वक्त आप लोग आपस में थोड़ा बातचीत हो रही थी। ताजदार बाबर जी। दोबारा पढ़ देता हूं। दोबारा पढ़ देता हूं ।

आप को यह जानकर अत्यधिक दुःख होगा कि दिल्ली विधान सभा की पूर्व सदस्य श्रीमती ताजदार बाबर का दिनांक 02 अक्टूबर, 2021 को देहांत हो गया। वे 72 वर्ष की थी। वे वर्ष 1952 में राजनीति में सक्रिय थीं। वे वर्ष 1983 से 1989 तक दिल्ली महानगर परिषद की उपाध्यक्ष रहीं। वे पहली बार वर्ष 1993 में दिल्ली विधानसभा की सदस्य चुनी गईं। इसके बाद वर्ष 1998 में दूसरी बार तथा वर्ष 2003 में तीसरी बार दिल्ली विधान सभा की सदस्य रहीं। वे मिंटो रोड क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती थीं। वे सामाजिक क्षेत्र में लगातार सक्रिय रहीं। विधायक के रूप में उन्होंने पुरजोर ढंग से सदन में अपने क्षेत्र के मुद्दों को उठाया और दिल्ली के विकास में अपना योगदान दिया।

मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से श्रीमती ताजदार बाबर के निधन पर हार्दिक शोक संवेदना प्रकट करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार वालों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

माननीय सदस्यगण, आपको यह जानकर अत्यधिक दुःख होगा कि दिनांक 04 अक्टूबर, 2021 को दिल्ली विधान सभा के पूर्व सदस्य श्री रूप चन्द का देहांत हो गया। वे 77 वर्ष के थे। वे वर्ष 1998 में दूसरी दिल्ली विधान सभा के सदस्य चुने गये थे। वे नंद नगरी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते थे। वे सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता थे। मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से श्री रूप चन्द जी के निधन पर हार्दिक शोक संवेदना प्रकट करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार वालों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

माननीय सदस्यगण, आपको यह जानकर अत्याधिक दुख होगा कि गत दिनों दिल्ली विधानसभा के पूर्व सदस्य श्री अरविंदर सिंह का दिनांक 01 नवम्बर, 2021

को निधन हो गया। वे 56 वर्ष के थे। वे पूर्व केंद्रीय मंत्री स्वर्गीय श्री बूटा सिंह के पुत्र थे। वर्ष 2008 में चौथी विधानसभा के सदस्य चुने गये थे। वे देवली क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते थे। राजनीति और समाज सेवा के अलावा खेलकूद में भी उनकी रूचि थी। मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से श्री अरविंदर सिंह जी के निधन पर हार्दिक शोक संवेदना प्रकट करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार वालों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

माननीय सदस्यगण, आप सबको ज्ञात होगा कि दिनांक 26 नवम्बर, 2008 को मुम्बई शहर पर आतंकवादियों ने हमला किया था और मुम्बई के दो पांच सितारा होटलों में सी.एस.टी रेलवे स्टेशन और एक यहूदी केंद्र को निशाना बनाया गया था। इस आतंकी हमले में 160 से अधिक लोग मारे गये थे और करीब 370 लोग घायल हो गये थे। सैन्य आपरेशन में 15 पुलिस कर्मी और दो एन एस जी कमांडो भी शहीद हुए थे। इस मुठभेड़ में नौ आतंकवादी मारे गये थे और एक आतंकवादी को जिंदा पकड़ लिया गया था जिसे बाद में फांसी दी गई। मैं सभी शहीद सुरक्षाबलों को अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि देता हूं।

माननीय सदस्यगण, जम्मू कश्मीर में आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ की विभिन्न घटनाओं में सुरक्षा बल शहीद हुए हैं और वहां की आम जनता को भी जान गंवानी पड़ी है। मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से सभी शहीदों को श्रद्धांजलि देता हूं और उनके परिजनों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

माननीय सदस्यगण, जैसा कि आप सभी जानते हैं कि कृषि कानूनों के विरोध में किसान संगठन लगातार एक साल से दिल्ली की सीमाओं पर धरना दे रहे हैं और विपरीत परिस्थितियों में भी संघर्ष कर रहे हैं। इसके अलावा देश के विभिन्न भागों में किसानों के प्रदर्शन चल रहे हैं। इस दौरान उत्तरप्रदेश में लखीमपुर सहित कई स्थानों पर अनेक किसानों को अपनी जान गंवानी पड़ी है। मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से उन सभी किसानों को श्रद्धांजलि देता हूं और उनके परिजनों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं। अब दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए सदन द्वारा दो मिनट का मौन धारण किया जाएगा।

(सदन द्वारा दो मिनट का मौन धारण किया गया)

ओम शांति, शांति।

माननीय सदस्यगण, आज भारतीय इतिहास का बहुत महत्वपूर्ण दिन है। आज संविधान दिवस है। भारत का संविधान आज ही के दिन अर्थात् 26 नवम्बर, 1949 को संविधान सभा द्वारा अंगीकृत किया गया था और उसके बाद यह 26 जनवरी, 1950 को लागू किया गया था। मैं इस पावन दिवस पर अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से संविधान प्रारूप समिति के अध्यक्ष डा. भीमराव अम्बेडकर तथा संविधान का निर्माण करने वाले सभी महान नेताओं और विद्वानों का स्मरण करता हूं और उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं जिनके अथक प्रयासों से भारत के संविधान का निर्माण हुआ। संविधान के प्रावधानों का पालन करके ही भारत विश्व का सबसे बड़ा और मजबूत लोकतंत्र बना। आज हम इस सदन में संविधान द्वारा प्रदान की गई शक्तियों के कारण ही बैठे हैं। संविधान दिवस के इस पावन अवसर पर मैं भारत के संविधान की उद्देशिका को पढ़ना चाहूंगा। सदन के सभी सदस्यों से अनुरोध है कि वे अपने स्थान पर खड़े होकर मेरे साथ–साथ बोलेंगे। मैं पहली लाइन बोलूंगा उसके बाद सभी के पास ये पहुंचा होगा टेबल पर। हम सभी साथ–साथ पढेंगे।

हम भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व(थोड़ा धीरे–धीरे, धीरे–धीरे भई। इतना तेजी से नहीं, प्लीज थोड़ा धीरे–धीरे पढ़िए।)

...व्यवधान...

मैं पहले पढ़ता हूं उसके पीछे सब बोलेंगे।

भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व–सम्पन्न समाजवादी पंथ निरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त करने के लिए तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ईस्वी(मार्गशीर्ष

शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं। बहुत–बहुत धन्यवाद। सदन पटल पर प्रस्तुत किए जाने वाले कागजात अब श्री मनीष सिसोदिया जी माननीय उप–मुख्यमंत्री।

श्री मोहन सिंह बिष्टः अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः दो मिनट बैठिये?

श्री मोहन सिंह बिष्टः अध्यक्ष जी पहले।

माननीय अध्यक्षः न मैं, मैंने बोल दिया है।

श्री मोहन सिंह बिष्टः शपथ के साथ

माननीय अध्यक्षः अब आप बैठ जाइए।

श्री मोहन सिंह बिष्टः मैं नियम से बात करता हूं।

माननीय अध्यक्षः मैं अपनी कार्यसूची को पूरा कर लूं।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः हां मैं नियम से बात कर रहा हूं।

श्री मोहन सिंह बिष्टः हमने अभी शपथ ली है।

माननीय अध्यक्षः इस संविधान की पुस्तक ने जो मुझे अधिकार दिए हैं उन अधिकारों का मैं इस्तेमाल कर रहा हूं।

श्री मोहन सिंह बिष्टः उन्हीं अधिकारों की बात कर रहा हूं मैं मेंबर हूं।

माननीय अध्यक्षः मेंबर हूं। मैं अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठा हूं।

श्री मोहन सिंह बिष्टः इस सदन के अंदर।

माननीय अध्यक्षः देखिए, मैं रिकवेस्ट कर रहा हूं बैठिए। मैं आपसे, मैं रिकवेस्ट कर रहा हूं आप सदन का।

श्री मोहन सिंह बिष्टः आप मेरी बात को काटिए मत।

माननीय अध्यक्षः नहीं छोड़िए आप। ये विशेष सेशन है आज एक दिन का विशेष सत्र बुलाया है हमने। आप बैठिए। बैठिए प्लीज बैठ जाइए। आप बैठ जाइए। मैं आग्रह कर रहा हूं बैठिए। मैं आग्रह कर रहा हूं बैठिए। मैं हाथ जोड़ के प्रार्थना कर रहा हूं बैठिए।

श्री मोहन सिंह बिष्टः हाथ जोडकर मेरे

माननीय अध्यक्षः हां बैठ जाइए।

श्री मोहन सिंह बिष्टः मैं भी मेंबर हूं आप मेंबर का गला न घोटिए।

माननीय अध्यक्षः मैं कोई गला नहीं घोट रहा हूं। बैठिए प्लीज बैठिए।

श्री मोहन सिंह बिष्टः मैं अपनी बात को रख रहा हूं। और ये मेरा नैतिक दायित्व बनता है।

माननीय अध्यक्षः हरियाणा का पराली का रोक दीजिए दिल्ली सुरक्षित हो जाएगी। बैठ जाइए। बैठ जाइए अब।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः ये सच्चाई बोल रहा हूं मैं।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः गला घोट दिया दिल्ली का। दिल्ली पर जबर्दस्त पटाखे चलाकर। गला घोट दिया आपने दिल्ली का और बात करते हो प्रदूषण की आप।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः जंतर मंतर पर प्रदर्शन करवाते हो। जंतर मंतर पर प्रदर्शन करवाते हो। पटाखे चलाएंगे। हम पटाखे चलाएंगे। यहां गला घोटते हो। आपको पता है मेरी वाईफ एक महीने से बाहर नहीं निकली है। एक महीने से बाहर नहीं निकली

है मेरी वाईफ। बैठ जाइए।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मैं आग्रह कर रहा हूं बैठ जाइये प्लीज।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः हां बैठ जाइए प्लीज। सभी सदन के मेंबर हैं। पूरी दिल्ली सदन का मेंबर है। आप ही सदन के मेंबर नहीं हैं।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः बैठ जाइए। अब माननीय श्री मनीष सिसोदिया जी, माननीय उप–मुख्यमंत्री कार्यसूची में दर्शाये गए अपने विभाग से संबंधित दस्तावेजों की प्रतियां सदन पटल पर प्रस्तुत करेंगे।

...व्यवधान...

माननीय उप–मुख्यमंत्री (श्री मनीष सिसोदिया): अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से कार्यसूची में क्रमांक तीन में दर्शाए गए दस्तावेजों की अंग्रजी और हिंदी प्रतियां पटल पर प्रस्तुत करता हूं।

1. दिल्ली प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय का वर्ष 2019–20 हेतु छठा वार्षिक प्रतिवेदन एवं छठे वार्षिक प्रतिवेदन के मुख्य बिंदु(अंग्रेजी प्रति)[1]

2. इंद्रप्रस्थ सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली(आई.आई.आई.टी.डी.) के वित्तीय वर्ष 2019–20 के लेखा पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की लेखा परीक्षा रिपोर्ट तथा कृत्य कार्रवाई रिपोर्ट(हिन्दी एवं अंग्रेजी प्रति)[2]

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद।

---

1 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–22053 पर उपलब्ध।

2 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–22054 पर उपलब्ध।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः अब सुश्री बिरला, राखी बिरला जी, सुश्री भावना गौड़ जी प्रश्न एवं संदर्भ समिति का प्रथम प्रतिवेदन प्रस्तुत करेंगे। यह प्रतिवेदन 9 सितंबर 2021 को समिति ने स्वीकार किया था इसके बाद ये सरकार को आवश्यक कार्यवाही हेतु भेज दिया गया था। आज सदन की बैठक में इसे प्रस्तुत किया जा रहा है।

...व्यवधान...

सुश्री राखी बिरलाः अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से प्रश्न एवं सदंर्भ समिति का प्रथम प्रतिवेदन सदन में प्रस्तुत करती हूं।[3]

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मैं आग्रह कर रहा हूं, मैं आग्रह कर रहा हूं कि ये 280 चालू हो रहा है आप बैठ जाइए। 280 चालू हो रहा है आप बैठिए। मैं आग्रह कर रहा हूं रूलिंग दे दिया मैंने। मैंने रूलिंग दे दिया फिर रूलिंग पढ़ कर सुना देता हूं।

...व्यवधान...

श्री मोहन सिंह बिष्टः इस पर चर्चा होनी चाहिए।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मैं आग्रह कर रहा हूं बैठें।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मैंने ये रूलिंग आपको पढ़ कर सुनाई है। फिर रूलिंग पढ़ देता हूं। आप रूलिंग की बात कर रहे हैं, आपने रूलिंग की बात की है न मैं रूलिंग

---

3 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर–22055 पर उपलब्ध।

पढ़ कर फिर सुना देता हूं। यह सत्र विशेष प्रयोजन के लिए बुलाया गया है, मैं पूरा पढ़ कर सुना देता हूं। मुझे नेता, प्रतिपक्ष श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी जी, श्री मोहन सिंह बिष्ट जी, श्री अभय वर्मा जी, श्री जितेंद्र महाजन जी, श्री अजय महावर जी, हाजी मोहम्मद युनूस जी, श्री रोहित कुमार जी, श्री कुलदीप कुमार जी तथा श्री अखिलेश पति त्रिपाठी जी से विभिन्न विषयों के संबंध में सूचनाएं प्राप्त हुई हैं। यह सत्र विशेष प्रयोजन के लिए बुलाया गया है। सदन के समय के समय के अधिकतम सदुपयोग तथा सभी सदस्यों को...

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः देखिए, बिधूड़ी जी, बैठाइए।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः ये संविधान का उल्लंघन है। नहीं मैं कुछ नहीं अलाऊ । मैं कुछ भी अलाऊ नहीं करूंगा। मैं रिक्वेस्ट कर रहा हूं कि बैठाइए इनको। ये थोड़ी है कि यही सेशन है फिर बाद में सेशन नहीं आएगा। बाद में भी सेशन आएगा। बैठ जाइए।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः ना, मैं नहीं कराऊंगा। आप कितना ही शोर मचा लीजिए। आप यह कहेंगे बाहर निकाल दीजिए, मैं बाहर भी नहीं निकालूंगा आज और मुझे तंग करेंगे तो बाहर निकालना पड़ेगा। मैं आग्रह कर रहा हूं, हाथ जोड़ के प्रार्थना कर रहा हूं जो आज एक दिन का विशेष सत्र बुलाया गया है उसी पर चर्चा होगी। आप चले जाइए, खुद चले जाइए। केवल, केवल एक ही विषय पर चर्चा होगी।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः बैठिए, बैठिए।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः आप मत बोलो प्लीज।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः आपने अपनी बात रख ली, सदन ने सुन ली, मीडिया ने सुन ली, मैंने अपनी रूलिंग दे दी, मैंने अपनी रूलिंग दे दी, प्रार्थना कर ली, हाथ जोड़ के प्रार्थना कर दी कृप्या बैठिए। अगर सदन में बैठना है तो बैठिए।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मोहन जी मुझे मजबूर मत करिए, मुझे मजबूर मत करिए प्लीज। मुझे मजबूर मत करिए, मैं धमका नहीं रहा हूं। मुझे मजबूर मत करिए। मुझे मजबूर मत करिए प्लीज। बैठिए। मैं नियम को ताक पर नहीं रख रहा हूं नियम की किताब ने मुझे अधिकार दिया है।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मैं प्रार्थना कर रहा हूं मोहन सिंह बिष्ट जी से, जितेंद्र महाजन जी से, अनिल वाजपेयी जी से आज की इस कार्यवाही के लिए सदन छोड़ दें। मैं तीनों से प्रार्थना कर रहा हूं। तीनों से प्रार्थना कर रहा हूं आज की कार्यवाही तक सदन छोड़ दें। नहीं मैं आग्रह कर रहा हूं। मैंने रूलिंग दे दी। मैंने आपको रूलिंग दे दी है मुझे मजबूर मत करिए मार्शल्स बुलाने के लिए। कोई बात नहीं आप जो मर्जी आए बोलिए।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मैं बहुत नम्रता से आग्रह कर रहा हूं सदन छोड़ दीजिए। सदन छोड़ दीजिए। मैं फिर दोहरा रहा हूं मोहन सिंह बिष्ट जी, जितेंद्र महाजन जी, अनिल वाजपेयी जी, तीनों से आग्रह है सदन छोड़ दीजिए। मार्शल्स, मार्शल्स तीन सदस्यों को मोहन सिंह बिष्ट, जितेंद्र महाजन।

...व्यवधान...

माननीय सदस्यः तीनों को बाहर करें अनिल वाजपेयी जी को, अनिल वाजपेयी को बाहर करिए मार्शल्स क्यों देर लगा रहे हैं। अनिल वाजपेयी, मोहन सिंह बिष्ट।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः नहीं मैं अभी इनको बाहर, कार्यवाही को होने दो पूरा। जल्दी करिए भई, क्या सोच रहे हैं आप? क्या सोच रहे हैं? अनिल वाजपेयी जी, मोहन सिंह बिष्ट।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः बैठिए, बैठिए।

माननीय परिवहन मंत्री (श्री कैलाश गहलौत): अध्यक्ष जी, जिस प्रकार से ये सदन का अपमान किया जा रहा है, अध्यक्ष जी, जिस प्रकार से इस सदन का अपमान बार बार किया जा रहा है मैं आपसे यह हाथ जोड़ कर विनती करता हूं कि जो विधायक जी हैं जितेंद्र जी, उनको पूरे सेशन के लिए सस्पेंड किया जाए क्योंकि इस प्रकार से हम टॉलरेट नहीं करेंगे बिलकुल। बात कहना हर एक मेंबर का अधिकार है लेकिन इस सदन का, स्पीकर साहब का अपमान करना बिलकुल बर्दाश्त नहीं करेंगे हम। मेरी आपसे हाथ जोड़ कर विनती है कि आप उनको पूरे सेशन के लिए सस्पेंड करें।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः माननीय मंत्री गहलौत जी का प्रस्ताव सदन के सामने है।

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे न कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः प्रस्ताव पारित हुआ, पारित हुआ। जितेन्द्र महाजन जी को पूरे इस सेशन के लिए सदन की कार्यवाही से वंचित किया जाता है।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः अब 280 श्री गिरीश सोनी जी। उतना ही बोलेंगे जितना लिखकर दिया है।

श्री गिरीश सोनीः ठीक है।

माननीय अध्यक्षः उससे ज्यादा अपनी तरफ से नहीं जोड़ेंगे प्लीज़।

विशेष उल्लेख (नियम–280)

श्री गिरीश सोनीः धन्यवाद अध्यक्ष जी आपने नियम 280 के तहत मेरे क्षेत्र की समस्या को उठाने का मौका दिया। अध्यक्ष जी, मेरी विधानसभा में वार्ड–3 एस के अन्दर एक बहुत बड़ा बारातघर हुआ करता था कोई 18–20 साल पहले एस.डी.एम. सी. ने ऑफिस के लिए ड्यूसिब से उसे ले लिया और उसके बाद कोई ऐसा जितनी बड़ी तादाद में कोई जहां कार्यक्रम कर सकें कोई ऐसी जगह है नहीं और वहां कुछ बड़े–बड़े टैंट वगैरह जरूर लगे हैं राजा गार्डन के अन्दर जिनके चार्जिज़ बहुत महंगे होते हैं तो अध्यक्ष जी मेरा ये मानना है कि अगर जो एस.डी.एम.सी. को ड्यूसिब ने जो बारातघर की जगह दी थी अब एस.डी.एम.सी. का एक नया ऑफिस बनकर राजा गार्डन में डी.एम. ऑफिस के साथ बनकर तैयार हो चुका है वो वहां शिफ्ट कर चुके हैं लेकिन उसको ड्यूसिब द्वारा खाली कराया जाये और वापिस इसको बारातघर के रूप में तब्दील किया जाये मेरा यही मानना है अध्यक्ष जी मैंने जितना लिखा है उससे भी कम में शॉर्ट कर दिया है तो बस ये है कि इसको अपने संज्ञान में लेकर जिससे कि दिल्ली सरकार के ड्यूसिब विभाग को इसका रेवेन्यू भी प्राप्त हो धन्यवाद अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद गिरीश जी। गुलाब सिंह जी, राजकुमार आन्नद जी।

श्री राज कुमार आनंदः बहुत–बहुत धन्यवाद जो आपने नियम 280 के तहत मुझे बोलने का मौका दिया। मान्यवर, हम सभी जानते हैं और देख भी रहे हैं कि दिल्ली के मुख्यमंत्री माननीय अरविंद केजरीवाल जी के नेतृत्व में दिल्ली का हर खास और

आम आदमी सुख और सुरक्षा का अनुभव कर रहा है। जहां उनके मुख्यमंत्री बनने से पहले दिल्ली के केवल 55 परसेंट इलाकों में पानी पाइप लाइनों से सप्लाई होता था आज उनके कुशल नेतृत्व में ये पाइप लाइनों द्वारा पानी की सप्लाई बढ़कर 95 परसेंट हो गई है और उसके लिए मैं मुख्यमंत्री जी को बहुत–बहुत बधाई देता हूँ। वैसे ही पिछले दिनों जब हरियाणा की भाजपा सरकार ने दिल्ली का पानी रोक लिया था तब दिल्ली के जल मंत्री श्री सतेन्द्र जैन एवं उपाध्यक्ष श्री राघव चढ्डा जी ने दिन–रात एक करके भी दिल्ली को पानी के संकट से उबारा वे भी इसके लिए बधाई के पात्र हैं। अध्यक्ष जी में आपके माध्यम से आदरणीय जल मंत्री जी को अपनी विधानसभा पटेल नगर की भौगोलिक स्थिति के बारे में बताना चाहता हूँ। अध्यक्ष जी मेरी विधानसभा पटेल नगर का कुछ क्षेत्र जो पहाड़ी पर स्थित है उस क्षेत्र में मुख्यतः गुलशन चौक, पंजाबी बस्ती, गायत्री कॉलोनी, भील बस्ती, अम्बेडकर पार्क, नेहरू नगर, फरीद पुरी और तिरंगा चौक आदि आते हैं। मान्यवर, मेरा आपके माध्यम से यही निवेदन है चूंकि इन जगहों पर पानी की पाइप लाइन तक नहीं है तो मेरी विधानसभा क्षेत्र की इन बस्तियों में लोगों को पानी की सुविधा देने के लिए वहां की भौगोलिक स्थिति ये ऊँचा–नीचा एरिया है पहाड़ी एरिया को देखते हुये उचित एवं उच्च तकनीक का इस्तेमाल करते हुये एक सर्वे कराया जाये और वहां पानी की पाइप लाइन बिछाने का मार्ग प्रशस्त किया जाये ताकि इन झुग्गियों में भी दलित और गरीब लोगों के घरों में भी पानी पहुंचाया जा सके। मुझे उम्मीद है कि मेरे इस क्षेत्र की इस असाधारण समस्या पर जल मंत्री जी जल्द संज्ञान लेंगे बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद आन्नद जी। जरनैल सिंह जी।

श्री जरनैल सिंहः थैंक्यू स्पीकर सर। अध्यक्ष जी ड्यूसिब डिपार्टमेंट की तरफ से पूरी दिल्ली में कई जगह पार्किंग के कॉन्ट्रेक्ट दिये जाते हैं। मेरी विधानसभा में भी दो ऐसे एरिया हैं जहां पर ड्यूसिब ने पार्किंग दे रखी है। परेशानी ये है अध्यक्ष जी कि ये कॉन्ट्रेक्ट जो पार्किंग का है ये जनवरी 2021 में एक्सपायर हो गये थे उसके बाद कुछ महीने तो कोविड की वजह से रिन्यू नहीं हो पाये पर अब काफ़ी टाइम हो चुका है और ऐसी लगभग दिल्ली में 50 साइट्स हैं जिनके टेन्डर खत्म होने के बाद भी ड्यूसिब दोबारा–दोबारा कॉन्ट्रेक्ट नहीं किए जा रहे और कॉन्ट्रेक्टर वहां पर बिना

सरकार को पैसे दिये पार्किंग चला रहे हैं अगर कॉन्ट्रेक्टर पर दबाव डालकर उसको वहां से हटाया जाता है तो जो लोग हैं जिनकी सैकड़ों गाड़ियां वहां पार्क होती हैं उन लोगों को परेशानी होती है। गाड़ी चोरी हो जाती है किसी की गाड़ी का शीशा टूट जाता है, किसी का कुछ और नुकसान हो जाता है तो डिपार्टमेंट से एक तो ये पूछा जाये कि क्यों पार्किंग के टेन्डर खत्म होने के बावजूद भी डिपार्टमेंट दोबारा टेन्डर नहीं कर रहा और ये जल्दी से जल्दी करवाया जाये क्योंकि हर दिन बेहिसाब शिकायतें उन लोगों की आती हैं जिनकी गाड़ियों का वहां पर नुकसान हो रहा है तो मेरे को डिपार्टमेंट ने ये इंफॉर्मेशन तो दे दी है कि कितनी गाड़ियों, कितने पार्किंग के टेन्डर एक्सपायर हो गये हैं पर जो डिले हुआ उसकी वज़ह से जो सरकार का नुकसान हुआ उसका कोई कारण नही बता रहे और कब ये टेन्डर दोबारा हो जायेंगे उसका कोई पुख्ता जवाब नहीं दे रहे थैंक्यू अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद, श्री विशेष रवि जी, श्री मुकेश अहलावत जी।

श्री मुकेश अहलावतः आदरणीय अध्यक्ष महोदय आपने मुझे रूल 280 पर बोलने का मौका दिया उसके लिए आपका बहुत–बहुत शुक्रिया। आज सभी विधायकों को संविधान दिवस पर भी बहुत–बहुत शुभकामनायें। अध्यक्ष महोदय, मैं आपका ध्यान दिल्ली के कार्यालयों पर दिलाना चाहता हूँ जिनकी दीवारें सुनसान और वीरान हैं जबकि उन दीवारों पर देश के महापुरूषों के चित्र लगे होने चाहियें क्योंकि ये सब केवल हमारी प्रेरणा ही नहीं, सभी देशवासियों की प्रेरणा है। चाहे बूढ़े हों, जवान हों, कैसे भी हों सभी उनको मानते हैं जैसे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी हैं, का चित्र है जो 'Symbol of Non-violence, Truth and Peace' को दर्शाता है। हमारे भारत रत्न डा0 भीमराव अम्बेडकर जी का चित्र 'Symbol Of Justice' को दर्शाता है। हमारे शहीद भगत सिंह जी का चित्र 'Symbol Of Sacrifice' को दर्शाता है। हमारे डा0 ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का चित्र 'Symbol of Knowledge and Science & Technology' को दर्शाता है। हमारी सावित्री बाई फूले जी का चित्र 'Symbol of Woman Education and Woman Equality' को दर्शाता है। इन सभी के योगदानों को हम भूला नहीं जा सकते और न हम भूलने भी देना चाहते। मैं कई राज्यों में घूमा हूँ, कई कार्यालय देखे हैं मैंने, उन कार्यालयों में इन सबकी तस्वीर

लगती है और वहां के मुख्यमंत्री की भी लगती है लेकिन मैंने देखा है कि हमे बड़ा आश्चर्य होता है कि मैं जब किसी कार्यालय में जाता हूँ तो हमारे मुख्यमंत्री की भी नहीं लगी होती और न ही हमारे किसी राष्ट्र पुरूषों की भी लगी होती है। तो मेरी आपसे विनती है कि हमारे जितने भी कार्यालय हैं दिल्ली के, चाहे उसमें सरकारी स्कूल हों, चाहे दिल्ली के अस्पताल हों, एम.सी.डी. के कार्यालय हों उन सभी पर अब इन महापुरूषों की भी तस्वीरें लगें और हमारे मुख्यमंत्री की भी लगे और बाकी नहीं लगे तो कारण बताया जाये क्यों नहीं लग सकती? तो ज्यादा न बोलकर मैं बस इतना ही कहना चाहूंगा कि 175वीं वर्षगांठ में जैसे हम 500 झंडे लगाकर राष्ट्र को राष्ट्र भावना दिखा रहे हैं तो हम इसको भी एक दिखाकर अच्छा संदेश दे सकते हैं तो लास्ट में यह मैं बोलूंगा।

भूलो न बीते जमानों को, भूलो न बलिदानों को।

शहीदों को जवानों को, हम इन आज़ादी के दीवानों को। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष: धन्यवाद धन्यवाद मुकेश जी। पवन शर्मा जी।

श्री पवन शर्मा: धन्यवाद अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे 280 के तहत बोलने का मौका दिया। अध्यक्ष महोदय जिस प्रकार से दिल्ली सरकार दिल्ली में पॉल्यूशन को कंट्रोल करने में जो प्रयास कर रही है और कोशिश की है उसके लिए मैं सी. एम. साहब और माननीय पर्यावरण मंत्री जी का धन्यवाद करता हूँ। अध्यक्ष महोदय, आदर्श नगर विधानसभा में आजादपुर मण्डी है और वहां पर ट्रकों के ट्रैफिक की बहुत आवाजाही है जिससे वहां का पॉल्यूशन लेवल काफी बढ़ जाता है तो मैं आपके माध्यम से माननीय पर्यावरण मंत्री जी श्री गोपाल राय जी से अनुरोध करता हूँ कि वहां पर आदर्श नगर विधानसभा में भी एक स्मॉग टावर लगाया जाये। मुझे 280 के तहत बोलने का मौका दिया, धन्यवाद अध्यक्ष महोदय।

माननीय अध्यक्ष: धन्यवाद पवन जी बहुत–बहुत धन्यवाद। अजय कुमार महावर एब्सेंट, श्री भूपेन्द्र सिंह जून जी।

श्री भूपेन्द्र सिंह जून: धन्यवाद सर, सर बिजवासन विधानसभा में 18 Group

Housing Societies हैं, 60 DDA Sector और 3 DDA pockets हैं। इन एरियाज़ में सड़कों की बहुत बुरी हालत है। डेढ़–डेढ़, दो–दो फुट के गढ्ढे हो चुके हैं। डी.डी.ए. वाले न इनका रख–रखाव करते हैं, न इनकी रिपेयर करते हैं, न एम.सी. डी. करती है। सब लोग किसके पास जायें इन एरियाज़ के, तो मेरा एक सुझाव था कि जो 60 फुट से चौड़ी सड़कें हैं अगर ये सड़कें पी.डब्ल्यू.डी. इनको रिपेयर कराये तो लोगों को कुछ राहत मिलेगी। दूसरे जो छोटी सड़कें हैं उनको दिल्ली गर्वमेंट के दूसरे डिपार्टमेंट जैसे Flood Control है, DSIIDC है वो करा सकते हैं तो इन लोगों को छुटकारा इस मुसीबत से दिलवाने के लिए दिल्ली सरकार को भी इनकी तरफ सर ध्यान देना चाहिए। दूसरा सर इन एरियाज़ में जो पेड़ हैं वो इतने पुराने होकर झुक गए हैं कि उनकी आज तक न pruning हुई है, न trimming हुई है, न Horticulture Department DDA का कुछ करता है, न Horticulture Department MCD का कुछ करता है। तो मेरी वन मंत्री महोदय से रिक्वेस्ट है कि Forest Department को कहा जाए कि इनकी pruning कराये जिसके न होने से महिलायें बहुत असुरक्षित हो गई हैं क्योंकि इन्होंने स्ट्रीट लाइट को ही ब्लॉक कर दिया है, डेली यहां कोई न कोई incident होती है। तो सर इस पर ध्यान देने की बड़ी जरूरत है और मुझे उम्मीद है कि माननीय मंत्री इस तरफ ध्यान देंगे धन्यवाद सर।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद धन्यवाद। प्रमिला धीरज टोकस जी।

श्रीमती प्रमिला धीरज टोकसः धन्यवाद अध्यक्ष जी, अध्यक्ष जी मैं आपका ध्यान मेरे विधानसभा में बढ़ते मोबाइल टावरों की ओर दिलाना चाहती हूँ। अध्यक्ष जी दक्षिण
ी दिल्ली नगर निगम कहीं भी टावर खड़ा कर देती है। इनमें से कई तो पी.डब्ल्यू. डी. की ग्रीन क्षेत्र पर भी हैं जिसको पेड़ या घास हटाकर खड़ा किया गया है। अब पार्कों में भी शुरू कर दिया है। अध्यक्ष जी जो एम.सी.डी. के पार्क थे जिसमें बच्चे खेलने जाते हैं, बुजुर्ग बैठते हैं उसमें भी अब टावरों को लगाना शुरू कर दिया है और परसों ही मेरे यहां पर महिलायें इकट्ठा होकर आईं । हमारे शांति निकेतन में भी उन्होंने टावर खड़ा किया और वहां पर बुजुर्ग भी बहुत ज्यादा हैं, बच्चे भी हैं जो वहां पर आते हैं तो उन्होंने ये चिंता जताई कि उससे रेडिएशन निकलता है और ये

इस महामारी में जहां दिल्ली सरकार को कोरोना काल में कोरोना काल की महामारी से ग्रस्त लोगों की देखभाल कर रही थी। एस.डी.एम.सी. और वहां के निगम पार्षद जगह–जगह टावर खड़े करने में लगे थे इनमें से कई मे generator भी लगे हैं। जब नगर निगम से मैंने ये टावर खड़े करने की अनुमति आदि की जानकारी मांगी तो उन्होंने मना कर दिया। उन्होंने कोई जानकारी नहीं दी। अतः इस सदन के माध्यम से दक्षिणी दिल्ली नगर–निगम से मैं जानना चाहती हूँ कि आर.के. पुरम् विधानसभा में कहाँ–कहाँ, किस–किस की अनुमति से और किस कानून के तहत कब–कब इन्होंने कितने मोबाइल टावर खड़े किए हैं। मैं ये भी जानना चाहूंगी कि इन सबकी प्रणाली व पद्धति की जांच हो और गैर कानूनी तरीके से खड़े किए टावरों पर व खड़े करने वाले अफसरों पर कड़ी कार्रवाई की जाए, धन्यवाद अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः 280 में अभी थोड़ा सा समय है। श्री सोमनाथ भारती जी आये हैं, नहीं। नरेश यादव जी। बस और नहीं एक यादव जी।

श्री नरेश यादवः धन्यवाद अध्यक्ष जी, जो आपने मुझे मेरे क्षेत्र की समस्या उठाने का मौका दिया। अध्यक्ष जी, मेरे क्षेत्र में महरौली वार्ड के अन्दर मुख्यमंत्री पुनर्निर्माण सड़क योजना के तहत 2019 में काफी फंड एम.सी.डी. को दिया गया था लेकिन एम.सी.डी. ने आज तक जो हमने दिल्ली सरकार से फंड दिलवाया, उसके ऊपर वो सड़क नहीं बनाई और इसके अलावा अध्यक्ष जी जो दिल्ली जल बोर्ड द्वारा भी वहां पर पाइप लाइन का प्रोजेक्ट चल रहा है उसके लिए भी रोड कटिंग चार्जिज़ काफी अमांउट में एम.सी.डी. को दिया गया लेकिन एम.सी.डी. उसके ऊपर कोई कार्यवाही नहीं कर रही है। इवन एम.सी.डी. बोल रही है कि दिल्ली सरकार, दिल्ली जल बोर्ड ने वो सारी सड़क तोड़ी है लेकिन हमारा पैसा जमा होने के बावजूद भी एम.सी.डी. ने वो काम नहीं किए। तो आपके माध्यम से अध्यक्ष जी मेरा अनुरोध है कि एम.सी.डी. को इन्स्ट्रक्शन दी जाये कि महरौली की सड़कों का निर्माण जल्दी से जल्दी हो, बहुत–बहुत धन्यवाद अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद, इससे पहले श्री माननीय गोपाल राय जी, नहीं अब नही प्लीज़।

नहीं अब नहीं क्यों। अब ये सोमनाथ भारती जी खड़े हैं क्या।

श्री सोमनाथ भारतीः जी।

माननीय अध्यक्षः आपने दाढ़ी कब हटा ली?

श्री सोमनाथ भारतीः अब दाढ़ी में बड़ा रिस्क है।

माननीय अध्यक्षः श्रीमान सोमनाथ भारती जी।

श्री सोमनाथ भारतीः अध्यक्ष महोदय आपका बहुत–बहुत धन्यवाद कि आपने मुझे 280 में मुद्‌दा उठाने का मौका दिया। अध्यक्ष महोदय पॉल्यूशन एक बहुत बड़ा।

श्री सौरभ भारद्वाजः रिस्क क्या है।

श्री सोमनाथ भारतीः जी।

श्री सौरभ भारद्वाजः रिस्क क्या है।

श्री सोमनाथ भारतीः रिस्क ये है कि वो लोग कहते हैं कि 15 लाख लेकर आओ।

माननीय अध्यक्षः अब लम्बा हो जायेगा सोमनाथ जी मालूम है न ज्यादा बोलते हैं।

श्री सोमनाथ भारतीः अध्यक्ष महोदय, पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए एक बहुत बड़ा जो measure हमारी सरकार भी उठा रही है कि ट्रैफिक को कैसे de-congest किया जाये। traffic de-congestion करने के लिए कई सारे measures roads के ऊपर उठाये जा रहे हैं। रोड्स को चौड़ा करना, left turn को widen करना। उसी प्रकार से चूंकि कई जगह सड़कें जो 100 फुट की थीं वो 60 फुट की रह गईं, जो 60 फुट की थीं वो 40 फुट की रह गईं तो कई सारे measures कई विधायक साथियों ने भी लिया है। माननीय केजरीवाल साहब की मदद से मैंने भी अपने क्षेत्र में लिया है। चौधरी दिलीप सिंह मार्ग के ऊपर जो हौज़खास में ये रोड है वहां पर हमने गोल चक्कर बनाया तो डी.डी.ए. के पार्क का एक टुकड़ा लेकर के वहां

गोल चक्कर बनाया जहां कि घंटों जाम लगा करता था आज वहां एक सैकेंड का जाम नहीं लगता। ऐसे measures welcome किए जाने चाहिएं लेकिन एम.सी.डी. को पता नहीं क्या सूझा है, भाजपा शासित एम.सी.डी. में कोई भी अच्छा काम करने की सोचो उनके वो तो खुद करते नहीं है, न करते हैं न करने देंगे उनका ये पॉलिसी रहा है। मैं अपने क्षेत्र के अन्दर प्रैस एन्क्लेव रोड से मालवीय नगर गोल चक्कर को जो रोड जोड़ती है उस रोड का चौड़ीकरण करने के लिए अध्यक्ष महोदय, पिछले चार साल से विधायक निधि फंड भी ले लिया, कार्यक्रम का उद्घाटन भी हो गया। डिप्टी कमिश्नर भी आ गये लेकिन वहां के जो पार्षद हैं वो बीच में अड़ंगा डाल रहे हैं। इस प्रकार ऐसे कई सारे काम हैं। विधायक निधि फंड देने के बावजूद अगर इनको नहीं करना था तो हमारा विधायक निधि फंड क्यों लिया। अध्यक्ष महोदय, आपके मार्फत् आपके संज्ञान में एम.सी.डी. को और भाजपा शासित एम.सी.डी. को, उनके पार्षदों को, इस प्रकार का काम न करें या तो अगर आपको नहीं करने देना है तो हमारा फंड मत लीजिए। हमने फंड दे दिया, आज वहां पर घंटों जाम लग रहा है और सिर्फ और सिर्फ भाजपा के पार्षदों को खुश करने के लिए या भाजपा के पार्षद वहां पर अड़ंगा डाल रहे हैं इसी कारण से हमारा काम नहीं हो रहा है। मैं आपसे हाथ जोड़कर विनती करता हूँ कि एम.सी.डी. कमिश्नर को बोलें कि भई अगर आपने फंड ले लिया, उद्घाटन हो गया तो काम को पूरा करें, ये मेरी आपसे हाथ जोड़कर विनती है।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद, श्रीमान गुलाब सिंह जी।

श्री गुलाब सिंहः धन्यवाद अध्यक्ष जी। मेरा विशेष तौर पर ग्रामीण विकास बोर्ड को लेकर एक बहुत महत्वपूर्ण मैं बात रखने जा रहा हूँ। वर्ष 2018 और 19 में जो वर्क आर्डर हुए थे हमारे यहां पर कई सारे गाँव हैं, कैलाश भाई के यहां भी होंगे सब तमाम हमारे जो ग्रामीण क्षेत्र के विधायक साथी हैं और 2018–19 के वर्क आर्डर थे इन बिटविन फिर इलेक्शन आ गया, इलेक्शन के बाद कोरोना हुआ वो सारी स्थिति भी हम समझते हैं लेकिन जिस तरह से अनऑथोराइज़ कॉलोनी में थोड़ा फंड मिला और कुछ काम शुरू हो गये हैं जो ऑनगोइंग प्रोजेक्ट थे। उसी तरह से मैं चाहूंगा माननीय मनीष जी भी यहां पर हैं जो कि फाइनेंस देखते हैं और माननीय गोपाल राय

जी भी यहां बैठे हैं कि गांव की जो चौपालों के काम पिछले दो–ढाई साल से रूके हुए हैं, बार–बार लोग गांवों से आ रहे हैं और बड़ी रिक्वेस्ट कर रहे हैं। चौपाल के काम हैं और कई सारे पार्क वगैरह के काम हैं सारे काम बन्द पड़े हैं। इसके ऊपर कुछ अगर धनराशि आबंटित हो जाए, कुछ पैसा रिलीज़ हो जाये तो बहुत–बहुत मेहरबानी होगी अदरवाइज़ बहुत समस्याओं का सामना हमें करना पड़ रहा है बस इतना मुझे कहना था। बहुत–बहुत शुक्रिया धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद आपका। इससे पहले कि माननीय गोपाल राय जी हैं संकल्प प्रस्तुत करें अब। राखी बिरला जी ने एक अनुरोध किया है, अब नहीं। राखी बिरला जी ने अनुरोध किया है मैं वो आपको पढ़कर सुना रहा हूँ। मुझे आप सबको सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि वर्तमान विधानसभा की उपाध्यक्षा कुमारी राखी बिरला जी का आगामी 12 दिसम्बर, 2021 को परिणय सूत्र में बंधने जा रही हैं। मैं अपनी और से पूरी विधानसभा की ओर से उनको हार्दिक बधाई और शुभकामनायें देता हूँ। इस शुभ अवसर पर आप सभी साथी राखी बिरला जी की ओर से तो हैं ही, मेरी ओर से भी सादर आमंत्रित हैं। निमंत्रण–पत्र आपको मिल गया होगा, नहीं तो मिल जायेगा। इस मंगल–मिलन के शुभ–अवसर पर आप सभी उपस्थित होकर उन्हें अनुग्रहित करेंगे। अब माननीय मंत्री श्री गोपाल राय जी, विकास मंत्री नियम 90 के तहत सरकारी संकल्प प्रस्तुत करने की अनुमति लेंगे, आदरणीय गोपाल जी।

माननीय विकास मंत्री(श्री गोपाल राय): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं नियम 90 के तहत सरकारी संकल्प प्रस्तुत करने की आपसे अनुमति चाहता हूँ।

माननीय अध्यक्षः यह प्रस्ताव सदन के सामने है

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं, वे न कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता, प्रस्ताव पारित हुआ।

अब माननीय मंत्री जी को संकल्प प्रस्तुत करने की अनुमति दी गयी।

माननीय विकास मंत्री (श्री गोपाल राय): माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो मैं इस देश के अन्दर भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन के गर्भ से 26 नवम्बर को ही इस देश के अन्दर राजनीतिक बदलाव के लिए बनाई गई पार्टी, हमारी पार्टी इस सदन में बैठे हुए सभी विधायकों की पार्टी। इस देश के अन्दर एक नई आकांक्षा की पार्टी आम आदमी पार्टी के स्थापना दिवस पर सभी सदस्यों को सभी दिल्ली वालों को और देशवासियों को मैं बधाई देता हूँ। अध्यक्ष महोदय आज संविधान दिवस भी है और संयोग देखिये कि आज आज़ादी के बाद सबसे लम्बे कुर्बानी और संघर्ष की मिसाल बन चुके किसान आंदोलन का एक साल पूरा भी हो रहा है। भारत के संविधान में भारत के सभी मनीषियों ने मिलकर के जब प्रस्तावना लिखी तो उसमें सबसे पहला शब्द लिखा 'हम भारत के लोग' भारतीय लोकतंत्र की बुनियाद भारत के लोग हैं और भारत के लोगों के द्वारा जो उनके एक मतदाता के रूप में भारतीय संविधान के तहत उनको अधिकार दिया गया। उस संविधान को चुनाव के माध्यम से, चाहे वो विधान सभा हो, चाहे लोक सभा हो, सदन को अधिकार सौंपते हैं अपने प्रतिनिधि के रूप में और उन प्रतिनिधियों के बहुमत के आधार पर सरकार को वो ताकत मिलती है जिससे इस देश की व्यवस्था का संचालन होता है। लेकिन अध्यक्ष महोदय, उन्हीं लोगों की ताकत पर बनी हुई सरकार, जब पिछले साल केंद्र में बैठी हुई भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने 3 कृषि कानून लेकर के, जिसे यह देश काला कानून कहता है, तीनों काले कानून को जिस तरह से इस देश की जनता के ऊपर थोपा गया, किसानों के ऊपर थोपा गया। अध्यक्ष महोदय, मैं इस सदन को बधाई देना चाहता हूं कि जब सड़क पर किसान संघर्ष कर रहा था, लाठियां खा रहा था, आंसू गैस के गोले खा रहा था, कड़ाके की ठंड को बर्दाश्त कर रहा था, गर्मी को बर्दाश्त कर रहा था, बारिश को बर्दाश्त कर रहा था, अपमान को बर्दाश्त कर रहा था और अपनी लड़ाई को लड़ रहा था, उस समय इस देश की पहली विधान सभा, दिल्ली की विधान सभा है जिसने उन तीनों काले कानून के खिलाफ प्रस्ताव पारित किया और न सिर्फ प्रस्ताव पारित किया, ये पहला सदन है जिसके माननीय मुख्यमंत्री ने तीनों काले कानून को फाड़ा था और कहा था कि ये किसान विरोधी है और इसे

वापस लिया जाना चाहिए, ये विधान सभा उसकी गवाह है।

अध्यक्ष महोदय, आज देश के माननीय प्रधानमंत्री ने तीनों काले कानूनों को वापस लाने की घोषणा की है। इसका मतलब कि कल जो दिल्ली विधान सभा के माननीय सदस्य, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जो कह रहे थे, दिल्ली के नहीं पूरे देश के किसान जिस बात को कह रहे थे, आज देश के माननीय प्रधानमंत्री जी ने इस बात पर मोहर लगाई कि ये कानून किसानों के हित में नहीं थे, देश के हित में नहीं थे और इसलिए इन कानूनों को वापस लिया जा रहा है।

लेकिन अध्यक्ष महोदय, प्रश्न सिर्फ कानूनों के वापस लेने का नहीं है, आज संविधान दिवस के ऊपर मैं ये बात कहना चाहता हूं कि जिस तरह से केंद्र सरकार और माननीय प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र के नाम सम्बोधन में एक दिन कानून को वापस लाने की घोषणा की, लोकतंत्र के लिए ये अच्छा नहीं है। आज भी किसानों से वार्ता नहीं हो रही, आज भी किसान सड़क पर बैठे हैं लेकिन उनसे बात करने में सरकार को डर किस बात का लग रहा है? आज चुनाव के डर में संविधान के जो मूल अधिकार हैं, उनसे वार्ता करने की जगह इकतरफा घोषणा की गई। अब सदन और हम चाहते है कि संसद के अंदर उस कानून को वापस लिया जाए।

लेकिन अध्यक्ष महोदय, आज भी ज्वलंत सवाल इस किसान आंदोलन ने एक साल में पैदा किये हैं और सरकार को उस पर भी वार्ता के साथ गम्भीरता से विचार करना पड़ेगा क्योंकि किसान आंदोलन को, केवल किसानों ने ठंडक बर्दाश्त नही की, केवल किसानों ने गर्मी बर्दाश्त नहीं की, किसानों ने केवल बरसात बर्दाश्त नहीं की, देश के इतिहास में याद करिये अध्यक्ष महोदय, स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भी, जिस तरह से उस दिन की तस्वीर याद करिये, जिस तरह से सिंघु बॉर्डर पर कील बिछाई गई थी, वो कील किसके लिए बिछाई गई थी, इस देश में आजादी की लड़ाई के दौरान भी अंग्रेजों की भी हिम्मत नहीं थी कि वो इस तरह की कील बिछा दे। लेकिन किसानों को रोकने के लिए कील बिछायी गई, चारों तरफ से डराया गया, धमकाया गया, अपमानित किया गया। इस देश के अंदर शर्म आती है उन नेताओं के ऊपर जो सरेआम चौराहे पर और सरेआम मीडिया के अंदर कह रहे थे ये आतंकवादी हैं, ये

खालिस्तानी हैं, ये नक्सलवादी हैं, ये देशद्रोही हैं। आज मैं कहना चाहता हूं कि इस देश के अंदर उन सभी लोगों को, चाहे वो किसी भी पार्टी के हों, जिन्होंने किसानों को अपमानित करने का काम किया, उनको माफी मांगने की जरूरत है क्योंकि ये बात नहीं चल सकती है, आपके मन में आया तो आपने स्वयं कानून वापस ले लिया, आपके मन में आया तो आपने उसे देशद्रोही बना दिया, आपके मन में आया तो उसे आपने नक्सलवादी बना दिया, आपके मन में आया तो किसी को खालिस्तानी बना दिया।

अध्यक्ष महोदय, इस सदन के माध्यम से हम कहना चाहते है कि इस देश के अंदर जिस तरह से एक साल के इस लम्बे आंदोलन में 700 से ज्यादा किसानों ने अपनी शहादत दी है, आज ये सदन उन किसानों की शहादत को सलाम करता है। लेकिन आज इस देश के सामने सवाल है कि अगर ये कानून वापस हो रहा है, ये कानून अगर किसान विरोधी था, ये कानून अगर देश हित में नहीं था तो फिर इन 700 किसानों की जो शहादत हुई है, उनका जो है, उनकी शहादत के ऊपर सरकार क्या करने वाली है?

अध्यक्ष महोदय, हम इस सदन के माध्यम से ये बात भी रखना चाहते है, इस पूरे आंदोलन के दौरान हजारों लोगों के ऊपर मुकदमे लगाये गये, एक–दो लोग नहीं हैं, हजारों लोगों के ऊपर मुकदमे लगाये गये, उन मुकदमों का क्या होने वाला है? उस पर केंद्र सरकार बात करने को तैयार क्यों नहीं है?

अध्यक्ष महोदय, इस सरकार ने चुनाव के समय ये वादा किया था कि इस देश के अंदर एमएसपी की गारंटी का कानून लाया जाएगा लेकिन आज तक एमएसपी पर गारंटी का कानून नहीं आया। इस देश के अंदर वादा किया गया किसानों की आय दोगुणी की जाएगी, किसानों की आय दोगुणी करने का सारा सिस्टम कहां गया? जब तक किसानों के एमएसपी के गारंटी का कानून नहीं बनता है तब तक उसकी सम्भावना दूर–दूर तक नजर नहीं आती है।

अध्यक्ष महोदय, इसके साथ–साथ इस आंदोलन के सामने यह भी प्रश्न है कि जिन लोगों पर मुकदमे लगाये गये उन मुकदमों को वापस करने की घोषणा सरकार

कब करेगी और उसका क्या समाधान निकालती है।

साथ ही साथ केवल आंदोलनों को कुचला नहीं गया, हम सबने दर्दनाक चित्र इस देश के अंदर टी.वी. के माध्यम से देखा, अखबारों के माध्यम से देखा। जिस तरह से अहंकार में आकर के भारतीय जनता पार्टी के केंद्र सरकार के राज्य मंत्री, अजय कुमार मिश्रा जी के बेटे ने जिस तरह से सरेआम किसानों को कुचला, शायद इतनी बड़ी दरिंदगी का नमूना भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान, गुलामी के दौरान नहीं दिखता।

इसलिए अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो मैं बधाई देना चाहता हूं उन किसानों को कि पहली बार इस देश के अंदर सरकार ने जो सत्ता जनता के माध्यम से लिया लेकिन अहंकार जिस तरह का पैदा हुआ, किसानों के संघर्ष को हम सलाम करना चाहते है कि उन्होंने इस सरकार के अहंकार को चकनाचूर किया है। लोकतंत्र को आगे बढ़ाने के लिए, इस देश के संविधान की रक्षा के लिए इस बात को साबित किया है कि हम अहिंसापूर्वक महात्मा गांधी के रास्ते पर चलते हुए इस लोकतंत्र के लिए, इस संविधान के लिए, किसानों के हित के लिए, देश के हित के लिए हम अपनी कुर्बानी दे सकते हैं लेकिन न डरेंगे और न झुकेंगे।

आज उन किसानों को एक साल के आंदोलन पर मैं सलाम करते हुए, मैं इस सदन के सामने जो सरकारी संकल्प है उसे प्रस्तुत करना चाहता हूं। ''राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की विधान सभा 26 नवम्बर, 2021 को अपनी बैठक में संकल्प करती है कि केंद्र सरकार द्वारा पारित तीनों केंद्रीय कृषि कानून किसानों तथा आम जनता के हितों के विरूद्ध थे और इनको मुट्ठीभर व्यापारी घरानों को लाभ पहुंचाने के लिए लागू किया गया था। यह सदन उन राजनैतिक दलों की निंदा करता है जिन्होंने उन किसानों को आतंकवादी और राष्ट्र विरोधी कहकर गलत तरीके से बदनाम करने की साजिश की जो अपने अधिकारों के लिए खड़े हुए और जिन्होंने अहिंसक तरीके से केंद्र सरकार के कानूनों का विरोध किया। यह देश 700 से भी अधिक किसानों के सर्वोच्च बलिदान को कभी नहीं भूल सकता जिन्होंने इन कृषि कानूनों का विरोध करते हुए अपनी जान गंवायी और यह सदन उन किसानों के प्रति अपनी हार्दिक

कृतज्ञता और सम्मानपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करता है। यह सदन उन सभी किसानों के निकटतम संबंधी को सम्मान–जनक मुआवजा देने की मांग करता है जिन्होंने अपने अधिकारों के लिए लड़ते हुए अपनी जान गंवायी। यह सदन इन कृषि कानूनों को वापस लेने की घोषणा का स्वागत करता है और केंद्र सरकार से इन्हें जल्द से जल्द वापस लेने का आह्वान करता है। यह सदन किसानों के न्यूनतम समर्थन मूल्य की वैधानिक गारंटी की जायज मांग के साथ खड़ा है, जैसा कि भाजपा ने अपने घोषणापत्र में वादा किया था। यह सदन विभिन्न राज्यों में शांतिपूर्वक विरोध प्रदर्शन के दौरान निर्दोश किसानों के विरूद्ध दर्ज अपराधिक मामलों को तत्काल वापस लेने की मांग करता है। और यह सदन लखीमपुर घटना में निर्दोश किसानों की दिन दहाड़े हत्या में केंद्रीय गृह राज्य मंत्री, श्री अजय कुमार मिश्रा की भूमिका के कारण उनके निलम्बन और गिरफ्तारी की भी मांग करता है।'' धन्यवाद अध्यक्ष महोदय।

माननीय अध्यक्षः अब माननीय सदस्यगण चर्चा में भाग ले सकेंगे। श्री जरनैल सिंह जी।

श्री जरनैल सिंहः थैंक यू, स्पीकर साहब। स्पीकर साहब किसाना नू मारन वाले एक साजिश दे तहत काले कानून लयान दी तैयारी....

माननीय अध्यक्षः महावर जी, इधर डिस्टर्बेंस हो रही है अगर कोई बातचीत करनी है, लाउंज में बैठकर कर लो, प्लीज, मेरी हाथ जोड़कर प्रार्थना है।

श्री जरनैल सिंहः अध्यक्ष जी, जदो भारत सरकार दे ऑफिशियल गजट राही, सितम्बर, 27 सितम्बर, 2020 नू पूरी सोची समझी साजिश दे तहित देश दे वड़े पूंजीपतियां दे कहिण ते किसाना दिआ जमीना खोण वास्ते काले कानून तैयार किते। उसतो बाद इना दा विरोध लगातार पंजाब विच ते चलदा रहा, ओह विरोध 26 नवम्बर, 2020 नू इस कदर वद गया कि पंजाब तो किसाना नू चलके दिल्ली वल कूच करना पया। दिल्ली एते पंजाब दे विच हरियाणा पैंदा है, हरियाणे दा कोई मतलब नहीं बणदा सी, हरियाणे दी बीजेपी सरकार दा कोई मतलब नहीं बणदा सी। किसान देश दे प्रधानमंत्री नू, इना किसाना दा विरोध करन लई दिल्ली आ रहे सी, हरियाणा सरकार ने अलग–अलग बार्डरा ते किसाना नू रोकण दी पूरी कोशिश किती। जगह–जगह

तसीहे दिते गये, पुलिस फोर्स लाई गई, वाटर कैनन मारे गये, बेरिकेटिंग लाई गई पर किसाना दे हौंसले इने बुलंद सी कि जिस पंजाब नू 'उडदा पंजाब' कहिया जांदा सी, अध्यक्ष जी, बड़ा दुख हुंदा है, फिल्म तक बनिया हैं 'उडदा पंजाब कहके', पंजाब दी जवानी नू बदनाम करन दी कोशिश कीती गई पर पंजाब दे नौजवाना ने, पंजाब दे किसाना ने ऐह दस दिता कि जदो साडी जमीना ते गल बनेगी ते असी वड़ी तो वड़ी सरकारा नू भी झुकाणा जांणदे हां। उस चीज दा सब तो वड़ा प्रमाण इस 19 तारीख नू सानू वेखन नू मिल गया। मैं सवेरे 9.00 बजे प्रधानमंत्री साहब दी स्पीच सुनदा सी, प्रधानमंत्री साहब कहन्दे ने सबतो पहला तां मैं देश तो माफी मंगदा। असी बड़ी विनम्रता नाल, बड़ी पवित्रता नाल, बड़ी नेक–नीयत नाल ये कानून लेकर आये सी, भावे बणे पूंजीपतियां ते कहण ते सी, ते अज ओ कानून असी कुछ किसान जथेबंदियों दा विरोध कर दियां सी ते असी वो कानून वापस लेंदे हां, रिपील करदे हां, इदि प्रोसिंडिंग आपा शुरू कर दे हां। अध्यक्ष जी, ये वो ही प्रधानमंत्री है जिनदा दे बारे कहया जांदा रहा ये तो नरेन्द्र मोदी जी कदी झुकते नहीं, नरेन्द्र मोदी जी कदी हटदे नहीं, 56 इंची ये वो। पर मैं सलाम करदा किसाना दे जज्बे नू, पंजाबी किसाना नू जिना ने पंजाब दे नाल–नाल हरियाणा, ते हरियाणे दे नाल–नाल पूरे देश दे किसाना नू कट्ठा कर दिता ते साबित कर दिता कि

'फन कुचलन दा हुनर वी रखिये, सपां दे डर तो खेत नहीं छडीदे।'

जदों किसाना दी ज़मीन ते बण आई तां किसाना ने हर ओ कोशिश किती, सर्दी, गर्मी, धूप, बरसात, जानां तक देनीया पै गयीयां पर अपनीया मंगा नू लै के डटे रहें। देश दे प्रधानमंत्री जिना नू इसी संसद विच परजीवी वरगा शब्द यूज किता सी अध्यक्ष जी, आंदोलनजीवी वरगा शब्द यूज कीता सी, ते आंदोलनजीवी तो लेके आंदोलन रद किसान कहना पै गया है, वड़ा किसान, वड़े शब्दा विच जो बदलाव आया, उस वास्ते सारे किसाना नू एक वारी जोरदार सैल्यूट बणदा है सदन वलो, दिल्ली दी इस विधान सभा वलो। उस महान संघर्ष नू दुनिया दे इतिहास विच जो अज तक दा सबतो वड़ा संघर्ष बन गया है, अज तक दा सबतो वड़ा आंदोलन बन गया, उस संघर्ष विच 700 से वद अध्यक्ष जी शहीदीयां हो गईया पर केंद्र सरकार नू मैं देर आये दुरूस्त आये बिल्कुल नहीं कहांगा अध्यक्ष जी। मैं कहांगा बहुत देर कर

दी हुजुर आते–आते अध्यक्ष जी। 700 तो ज्यादा वध ले के तुसी कहो प्रधानमंत्री देश दे कहण कि अब एक नई शुरूआत करदे हां। जिना दे घर दे जी गये अध्यक्ष जी, जिना दे घर दे लोग शहीद हुये ने इस आंदोलन दे विच, औना तो जाके पूछो। घर दा इक जी चला जाये तां सारी जिदंगी बंदा उस दी याद विच परेशान रहंदा हैं, ते तुसी 700 से वद शहादतां लै के कहंदे हो जी अब नई शुरूआत करदे हां।

अध्यक्ष जी, विनम्रता दी गल करदे ने, तुसी हरियाणा तो शुरू करोगे। मैं आप सिंघु बॉर्डर उसे दिन उथे ही सी, मेरे नाल और भी एमएलए साहब सन। किस तरीके दिल्ली पुलिस ने फड़–फड़के किसाना दी पगा ला के, उना दे वाल फड़ के, उना नू ध्रहू–ध्रहू के मारया हैं। ए विनम्रता होंदी है? आपा गाजीपुर बॉर्डर वी वेख्या है, ते आपा लखीमपुर खीरी दा एक्सीडेंट वी वेख्या है, जिस विच सरेआम बीजेपी के नेता वलो किसाना दे उते गड़ी चढ़ा दिती गई। इनु विनम्रता नहीं कहया जांदा अध्यक्ष जी, देश दी एकता वीच फुटपाण दी कोशिश किती गई है।

हजे वी पूरी तरह नीयत साफ नहीं है, अनाउसमेंट जरूर कर दिती है पर हजे वी एमएसपी दी गल नहीं हो रही। हजे वी पूरे तरीके नाल इस चीज नू नहीं दसया जा रहा है, किस तरीके एमएसपी इंश्योर किती जाएगी।

पंजाब ते हरियाणा दा परक्योरमेंट सिस्टम पूरे देश विच सबतो वधिया सी। लोड़ इस गल दी सी कि पंजाब ते हरियाणा वरगा परक्योरमेंट सिस्टम पूरे देश दे विच लागू किता जांदा पर फिर इना पूंजीपतियां दे ढिढ किदा भरदे। कोशिश इस गल दी किती गई कि पंजाब एते हरियाणा दे किसाना नूं वी बाकी किसाना वरगा बना दिता जावे। अध्यक्ष जी, एक चीज आपा वेखते हां अज वी यू.पी. एते बिहार विच परक्योरमेंट दा की सिस्टम है। जे यू.पी, बिहार दी परक्योरमेंट इतनी बढ़िया होंदी तां आज भी बिहार दे किसान पंजाब विच आ के मजदूरी करंदे हैं, ए नहीं करना पैंदा। आज तुसी देश दे प्रधानमंत्री हो, तुहाड़ी डयूटी बणदी सी कि देश दे हर सुबे विच तुसी चंगा परक्योरमेंट सिस्टम लागू करो। किसाना नू खुदखुशियां करनीया पै रहीया हन, किवे दा खेती प्रधान देश है, किसान जिस देश विच खुदखुशी कर रहे होण, किवे खेती प्रधान देश हो सकदा है।

प्रधानमंत्री जी, वादे करके आये सी किसाना दी इन्कम डबल कर दयांगा। किस तरह दी इन्कम डबल किती, 700 से वद किसान अपनी शहीदियां दे गये, सिर्फ पूंजीपतियां दे कहे कानूना दे खिलाफ। अध्यक्ष जी, गोपाल राय जी, साडे माननीय उद्योग मंत्री जी ने जो भी संकल्प इस सदन दे सामने रखया है, मैं उस सदन दा पुरजोर समर्थन करदा हां। साडे किसान इस आंदोलन, इस आंदोलन दी अगवाही करन वाले पंजाब दे किसान, ते नाल सारे देश दे किसाना नू बधाई देंदा हां कि तुसी इस तानाशाह सरकार नू, तुहाड़े संघर्ष ने, तुहाड़े आंदोलन ने झुकन ते मजबूर कर दिता। उना सारे किसाना नू नमन करदां जडे अपनी मंगा लई, जिना ने अपनीया जाना दा बलिदान दे दिता, जो शहीद हो गये, पर हटे नहीं, ते उना नू नमन करदे हुए मैं गोपाल राय जी दे संकल्प दा पुरजोर समर्थन करदा हां। तुसी इस बहुत ही गम्भीर मसले ते, बहुत ही गम्भीर विषय ते मैंनु बोलन दा मौका दिता, तुहाड़ा बहुत–बहुत धन्यवाद अध्यक्ष जी। इंकलाब जिंदाबाद।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद जरनैल जी। श्री कादियान जी।

श्री वीरेंद्र सिंह कादियानः अध्यक्ष जी, आपने इस किसानों के मुद्दे पर संविधान दिवस के अवसर पर बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं। श्री नरेन्द्र मोदी जी, देश के प्रधानमंत्री, 2014 में उन्होंने किसानों से वादा किया था कि वो स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट लागू करेंगे जिससे उनकी आमदनी बढ़ेगी। 2016 में फिर से उन्होंने दोहराया ये बात कि हम किसानों की आमदनी डबल कर देंगे। किसान, भोले भाले किसान, मेहनती किसान इनकी बातों में आएं और दो बार पुरजोर बहुमत देकर इनकी सरकार बना दी। इनको इतना ताकतवर बना दिया कि इन्होंने लोगों की सुनना ही बंद कर दिया। 5 जून, 2020 को सोची समझी मंशा के तहत ये आर्डिनेंस लेकर आये.और तब लेकर आये जब पूरा देश कोरोना महामारी के दौर में घरों से बाहर नहीं निकल रहा था। लोग डरे हुए थे, सहमे हुए थे, ऐसे समय में बिल लेकर आये। तीन बिल लेकर आये और तीनों ही बिल बड़े–बड़े कॉर्पोरेट घरानों को फायदा पहुंचाने के लिए, किसानों की जमीन हथियाने के लिए, किसानों को एक प्रकार से अपंग बनाने के लिए, असहाय और मजदूर बनाने के लिए ये बिल लेकर आये जिसके तहत उनकी परक्योरमेंट, उनकी भंडारण, एमएसपी खत्म करना और

उनको एक कॉन्ट्रेक्ट फार्मिंग के तहत उनको मजदूर बनाकर रखने की जो मंशा थी कॉर्पोरेट घरानों की, उसको इन बिलों.... से लागू करके उस मंशा को पूर्ण करने का काम किया।

17 सितम्बर को लोक सभा में बिल आया, पास हो गया। 20 सितम्बर को राज्य सभा में पास हो गया और 27 सितम्बर को गजट नोटिफाई हो गया। कितना फास्ट मूवमेंट इस बिल का है देखिये । इतने महत्वपूर्ण बिल, स्टेक–होल्डर जो किसान हैं, मजदूर हैं, न तो उनको सुना, न किसी पॉलिटिकल पार्टी से सलाह मशवरा किया। सिर्फ कुछ घरानों की मंशा को पूरा करने के लिए ये बिल लेकर आये और फटाफट इन्होंने गजट नोटिफाई भी कर दिया।

26 नवम्बर, 2020 को किसान दिल्ली की तरफ चलें और इन्होंने हरियाणा से ही, उत्तर प्रदेश से, सब जगह से इनको रोकने की कोशिश करी। बॉर्डरों के ऊपर कीले गड़वा दी। पानी की बौछारे, लाठी चार्ज, अनेकों केस लगवा दिये ताकि ये दिल्ली में आकर अपनी बात को न रख सके और वहीं इस आंदोलन को दबा दिया जाए, कुचल दिया जाए। परंतु हमारे देश का जवान, हमारे देश का किसान इतना असहाय और कमजोर नहीं, उन्होंने पूरे एक साल तक आंदोलन किया। 700 किसानों की इस दौरान शहादत हुई। एक शब्द प्रधानमंत्री ने नहीं कहा, एक शब्द किसी केंद्रीय मंत्री ने नहीं कहा। ताज्जुब की बात तो ये है अध्यक्ष जी कि हरियाणा का एक मंत्री, कृषि मंत्री कहता है ये तो घर पर भी मर जाते, ये बॉर्डरों पर मर गये, घर पर भी मर जाते ये। बारिश, सर्दी, गर्मी और कोरोना महामारी के दौरान भी ये किसान बॉर्डरों के ऊपर डटे रहें क्योंकि इनके जीवन–मरण का प्रश्न था इसलिए ये अपना बलिदान देने से भी पीछे नहीं हुए और बॉर्डरों के ऊपर पूरा एक साल इन्होंने संघर्ष किया और आज भी बॉर्डरों के ऊपर बैठे हुए हैं।

अगर ये बिल लागू होते, अगर ये बिल यूं ही चलते तो आने वाले समय में किसान मजदूरी करते और हिंदुस्तान एक कृषि प्रधान देश है, इस कृषि प्रधान देश के अंदर 60–70 प्रतिशत आबादी जो है हम खेती–बाड़ी से गुजरा करते हैं, वो सारा का सारा सिस्टम नष्ट हो जाता। अध्यक्ष जी, मैं पेपर में पढ़ रहा था, इस कोरोना

काल के दौरान सभी की आमदनी जो है गिरी है परंतु कुछ चंद उद्योगपतियों की आमदनी 5–5, 10–10 गुणा बढ़ गई है। वो सब.... कैसे बढ़ गई वो? ये सरकारों की मंशा के कारण बढ़ गई। नहीं तो गरीब की भी आमदनी बढ़ सकती थी। जो मेहनत करता है, खेती करता है, मजदूरी करता है, गाय भैंस का पालन करता है, सारे के सारे काम, जो किसान अपने खेत मे उपज पैदा करता है और वो उस उपज का उसको दाम नहीं मिलता है। उसके बच्चे हर चीज के लिए तरसते हैं। क्योंकि मैं भी एक फौजी हूं और किसान परिवार से ही आता हूं। ज्यादातर फौज में, सेना में जो बच्चे हैं वो गांव के बच्चे हैं और किसानों के बच्चे हैं। उन्हीं किसानों को सरकार ने, बड़े–बड़े नेताओं ने आज, आंदोलनकारी वो शब्द यूज किया, उसके बाद खालिस्तानी, आतंकवादी, टुकड़े–टुकड़े गैंग, पता नहीं क्या–क्या इन्होंने किसानों के बारे में कहा, आंदोलनजीवी कहा। उन लोगों ने कहा जो संवैधानिक पदों पर बैठे हैं। जिनको बोलते समय कई चीजों का ध्यान रखना चाहिए उन लोगों ने छोटे–छोटे बाते कहकर किसानों की मंशा को तोड़ने की कोशिश करी, किसानों के आंदोलन को तोड़ने की कोशिश की। इनकी बिजली काट दी। पानी से वंचित कर दिया। परंतु मैं धन्यवाद देना चाहूंगा दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी का जिन्होंने शुरू से ही इस किसान आंदोलन में, इस कृषि विरोधी आंदोलन में अहम भूमिका निभाई और कइयों बार दिल्ली के मुख्यमंत्री बार्डरों पर गए किसानों से मिले, सभी विधायकों को पार्षदों को और पार्टी के हर एक कार्यकर्ता को निर्देश दिए की किसानों के साथ जो सहानुभूति दिखा सको दिखाओ, इनके साथ जो सहयोग कर सको करो, चूंकि ये तीनों बिल जो हैं, केंद्र की सरकार जो लेकर आई है, वो तीनों ही किसान विरोधी बिल है, किसानों को एक प्रकार से बेरोजगारी, भूखमरी पर लाने वाले बिल है और इनके जीवन–मरण का सवाल है। मैं धन्यवाद देना चाहूंगा किसानों को जो ऐसे विषम सर्दी–गर्मी, बारिश, कोरोना, लठ खाकर, गालियॉ खाकर, ऐसी–ऐसी बातें सुनकर भी और आपस में लड़ा कर, सबकुछ परिस्थितियों के दौरान वो डटे रहे और उन किसानों ने आखिर में जीत प्राप्त कर ली। वही प्रधानमंत्री, वही मंत्री जो कहते थे ये आंदोलनजीवी हैं, ये खालीस्तानी, पाकिस्तानी, विदेशों से इनके पास पैसा आ रहा है, उन्हीं लोगों ने कहा कि मैं सच्चे दिल से कहना चाहता हूं, मैं माफी मांगता हूं आप सबसे। भई अगर ये माफी मांगने से पहले मान लेते, लाखों की संख्या में, हजारों

की संख्या में किसान बोर्डरों पर बैठे हुए हैं, ये आवाज सुनाई नहीं दी। इनका अगर एक आदमी मर जाता है, कुछ बात होती है, किसी कार्यकर्ता को कुछ हो जाता है तो ट्वीट करते हैं प्रधानमंत्री, 700 आदमियों पर एक भी ट्वीट दिखा दो आप, एक भी एक सहानुभूति का शब्द दिखा दो इनके प्रति और अब, क्योंकि पंजाब के, उत्तर प्रदेश के जो कृषि प्रधान राज्य है, वहां पर चुनाव होने है और इनको पता है, मैं बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर जी को।

माननीय अध्यक्षः कादियान जी कंक्ल्यूड करिए प्लीज।

श्री वीरेंद्र सिंह कादियानः कोटि–कोटि धन्यवाद देना चाहूंगा कि जिन्होंने संविधान के जरिए लोगों के हाथों में पावर दी कि किसी को भी सत्ता पर बैठा भी सकते है और उतार भी सकते है। जब ये सत्ता में बैठे लोग इतने पावरफुल हो गए तो इन्होंने सुनना बंद कर दिया और अब जब उत्तर प्रदेश के, पंजाब के चुनाव है, इनको उन्हीं लोगों से फिर से वोट चाहिए, अब ये माफी मांग रहे है। अब ये कह रहे हैं कि हमसे गलती हो गई, मैं सच्चे दिल से माफी मांगता हूं और फिर भी देखों इनकी मंशा, ये कहते हैं कुछ किसान जिनको मैं समझा नहीं पाया, इसका मतलब तो अधिकतर को तो समझा लिया आपने, तो फिर लाखों किसान क्यों बैठे हैं? क्यों बैठे हैं लाखों किसान धरने पर और आज भी किसानों के मन में ये डर है कि कहीं ये फिर से न मुकर जाएं, इसलिए वो बैठे हैं और कह रहे हैं कि भई जब तक पास नहीं हो जाएगा न पार्लियामेंट में तब तक हम बैठे रहेंगे, जब तक एमएसपी की गारंटी नहीं आ जाएगी, हर एक चीज की एमआरपी है, हर चीज पर लिखा है 5 रुपये का बिस्किट, 10 रुपये का ये। फसलों का क्या दाम तय कर रखा है, एमएसपी की गारंटी होनी चाहिए, इसीलिए किसान आज भी बैठे हुए है। किसान समझ चुका है, पिछले एक साल से भुगत चुका है और किसान अब न बहकने वाला है, न मूर्ख बनने वाला है, किसान सचेत हो गया है। इसलिए किसान आज भी दिल्ली के बॉर्डरों पर बैठा है जगह–जगह पर प्रदर्शन हो रहे हैं महापंचायतें हो रही है। इसलिए हो रही है कि अब इनसे हम अपना हक मांग कर रहेंगे।

माननीय अध्यक्षः क्ंक्ल्यूड करिए कादियान जी, क्ंक्ल्यूड करिए प्लीज क्ंक्ल्यूड करिए।

श्री वीरेंद्र सिंह कादियानः माननीय अध्यक्ष जी, दो शब्द और बोलूंगा । मैं दिल्ली के मुख्यमंत्री माननीय श्री अरविंद केजरीवाल जी को इस बात का भी धन्यवाद देना चाहूंगा कि इन्होंने पंजाब में, उत्तर प्रदेश में हरियाणा में, कइयों जगह जाकर वहां पंचायतें की, किसानों से मिले, किसानों का दुख–दर्द समझा और किसानों को हौंसला अफजाई की और आज दिल्ली की विधानसभा में लेकर आए इस बिल को, सभी इसी सदन में तीनों कृषि बिल इस सदन ने फाड़े थे, सभी विधायकों ने फाड़े थे। आज उसी चीज को उचित समझते हुए और सही समझते हुए प्रधानमंत्री जी ने भी उन बिलों को रिपील किया है, वापस लिया है। मैं अधिक समय न लेते हुए इतना ही कहूंगा अध्यक्ष जी ये देश किसानों का और जवानों का देश है, कम से कम इनका तो ख्याल रखा जाए, बहुत कष्ट का जीवन जीते है और कम आय में अपना गुजरबसर करते हैं, ईमानदारी से सबसे सच्चे किसान और जवान, सच्चे दिल के लोग है मेहनतकश लोग हैं, इनके साथ धोखा न करके, बड़े–बड़े उद्योगपतियों को फायदे पहुंचाने के और बड़े तरीके हैं भई वो कर लो पर इनके साथ धोखा न करके, इनकी जमीनें न लेकर, इनको उचित मुआवजा दिया जाए, 700 किसान जो शहीद हुए हैं उन शहीदों को, उन परिवारों को, उन परिवारों के बारे में सोचा जाए, उनको मुआवजा दिया जाए और उनको जो किसान, जो संगठन कहते हैं उस आधार पर उनकी बातें मानी जाएं। अब जब भी कोई कानून बने, कम से कम किसानों को तो बुला लो, अगर उनका फायदा करना है तो उनको पता होना चाहिए कि तुम्हारा फायदा कैसे–कैसे होगा और उनको समझा दो। जो कुछ किसान जो प्रधानमंत्री जी कह रहे हैं उनको समझा नहीं पाए, अब समझा दो, अब बैठा लो टेबल पर और उनसे बातचीत कर लो और बिल अगर कोई भी लेकर आना है उनके फायदे का तो उनसे बातचीत करके पास किया जाए और सभी पार्टियों से भी बातचीत की जाए, उन्होंने जो यातनाएं सही हैं उनके बारे में सोचा जाए, एमएसपी की गारंटी कर दी जाए। किसानों के मुद्दों को सुलझाया जाए, मैं श्री गोपाल राय जी ने जो संकल्प प्रस्ताव यहां लाया है उसका समर्थन करता हूं बहुत–बहुत धन्यवाद अध्यक्ष जी आपने मुझे बोलने का मौका दिया।

माननीय अध्यक्षः श्रीमान विनय मिश्रा जी।

श्री विनय मिश्राः बहुत–बहुत धन्यवाद माननीय अध्यक्ष जी, मैं सबसे पहले मेरे सभी साथियों को संविधान दिवस की बहुत–बहुत बधाई देता हूं और माननीय मंत्री श्री गोपाल राय जी को बहुत–बहुत बधाई दूंगा कि जिस दिन हमारी पार्टी के क्रांति के 9 साल हुए उस दिन ऐसा सुंदर प्रस्तुती लेकर आए जिसमें कृषि कानून और किसान आंदोलन के संबंध में जो सरकारी संकल्प लेकर आए उसके लिए मैं इनको बहुत–बहुत बधाई देता हूं गोपाल जी। मुझे बड़ी हैरानी होती है पहले भी जब ये कृषि कानून लाए गए, अचानक से जब पूरा देश करोना से लड़ रहा था उस समय इस कानून को लाया गया, किसी भी किसान से बात नहीं की गई, जिसको इस कानून का असर होना था उनके संदर्भ में कुछ बात नहीं की गई और ये कानून लाया गया और जब सारा देश गुरुनानक जी के प्रकाश उत्सव की जब तैयारी कर रहा था, तब इस कानून के लिए प्रधानमंत्री जी ने कहा कि मैं इस कानून को वापस ले रहा हूं और हैरानी इस बात की कि जिस देश के वो प्रधानमंत्री हैं वहां के सारे किसान कहते है कि हमें हमारे प्रधानमंत्री पर भरोसा नहीं है कि ये कानून वापस होगा। वो इसलिए भरोसा नहीं है क्योंकि जब हम पंजाब जा रहे है, उत्तर प्रदेश जा रहे है, उत्तराखंड जा रहे है, तो लोग कह रहे है कि जैसे प्रधानमंत्री जी ने कहा था कि सबको 15–15 लाख रुपये मिलेंगे, वैसे ही ये कानून भी मोदी जी कह रहे है वापस नहीं होंगे। तो इस देश की दशा कहॉ पहुंच गई आप सोचिये प्रधानमंत्री की बात आज किस हद तक लोग सीरियसली ले रहे , ये सोचने वाली बात है। जहां तक कानून की बात है मेरे सभी साथी यहां भली–भांति वाकिफ है, इस कानून के बारे में सभी जानते हैं, इस कानून की क्या मंशा थी बनाने की, किन घरानों को फायदा पहुंचाने की मंशा थी वो सभी जानते है, क्योंकि यहां सभी साथी विधायक और सब इस कानून को जानते है। तो मैं कानून के बारे में न कहते हुए बस इतना कहना चाहूंगा कि 2014 में जब मोदी जी जगह–जगह देश में जाकर भाषण दे रहे थे, तो हर जगह कह रहे थे कि मेरी सरकार जैसे ही बनेगी मैं स्वामीनाथन कमिशन को लागू करूंगा। क्या मांगा किसानों ने सिर्फ एमएसपी मांगी, जिसमें कहा कि जो हमारी एमएसपी प्लस 50 प्रसैंट, जो हमारा प्रोडक्शन कॉस्ट है वो हमको दी जाए। एमएसपी की तो बात

हुई नहीं उल्टा पहले जो मिल रहा था वो भी उनसे वापस छीन लिया गया। 2016 में मोदी जी ने कहा कि 2022 तक मैं इस देश के हर किसान की जो कमाई है वो दोगुनी कर दूंगा, अध्यक्ष जी मैं आपके सामने कुछ आंकड़े पेश करना चाहता हूं, मार्च,2021 में पार्लियामेंट के सेशन में जब कुछ सदस्यों ने पूछा कि आपने किसानों की आय दोगुनी करने के लिए के लिए क्या–क्या किया तो कुछ आंकड़े जो कृषि मंत्रालय के आते हैं, बड़ी हैरानी वाले आते हैं। उन्होंने कहा कि हमने किसानों के लिए 17 स्कीम लागू की और उस 17 स्कीम के लिए 17,540 करोड़ रुपये 2020–21 में उन्होंने दिए। जब उन आंकड़ों में और अंदर गए तब देखा कि 17,540 करोड़ रुपये में से सिर्फ 5787 करोड़ रुपये खर्च हुआ जो मात्र पूरे मूल्य का एक तिहाई, सिर्फ 33 प्रसैंट पैसा जो बजट का था वो खर्च हुआ और 17 में से 3 स्कीम ऐसी थी जिसमें एक रुपया भी खर्च नहीं किया गया। जब इस पूरे आंकड़े को मैंने देखा तो दिखा, इनका जो ये बजट 17540 करोड़ रुपये का है वो मात्र 10 प्रतिशत किसानों तक पहुंचा, जहां देश की आबादी 100 करोड़ पहुंच रही है, सवा सौ करोड़ पहुंच रही है वहां सिर्फ 10 प्रसैंट किसानों को ये फायदा मिला। अब इनकी एक फलैगसिप योजना थी, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना। जो 2016 में लॉन्च की गई थी वो भी देखा। तो अभी तक सिर्फ 23 करोड़ किसानों को मिला है, एक इनका अगला स्कीम आया, सॉयल हैल्थ कार्ड स्कीम जिसके तहत इन्होंने कहा कि हम जहां–जहां किसानों की जो जमीन है वहां पर हम क्या बुवाई कर सकते हैं, हम उसका पहले टैस्ट करेंगे, किसानों को समझाएंगे की इस जमीन में क्या आप लगाओ, क्या आप बोओ, आपको उसमें फायदा होगा। जब उसके भी टैस्ट का मैंने डाटा देखा तो उसमें हमने देखा मात्र 11 करोड़ किसानों तक उनका जो है ये टैस्ट पहुंचा है। तो मैं क्या पूछना चाहता हूं मोदी जी, सिर्फ बातें भाषण से ही पहुंचेगी या काम से भी पहुंचेगी। आज किसान सिर्फ और सिर्फ एमएसपी मांग रहे है, क्या इस देश में क्या अपनी मांग रखना आज इतना दूभर हो गया है कि करनाल में जब मंत्री का घेराव किया गया तो एसडीएम ने उस पर लाठी चार्ज कराई। भाजपा की मंशा साफ–साफ नजर आती है कि जहां किसान अपनी मांग रखते है, पहले लाठी चार्ज कराया जाता है। जब लखीमपुर खीरी में माननीय गृहमंत्री मिश्रा जी जाते है तो उनके बेटे के द्वारा किसानों को गाड़ी से कुचल दिया जाता है। आज इस देश में भाजपा की सरकार के राज

में अपनी मांग रखना अपने पर अटैक कराना हो गया है। जिस देश ने अहिंसा से आजादी ली, जिस देश में महात्मा गांधी जी ने, वो आज पूरे विश्व में पूजा जाता है, उनके अहिंसा की वजह से, क्या देश में जहां अहिंसा से लोग एक साल से सड़क पर किसान अपनी मांग, मांग रहा है, आज क्या वहां पर चाहे वो धूप में बैठा है, बारिश में बैठा है, जगह–जगह देश में हम भी आज जा रहे है, जगह–जगह लोग आज किसान बात कर रहे है। क्या यहां आज अपनी बात रखना इतना मुश्किल हो गया कि जब हम अपनी मांग मांगने जाएंगे तो उनको कुचल दिया जाएगा। आज उत्तर प्रदेश में अगर आम आदमी पार्टी का विधायक जाता है, अगर दिल्ली सरकार के कामों की बात करता है, अगर अरविंद केजरीवाल जी की बात करता है तो उनको भी वहां की सरकार की पुलिस आकर उठा कर ले जाती है, सोमनाथ जी इसके साक्षात यहां पर इग्जाम्पल बैठे हुए हैं, बहुत से हमारे साथी विधायक है, जिनके साथ ऐसा दुराचार हुआ। मैं अध्यक्ष जी, एक बात और कहना चाहूंगा। आज मैं अरविंद जी को इस सदन के माध्यम से बहुत धन्यवाद करना चाहूंगा जिन्होंने जब ये आन्दोलन शुरू हुआ, तो जो हमारे दिल्ली के जो स्टेडियम थे उसको जब केन्द्र सरकार ने मांगा तो अरविंद जी ने उसको रोक दिया और जिसकी वजह से आज आम आदमी पार्टी के विधायकों को भी और अरविंद जी को भी जब घर के अंदर बंद कर दिया गया क्योंकि जब वो किसानों से मिलने जा रहे थे तो उनको हाउस अरेस्ट कर दिया गया। जब हमने किसानों की बात रखी, दिल्ली के लोगों के हितों की बात रखी, देश के लोगों के हितों की बात रख दी तो हम पर जीएनसीटी एक्ट लगाकर, हमारी सरकार की ताकत को ओर कुचल दिया गया और हमारे मंत्री आज काम कराना होता है तो उनको परेशानी का सामना करना पड़ता है। मैं माननीय अध्यक्ष जी आपसे मांग करता हूं कि ये जो रिपील किया गया है, सिर्फ ये रिपील तक न रहे, जो ये आंदोलन एमएसपी को लेकर शुरू हुआ था, उनको एमएसपी भी मिले और साथ–साथ जो मेरे साथियों ने कहा कि लगभग 700 परिवार, 700 किसान, जिन्होंने शहादत दी है उनके परिवारों को भी मुआवजा दिया जाए। उनके परिवार में भी सरकारी नौकरी दी जाए ताकि जिन लोगों ने जो शहादत दी है उसके परिवार को आगे चलाने के लिए जो सही बात है, जिस परिवार से कोई सदस्य जाता है तो उसका दुख और क्या उसकी कीमत थी पता चलती है तो सिर्फ उसकी कीमत हम

पैसे देकर नहीं चुका सकते। मैं केन्द्र सरकार से मांग करता हूं कि जो 700 परिवार, जिन्होंने शहादत दी है उस परिवार को भी नौकरी दी जाए और उस परिवार को कम से कम अपना घर—परिवार चलाने के लिए ऐसा पुख्ता इंतजाम किया जाए ताकि उनके बच्चों को उनकी कमी महसूस न हो। बाकी मैं माननीय श्री गोपाल राय जी को बहुत—बहुत धन्यवाद करूंगा कि वो ये संकल्प लेकर आए और मैं इस संकल्प का पुरजोर समर्थन करता हूं, बहुत—बहुत धन्यवाद जयहिन्द।

माननीय अध्यक्षः सुश्री राखी बिरला जी।

सुश्री राखी बिरलाः बहुत—बहुत अधिक धन्यवाद अध्यक्ष जी आपने अतिमहत्वपूर्ण मुद्दे पर मुझे बोलने का मौका दिया। मुझसे पूर्व तमाम साथियों ने आंकड़ों सहित बहुत ही गहराई से इस चर्चा पर अपना वक्तव्य रखा है। अध्यक्ष जी, जब कोई किसान, किसी भी देश का किसान जब सड़कों पर उतरता है, आंदोलन करता है, हक की आवाज को बुलंद करता है तो इसका मतलब ये है कि वो सिर्फ अपने लिए नहीं बल्कि पूरे देश की आबादी और उनके अधिकारों के लिए आवाज बुलंद करता है। अध्यक्ष जी आज किसान आंदोलन को पूरा एक साल हो गया, इस एक साल के अंदर इस देश के किसानों ने तमाम तरीके के षड्यंत्र सहे, तमाम तरीके की राजनीति, आंधी—तूफान, बरसात के अंदर एकजुट होकर इस देश की 128 करोड़ जनता की आवाज को बुलंद करने का काम किया है। अध्यक्ष जी ये देश का जो किसान है ये बहुत मेहनतकश, बहुत ईमानदार और बहुत ही धैर्य रखने वाला व्यक्ति है। इस देश का किसान लाखों—करोड़ों लोगों का पेट पालने के लिए धरती का सीना चीरकर अन्न उगाता है, फसल उगाता है। इस देश का किसान, देश की आबादी का पेट भरने के लिए तमाम तरीके की मेहनत आंधी—तूफान, बरसात को झेलता है। खेती करने के दौरान, आजकल तो बहुत तरीके—तकनीक आ गई है, लेकिन अगर हम पुराने जमाने की बात करें तो बैलों से खेती हुआ करती थी और खेत जोतने के समय कई बैल अड़ियल रवैया दिखाया करते थे, खेती जोतते टाईम किसानों को बड़ा संघर्ष करना पड़ता था लेकिन किसान धैर्य और अपनी सूझबूझ से उन अड़ियल बैलों से भी खेती करवा लिया करता था। सेम उसी प्रकार आज की मौजूदा केन्द्र में बैठी हुई सरकार का जो अड़ियल रवैया है, जो किसानों के प्रति संकुचित मानसिकता

है, इनके केंद्रीय मंत्री कभी इनको टुकड़े–टुकड़े गैंग की संज्ञा देते हैं, इनके मंत्री कभी इनको लफंगे कहते है। तो ऐसे में अपने धैर्य का परिचय देते हुए इस अड़ियल सरकार की भी लगाम कसने का काम हमारे किसानों ने पिछले एक साल के अपने संघर्ष से किया है। ये वो बैल हैं जिन्होंने इस देश के किसान की स्वतंत्रता को रोकने की कोशिश की, जिस प्रकार से अड़ियल बैल खेत के अंदर अपनी हठधर्मिता दिखता है और किसान को परेशान करता है, उसकी खेती करने में, हल जोतने में। तो इस सरकार ने भी वैसा ही अड़ियल रवैया अपनाया, हठधर्मिता दिखाई, जिद दिखाई, तानाशाही दिखाई। आज हमारा संविधान दिवस हम लोग मना रहे हैं उस संविधान की, लोकतंत्र के मंदिर के अंदर हत्या करने का भरसक प्रयास किया, जिस लोकतंत्र के मंदिर में, लोकसभा और राज्यसभा के अंदर एक समूचा संगठन, अलग–अलग पार्टियों का, दर्जनभर से ज्यादा पार्टियों ने जिस किसान बिल का विरोध किया, उसी को अपना तानाशाही रवैया दिखाते हुए, अपनी हठधर्मिया दिखाते हुए इस मोदी सरकार ने पास किया। तो ऐसे अड़ियल रवैये को, ऐसी तानाशाही सोच को, ऐसी संकुचित मानसिकता को अपने धैर्य, अपने परिश्रम और अपनी ईमानदारी से झुकने के लिए मजबूर किया इस देश के किसानों ने। मैं आज देश के किसानों को बधाई देती हूं और उनके संघर्ष की भी सराहना करती हूं कि तमाम षड्यंत्रों के बावजूद, 700 से ज्यादा किसानों की शहादत के बावजूद उन्होंने अपनी जिम्मेदारी को और अपने आपको देश की जवाबदेही के लिए हमेशा प्रथम अग्रिम पंक्ति में रखा। तमाम तरीके के षड्यंत्र, कभी आतंकवादी कहना, कभी जो है उपद्रवी कहना, साजिशन अपने लोगों को इनके किसानों के आंदोलन में घुसाकर देश विरोधी बातें कराना, तमाम चीजों को हमारे किसानों ने देखा, महसूस किया, झेला, लेकिन अंततः ये देश लोकतांत्रिक है, बाबा भीमराव अम्बेडकर जी के संविधान से चलने वाला ये देश है और अंततः इस लोकतंत्र के अंदर हमारे संविधान की और हमारे किसानों की जीत हुई। लेकिन अभी इस जीत को हम सत्य नहीं मान सकते क्योंकि ये वो सरकार है जो जुमलों पर चलती है, झूठे वादों पर चलती है। चंद मिनट पहले कुछ कहती है और चंद मिनट बाद अपना बहरूपिया अंदाज दिखा देती है। उदाहरण स्वरूप इन्होंने कहा था कि किसानों की आय दोगुनी करेंगे, लेकिन पिछले एक साल से इस देश का किसान संघर्ष कर रहा है, अपनी स्वतंत्रता को बचाने के लिए, अपनी जमीन को

बचाने के लिए, अपनी किसानी को बचाने के लिये और अपने अधिकार को बचाने के लिए। इस झूठी सरकार ने, मक्कार सरकार ने कहा था कि हम रोजगार को दोगुना कर देंगे, युवाओं की आय को दोगुना कर देंगे, लेकिन आज इस देश की बेरोजगारी अपनी चरमसीमा के पार हो चुकी है, तो ऐसी सरकार के ऊपर हम कदापि भरोसा नहीं कर सकते क्योंकि ये जुमलेबाज लोग है। महिला सुरक्षा की बात करते हैं लेकिन इन्हीं के विधायक, इन्हीं के मंत्री, इन्हीं के पार्टी के पदाधिकारी पाए जाते हैं महिलाओं के खिलाफ गतिविधियॉ करते हुए। इन्हीं की सरकार, इन्हीं की पार्टी ने बहुत ऊंची–ऊंची आवाज में, बड़े–बड़े होर्डिंगस लगाकर मंहगाई को कम करने का वादा किया था। लेकिन आज पेट्रोल के दाम देख लीजिए। डीजल के दाम देख लीजिए। सब्जियों के दाम देख लीजिए और ये सरकार अपना जो जुमलेबाजी का चोला है वो आये दिन नया पहनती जा रही है, पहनती जा रही है। तो ऐसी स्थिति में सिर्फ एक व्यक्ति जो दिन भर मन की बात करता है, काम की बात नहीं करता। वो सुबह नहा–धोकर टी0वी0 पर आ जाता है और फालतू की मन की बातें करते हैं, काम की बातें वो करते नहीं। तो मैं उस व्यक्ति को ये कहना चाहती हूं कि मन की बात आप अपने घर में भी कर सकते हैं लेकिन अब घर में तो कोई है नहीं तो वो देश का ही खून पियेंगे, किसानों को ही दुखी करेंगे, युवाओं को ही दुखी करेंगे और जो देश की जीडीपी है, देश की जो स्थिति है उसी को बर्बाद करने का काम करेंगे, एयरपोर्ट को बेचने का काम करेंगे लेकिन आप जो भी करते हैं उसकी कम से कम अपनी एकाउन्टिबिल्टी और अपने शब्दों की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए करिये। आप एक दिन सुबह–सुबह आते हैं चैनल पर और देश से माफी मांगते हैं और कहते हैं कि हम किसान बिल को वापस ले रहे हैं। बहुत अच्छी बात है लेकिन जैसे आप किसान बिल को वापस लेते हैं उसके साथ–साथ माननीय मंत्री श्री गोपाल राय जी के द्वारा जो प्रस्ताव इस सदन में पास हुआ है कि तमाम जिन लोगों की मृत्यु, शहादत इस किसान आन्दोलन के दौरान हुई उन तमाम लोगों को, उनके पीड़ित परिवारों को एक–एक करोड़ रूपये का मुआवजा और सरकारी नौकरी इस जुमलेबाज सरकार की ओर से मिलनी चाहिए। किसानों को उनका अधिकार स्वामीनाथन रिपोर्ट और जो भी किसानों की मांग है वो जल्द से जल्द पूरी होनी चाहिए। चूंकि आज का विशेष सत्र हम लोगों ने किसानों के हित के लिए, उनकी आवाज को बुलन्द करने

के लिए बुलाया था और एक बहुत महत्वपूर्ण बात इस बीते समय के अन्दर जो हमारे किसानों के उपर तमाम तरीके के केस लगाये गये हैं, हम लोग ये मांग करते हैं कि केन्द्र सरकार उन केसों को भी तुरन्त प्रभाव से वापस ले। आज बहुत ही महत्वूपर्ण दिन है। आज संविधान दिवस भी है तो मैं आज संविधान दिवस की भी सब लोगों को बहुत–बहुत शुभकामनायें, बधाई देती हूं। आज आम आदमी पार्टी, वो पार्टी देश के अन्दर जो आम जन की भावनाओं का ध्यान रखते हुए उनकी बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य, महिलाओं का सम्मान, महिलाओं की सुरक्षा और तमाम वो चीजें जो इस देश के मतदाता का अधिकार है। आजादी के 75 साल के बाद भी इन सरकारों ने सिर्फ और सिर्फ आम जन का दोहन करा, आम जन के अधिकारों का हनन करा, उनको सिर्फ और सिर्फ राजनीति का शिकार बनाया। उन तमाम लोगों के हक और हकूक की लड़ाई लड़ने वाली अरविंद केजरीवाल जी के नेतृत्व में आम आदमी पार्टी का भी आज स्थापना दिवस है। मैं तमाम लोगों को, सदन के अन्दर मौजूद तमाम लोंगो को उनके स्थापना, आम आदमी पार्टी के स्थापना दिवस की भी बहुत–बहुत शुभकामनायें देती हूं और बहुत–बहुत बधाई देती हूं और फिर से इस देश की जिम्मेदार नागरिक होने के साथ–साथ, इस सदन की सदस्य होने के साथ–साथ माननीय मंत्री श्री गोपाल राय जी के द्वारा जो प्रस्ताव उन्होंने दिया है, सदन के सामने पेश किया है उसका मैं पुरजोर समर्थन करती हूं और ये निवेदन करती हूं कि केन्द्र सरकार के कानों तक ये बातें जायें और वो किसानों के हित में बेहतर से बेहतर प्रयास करें और जो भी उनके अधिकार हैं उनको वो वापस देने का काम करें। बहुत–बहुत धन्यवाद। बहुत–बहुत आभार। जय हिन्द। जय भारत।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद राखी जी। श्रीमान महेंद्र गोयल जी।

श्री महेंद्र गोयलः धन्यवाद अध्यक्ष जी, जो आपने मुझे आज के इस महत्वूपर्ण बिल पर बोलने के लिए समय दिया। सबसे पहले तो मैं आज संविधान दिवस है सभी को मैं बहुत–बहुत बधाई देता हूं और बहुत–बहुत बधाई देता हूं दिल्ली विधान सभा को। आज दिल्ली सरकार के मंत्री गोपाल राय जी एक कृषि कानून के उपर जो बिल था जिसको केन्द्र सरकार ने कुछ चन्द लोगों के लिए बनाया था उस बिल को आज लेकर आये निरस्त करने के लिए। जिस समय ये बिल बनाया गया था देश के

कुछ घरानों के लिए बनाया गया था लेकिन एक साल के बाद उस बिल को निरस्त करने का प्रधानमंत्री महोदय ने एलान किया। सुनकर तो बहुत अच्छा लगा लेकिन दुख भी हुआ। दुख इस बात का हुआ कि देश का कोई भी नागरिक, देश का कोई भी किसान आज प्रधानमंत्री जी की बात के उपर विश्वास करके उठने के लिए तैयार नहीं हुआ उन सड़को से। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण हैं कि एक हमारे प्रधानमंत्री की आवाज को, एक प्रधानमंत्री की बात को वो किसान कोई तवज्जो नहीं दे रहे हैं क्योंकि जिस संसद के अन्दर कुछ चन्द आदमियों के लिए वो बिल पेश किया गया था, बनाया गया था। जब तक उसी संसद से वो बिल निरस्त नहीं होगा तब तक ये किसान उठने वाले नहीं है। ये आज दिल्ली विधान सभा ने संविधान दिवस के मौके पर आज ये सदन बुलाया है। इसके लिए आपको भी मैं बहुत–बहुत बधाई देता हूं। एक समय था मैं जब कोई भी रसोई लगाता था, चाहे मैंने रामलीला मैदान के अन्दर लगाई हैं या अमरनाथ यात्रा के दौरान में लगाई है, मेरी रसोई हमेशा सक्सेस रही थी। वह कुछ न कुछ परिवर्तन लेकर आयी थी। मैंने रसोई किसानों के लिए सिंघु बार्डर के उपर भी लगायी। मैं बहुत मायूस था कि जिस शिद्दत के साथ, जिस मन के साथ, जिस मुख्यमंत्री जी के कहने के उपर, अपने सभी साथियों के कहने पर मैंने उस रसाई को लगाया है और प्रधानमंत्री जी के कानों के उपर जूं भी नहीं रेंग रही है कि मतलब लाखों–करोड़ों किसान दिल्ली के बार्डर के उपर इस सर्दी के अन्दर भी बैठें हैं। बारिश के अन्दर भी बैठे हैं, तपती हुई गरमी के अन्दर भी बैठे हैं। मुझे लगा था कि मेरी रसोई के अन्दर कुछ खोट है या मेरे साथियों के अन्दर खोट है लेकिन मुझे खुशी उस दिन हुई जब प्रधानमंत्री जी एक साल के बाद कम से कम यह कहने के लिए तैयार हुए कि मैं ये तीनों के तीनों कृषि कानून वापस लेता हूं। उस दिन मेरी वो रसोई लगानी सक्सेस हुई। आप भी गये थे उस समय में रसोई के अन्दर। आप भी अपने साथियों के साथ में बहुत सारा राशन लेकर गये थे। यहीं से सभी साथियों ने वहां पर रसोईयों के लिए मदद पहुंचाई। सभी का मैं तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूं कि आपने अपनी नेक कमाई में से सिंघु बार्डर के उपर या टिकरी बार्डर के उपर या यू0पी0 बार्डर के उपर जो रसोई लगवायी थी वो सारी का सारी सक्सेस हुई है तो इसके लिए मैं परमात्मा का शुक्रिया अदा करता हूं और मैं कहता हूं।

मैंने जमाने का रंग बदलते देखा है

मैंने जमाने को रंग बदलते देखा है

उम्र के साथ जीने का ढंग बदलते देखा है

और राजनीति के लिए, कुछ आदमियों के लिए,

कुछ काले कानून बनाते हुए देखा है और

वोटों की खातिर उसी कानून को निरस्त करते हुए देखा है

वोटों की खातिर उसी कानून को निरस्त करते हुए देखा है।

प्रधानमंत्री जी या एक पार्टी ने अपने फायदे के लिए कुछ घरानों के लिए बिल बनाया। अभी अखबारों के अन्दर मैं पढ़ रहा था। जिनके कंधे के उपर हाथ रखकर हमारे प्रधानमंत्री महोदय चलते थे आज वो एशिया का सबसे नम्बर–1 आदमी है और वो नम्बर–1 आदमी कौन है? वो नम्बर–1 आदमी है अडानी साहब, जिनके हेलिकाप्टर लेकर देश के अन्दर जगह–जगह वो प्रचार किया करते थे अपने चुनाव का, जिसकी खातिर वो प्रधानमंत्री बने। अरे प्रधानमंत्री बने थे आप पूरे देश के लिए। एक आदमी के लिए नहीं बने थे। दो घरानों के लिए नहीं बने थे। तीन घरानों के लिए नहीं बने थे। पूरे देश की जनता ने आपको वोट दिया था। पूरे देश की जनता के लिए सोचने का आपका फर्ज बनता था लेकिन नहीं सोचा उन्होंने। दुख होता है लेकिन जनता के अन्दर वो ताकत है। संविधान के अन्दर वो ताकत है जब वो अपने उपर आ जाती है तो अच्छों–अच्छों की नींद हराम कर देती है। नींद खुली एक साल के बाद खुली कोई बात नहीं और कुछ समय आने के बाद अभी यूपी के अन्दर ही नींद खोलेंगे इनकी। पंजाब के अन्दर इनकी नींद पहले उखाड़ दी थी। उत्तराखण्ड के अन्दर उखाड़ रहे हैं। गोवा के अन्दर आपकी क्या हालत है। आपको पता होगा। आने वाले चुनाव के अन्दर आपको बता देंगे कि ये जो मनमर्जी की है न। मन की बातें की है। नहीं चलने देंगे। अभी राखी बहन कह रही थी। मन की बात सुनने के लिए कोई घर में नहीं है। अरे घर में नहीं है। ये जनता तो है इनकी सुन लो। नहीं सुननी और जब कभी मोदी जी चलते थे न। मैं शायरी के अन्दाज में कहता हूं,

जब कभी वो चलते थे, तो होता था शेर जैसे चलने का गुमान

मगर उन्हें भी पांव उठाने के लिए इस समय

सहारे को तरसते हुए देख रहा हूं

जब चलते हैं अब उनकी चाल बोल रही है। किसी न किसी का सहारा लेकर चलते हैं। किसी के कन्धे के उपर हाथ रखते हैं।अभी अखबार में फोटो आ रही थी। योगी जी के कन्धे पर हाथ रखकर चल रहे थे। नहीं बचेगा वो भी कन्धा। अपने भाषण के दौरान कह रहे थे। मेरी आंखे भर आ रही है, दिल भर आ रहा है कानून को निरस्त करते हुए। कहीं शायरी में था।

उनकी आंखों की चमक से सहम जाते थे लोग

मगर उन्हीं आंखों को बरसात की तरह भी हम लोगों ने बहते हुए देखा है

उन्हीं आखों को बरसात की तरह बहते हुए देखा है।

जिस समय नाटक करते हुए कई बार रो भी पड़ते हैं। रो भी पड़ते हैं, नहीं पड़ते हैं? किसानों के पक्ष में ही है ये। शुरूआत देख लो आप चले गये थे उस समय में।

माननीय अध्यक्षः अपना–अपना नजरिया है विजेंद्र जी ये तो।

श्री महेंद्र गोयलः उस समय में चले गये थे आप।

माननीय अध्यक्षः तो खुश हो जाओ।

श्री महेंद्र गोयलः क्योंकि किसानों के मुद्दे के उपर सुनना आप लोगों के वश की बात नहीं है। आप ही लोग कहते थे इनको कभी आतंकवादी। कभी अलगाववादी। कभी टुकड़े–टुकड़े गैंग। ये न टुकड़े–टुकड़े गैंग थे, न आतंकवादी थे, न ये अलगाववादी थे, ये इस देश के नागरिक थे। लोगों का पेट भरने वाले किसान थे। इन्हीं किसानों ने अपनी एकता के बल के उपर आज जीत हासिल की और इसी प्रकार से ये किसान पहले भी पेट भरते थे। आगे भी इस देश के हर नागरिक का पेट

भरेंगे। ये आप लोग भी जानते हैं। हम लोग भी जानते हैं लेकिन आप लोग मानते नहीं क्योंकि आप लोगों को तो दो–तीन आदमी के अलावा दिखता ही नहीं है। अडाणी, अम्बानी। ये चन्द घराने ही है आप लोगों के पास तो। गुप्ता जी, कर सको तो कुछ अच्छा काम करो। जैसे दिल्ली सरकार कर रही है। अरविंद केजरीवाल जी कर रहे हैं। मनीष सिसोदिया जी कर रहे हैं। गोपाल राय जी कर रहे हैं। कर सको तो कुछ अच्छा काम करो दिल्ली सरकार की तरह। शिक्षा के ऊपर काम करो। पराली गलाने के लिए केमिकल बनाने का काम करो। जिस प्रकार से गोपाल राय जी ने काम किया है। लोगों का पेट भरने का काम करो जिस प्रकार से मुख्यमंत्री साहब काम करते हैं। लोगों के यहां तक राशन पहुंचाने का काम करते हैं।

माननीय अध्यक्षः क्ंक्ल्यूड करिए। प्लीज।

श्री महेंद्र गोयलः क्ंक्ल्यूड तो कर देंगे 2024 में और पूरा का पूरा क्ंक्ल्यूड करके रख देंगे। अभी पंजाब में कर रहे हैं। उत्तराखण्ड में कर रहे हैं। यूपी के अन्दर कर रहे हैं। गोवा के अन्दर कर रहे हैं और जहां–जहां पर भी आओगे वहीं पर क्ंक्ल्यूड करके रहेंगे। ये आपको महेंद्र गोयल का वादा है।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद, धन्यवाद महेंद्र जी। बहुत–बहुत धन्यवाद। बैठिए।

श्री महेंद्र गोयलः अभी ठहर जाओ।

माननीय अध्यक्षः आज महेंद्र जी बड़े मूड में लग रहे हैं।

श्री महेंद्र गोयलः कर सको तो कुछ अच्छा काम करो। वरना दुख देते हुए तो हजारो को देखा है और उनकी उंगली से इशारे से, उनकी उंगली के इशारे से हो जाते थे कत्लेआम। उनकी उंगली के इशारे से उस क्षेत्र की बात कर रहा हूं मैं। उनकी उंगली के इशारे से हो जाते थे कत्लेआम। मगर उन्हीं हाथों को इस समय पत्ते की तरह कांपते हुए देखा है। मैं बहुत विश्वास के साथ सभी साथियों की तरफ से भी जितने भी सिंघु बार्डर के उपर काम करने के लिए मेरे साथ में आये थे आज उन सबका भी धन्यवाद करता हूं सदन के माध्यम से और गोपाल राय जी जो आज ये बिल इस सदन के अन्दर लेकर आये हैं, मैं पुरजोर समर्थन के साथ में अपना पूरा

समर्थन देता हूं। जय हिन्द, जय भारत।

माननीय अध्यक्षः आतिशी जी।

सुश्री आतिशीः एक साल पहले इस देश में किसानों ने एक आन्दोलन शुरू किया था। एक साल पहले हमारे देश के किसान अपना घर छोड़कर, अपने घर से सारा सामान उठाकर ट्रैक्टर ट्राली में रखकर दिल्ली के बार्डर पर पहुंचे थे। वो दिन जब हमारे देश के किसानों को अपना घर छोड़ना पड़ा था। ठिठुरती हुई ठंड में ट्रैक्टर ट्राली में बैठना पड़ा था। मुझे लगता है कि इस दिन को हमें अपने देश के इतिहास में हमेंशा याद रखना होगा कि जो हमारी थाली में खाना डालता है। जो हमारे देश का अन्नदाता है। हम सब जो यहां पर लोग बैठे हुए हैं। हम दिल्ली जैसे शहर में रहते हैं। मुझे नहीं लगता कि हममें से शायद ही कोई ऐसा होगा, दिल्ली में रहने वाले 90 प्रतिशत लोग जो खुद खेती किसानी करते होंगे लेकिन हमारे घर में तीन बार खाना रोज बनता है। हमारे घर में रोटी बनती है। ये रोटी का अन्न कौन उगा रहा है? वही किसान उगा रहे हैं जिनको अपना घर छोड़कर पिछले एक साल से बॉर्डर पर बैठना पड़ा है। ये हमारे देश के लिए दुख की बात है कि एक ऐसा कानून पास होता है। तीन ऐसे कानून पास होते हैं जो हमारे अन्नदाता को सड़कों पर बैठा देते हैं और न सिर्फ उनको सड़कों पर बैठाते हैं, जब वो संघर्ष करते हैं तो हमारी इस केन्द्र सरकार के लोग और मैं कुछ अलग–अलग एक्जाम्पल्स प्रस्तुत करना चाहूंगी कि केन्द्र सरकार के लोग ये नहीं सोचते कि ये हमारा अन्नदाता है जो सड़क पर बैठा हुआ है। उनको क्या–क्या नहीं बोला जाता। हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री जी कहते हैं कि ये आन्दोलनजीवी, परजीवी की तरह होते हैं। हमारे एक और केन्द्रीय मंत्री पीयूष गोयल जी कहते हैं कि ये किसान जो सिंघु बार्डर पर बैठे हुए हैं, ये किसान जो टिकरी बार्डर पर बैठे हुए हैं, ये माओवादी विचाराधारा से प्रेरित हैं। इनको कहा जाता है कर्नाटक के कृषि मंत्री कहते हैं कि आत्महत्या करने वाले किसान कायर हैं। हरियाणा के कृषि मंत्री कहते हैं कि आन्दोलन के पीछे पाकिस्तान का हाथ है। कोई उन्हें अलगाववादी कहता है, कोई माओवादी कहता है, कोई खालिस्तानी कहता है, कोई आतंकवादी कहता है। मैं सोचती हूं कि वो लोग जो हमारे देश के अन्नदाता पर ऐसे आरोप लगाते हैं जब रात को अपने घर जाते हैं और खाना खाने बैठते हैं और

अपनी थाली को देखते हैं तो उनको शर्म नहीं आती क्या कि उन्होंने अपनी थाली पर खाना रखने वाले के बारे में क्या–क्या कहा था लेकिन उन किसानों का संघर्ष था जो एक साल तक वहां पर बैठे रहे। उन किसानों की शहादत थी जो सात सौ से ज्यादा किसानों ने अपनी जांन दे दी जिसने एक अहंकारी सरकार को झुकने के लिए मजबूर कर दिया। वो अहंकारी सरकार जिसके हर मंत्री ने, जिसके हर नेता ने, जिसके हर समर्थक ने कोई कसर नहीं छोड़ी हमारे अन्नदाता पर अपशब्द कहने की लेकिन वो इस किसान आन्दोलन की पाक, पवित्रता, उनका जो अहिंसावादी आन्दोलन रहा है उसके लिए तो मैं मानती हूं उसके सामने हम सबको नमन करना चाहिए जिसने इस अहंकारी सरकार को भी झुकने के लिए मजबूर कर दिया। मैं देखती थी हम लोग इस एक साल के दौरान अक्सर शाम को डिबेट्स पर जाया करता थे जहां पर अलग–अलग मुद्दे किसान आन्दोलन से जुड़े हुए आते थे और अलग–अलग नेतागण जो भारतीय जनता पार्टी के होते थे, टीवी पर आकर इन किसानों पर कैसे आरोप लगाते थे। अलग–अलग टीवी चैनल्स पर हम ये देखते थे कि अलग–अलग एंकर्स इन पर इतने सवाल उठाते थे। ऐसा लगता था कि ये किसान अपने किसी एक सेल्फीश रीजन के लिए वहां पर बैठे हुए हैं, इस देश को तबाह करने के लिए बैठे हुए हैं। ऐसे आरोप लगाये जाते थे लेकिन मैं ये मानती हूं कि वो किसान जो वहां पर एक साल के लिए टिकरी बार्डर पर बैठे रहे सिर्फ अपनी लड़ाई नहीं लड़ रहे थे। वो पूरे देश की लड़ाई लड़ रहे थे। इसलिए लड़ रहे थे कि हमारी थाली पर खाना आ सके। किसान को मण्डी में जाकर अपना दाम नहीं मिल रहा है। वो तो एक पक्ष है लेकिन अगर ये तीन काले कानून एक्शन में आ जाते तो हम लोग भी जो बाजार से सामान खरीदते हैं। जो अन्न खरीदते हैं, जो सब्जी खरीदते हैं, हम सबको पता है कि उसका दाम आसमान छू जाता। तो वो किसान जो एक साल से संघर्ष कर रहे हैं सिर्फ अपने लिए संघर्ष नहीं कर रहे थे, पूरे देश के लिए संघर्ष कर रहे थे और आज इस बात का हम सबको गर्व होना चाहिए कि हम लोगों को एक ऐसे किसान आन्दोलन को समर्थन करने का मौका मिला जिसने इस अहंकारी सरकार को झुकने के लिए मजबूर किया। स्पीकर साहब मैं आपका धन्यवाद करना चाहती हूं कि आपने मुझे इस मौके पर इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर बोलने का मौका दिया और मैं यहां पर इस बात का गर्व महसूस करती हूं कि आज संविधान दिवस पर हम यहां पर एक

रिजोलूशन पास कर रहे हैं। किसानों के समर्थन में रिजोलूशन पास कर रहे हैं और हम जो एमएसपी की इस किसान की मांग है उसके समर्थन में रिजोलूशन पास कर रहे हैं और मुझे उम्मीद है कि जिस तरह से केन्द्र सरकार को ये तीनों काले कानून वापस करने पड़े उसी तरह से जो किसानों की एमएसपी की मांग है उस मांग को भी पूरा किया जाये। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद, धन्यवाद। श्री विजेंद्र गुप्ता जी।

श्री विजेंद्र गुप्ताः अध्यक्ष जी, कृषि कानून सुधार, कृषि सुधार कानून जो 20 सितम्बर को राज्य सभा से पारित हुए।

माननीय अध्यक्षः नहीं, नहीं, सौरभ जी। प्लीज।

श्री विजेंद्र गुप्ताः और उससे पहले।

माननीय अध्यक्षः मैं माननीय सदस्यों से प्रार्थना करूंगा कि गम्भीरता से लें प्लीज।

श्री विजेंद्र गुप्ताः मैं आपके माध्यम से आंदोलनजीवी सरकार को बताना चाहता हूं कि आम आदमी पार्टी ने उन बिलों का समर्थन किया। लोकसभा में भी और राज्यसभा में भी। यानि कि एक तरफ जब बिल सदन से पारित होते हैं तो आम आदमी पार्टी के सांसद उसका समर्थन करते हैं, अरविंद केजरीवाल जी उसका समर्थन करते हैं और समर्थन करने के बाद एक मिनट।

माननीय अध्यक्षः सौरभ जी, इसके बाद आपकी बारी आएगी आप उत्तर दीजिए, नोट कर लीजिए प्लीज।

श्री विजेंद्र गुप्ताः और आज।

माननीय अध्यक्षः अब इसके बाद आपकी दिलीप जी, इसके बाद सौरभ जी की बारी है आप नोट कर लीजिए सारी चीजें।

श्री विजेंद्र गुप्ताः जब भारत की सरकार कैबिनेट में इन पारित कानूनों को, पारित बिलों को वापिस ले चुकी है तब इस सदन में बड़ा हास्यास्पद है, इस सदन में जो वापिस हो चुके हैं, उन पर प्रस्ताव पारित किया जा रहा है। यहां पर मैं सतारूढ़ दल को बताना चाहता हूं कि इससे पहले भी देश के अंदर किसान आंदोलन हुए चाहे वो कांग्रेस की सरकारें थीं, मध्य प्रदेश में हुए, केरल में हुए, राजस्थान में हुए या कम्युनिस्ट पार्टी की सरकारें थीं, दमनकारी नीति अपनाई गयी, किसानों पर गोली चलाई गयी, उनको हत्तोसाहित किया गया, उन पर लाठियां बरसाई गयी और दमनकारी नीतियों से आंदोलन को दबाने की कोशिश की। मुझे गर्व है अपने देश के लोकतंत्र पर, मुझे गर्व है देश के प्रधान मंत्री पर, आज संविधान दिवस के अवसर पर मैं सदन के समक्ष कहना चाहता हूं कि इस आंदोलन के दौरान एक भी गोली केंद्र सरकार की तरफ से, पुलिस की तरफ से, किसी भी पैरा मिलिट्री स्टाफ की तरफ से एक भी गोली नहीं चली और एक भी किसान पुलिस की गोली से कहीं कोई हत्तोसाहित नहीं हुआ। मुझे लगता है इस सदन में 62 का बहुमत लेकर बैठा हुआ सत्तारूढ़ दल मेरे इस वक्तव्य से बौखला गया है।

माननीय अध्यक्षः भई कुलदीप जी, आपकी बारी आएगी, ऐसे नहीं, ये तरीका ठीक नहीं।

श्री विजेंद्र गुप्ताः यहां पर बात की जा रही है।

माननीय अध्यक्षः मैं माननीय सदस्यों से प्रार्थना कर रहा हूं।

श्री विजेंद्र गुप्ताः एक भी पुलिस की लाठी से, एक भी, मैं चाहूंगा कि गोपाल राय जी जिन्होंने प्रस्ताव यहां पर रखा है, मंत्री जी या फिर हमारे उप मुख्यमंत्री और हम चाहेगे मुख्यमंत्री यहां सदन में आएं, आज सदन में इस महत्वपूर्ण चर्चा में उनको भाग लेना चाहिए। केजरीवाल जी बताएं कि क्या वो एक भी उदाहरण ऐसा दे सकते हैं, क्या वो एक भी नाम ऐसा बता सकते हैं जो पुलिस की गोली से हत्तोसाहित हुआ हो या कोई उसके साथ किसी भी प्रकार का दुर्व्यवहार हुआ हो। ये लोकतंत्र की महिमा है, इस देश के अंदर और इस देश में जहां एक तरफ आंदोलनजीवी सरकार में बैठे हुए लोग बिल का समर्थन करते हैं और वहीं चौराहे पर आकर उसका विरोध

सिर्फ मौकापरस्ती है और इससे ज्यादा कुछ नहीं है। मैं इतना अवश्य कहूंगा कि पूरे देश ने इन कानूनों को स्वीकारा। ये कृषि सुधार कानून देश के हित में पूरे देश ने इसको स्वीकारा लेकिन प्रधानमंत्री जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि मैं कुछ क्षेत्र में, कुछ किसानों को अपनी बात समझा पाने में असफल रहा। 11 दौर की वार्तालाप हुई, 11 बैठकें हुई लेकिन उसके बावजूद भी हम उनको समझाने में सफल नहीं हुए और पवित्र दिन गुरू नानक देव जी के प्रकाशोत्सव पर प्रधानमंत्री जी ने स्वयं आकर देश को संबोधित करते हुए इन कानूनों को वापिस लेने की घोषणा की, ये है हमारा लोकतंत्र। बिना एक भी लाठी, गोली चलाए किसी को हत्तोसाहित किए अगर कोई जिद पर अड़ा, साथियों मैं बताना चाहता हूं अध्यक्ष जी मैं आपके माध्यम से कि 11 करोड़ किसानों को हर 4 महीने में एक बार डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर के माध्यम से 2 हजार रूपया उनके अकाउंट में डाला जा रहा है, लगभग पौने 2 लाख करोड़ रूपया अभी तक देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने और लगातार ये सिलसिला जारी है, लगातार ये किसान सम्मान निधि किसानों को दी जा रही है। 80 करोड़ लोगों को अप्रैल 2020 से, मैं आपके समक्ष आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि अब तक 3 लाख करोड़ रूपये से ज्यादा, 4 किलो गेहूं और एक किलो चावल इस देश के 80 करोड़ लोगों को हर महीने भारत की सरकार के द्वारा मार्च 2022 तक । अभी मुख्यमंत्री जी मौकापरस्ती की बात करते हैं, नवम्बर 30 को ये योजना का एक खंड पूरा होने जा रहा था, बिना सोचे समझे सरकार ने झूठ बोला कि केन्द्र ने योजना बंद कर दी है, हम मुफ्त राशन जारी रखेंगे जबकि वास्तविकता ये है कि वो 72 लाख 60 हजार लोगों का जो राशन है, जो लगभग 1 हजार करोड़ रूपये का राशन जो पीडीएस के माध्यम से डिस्ट्रिब्यूट किया जाता है वो भी भारत सरकार भेज रही है अपने खर्चे से। यहां तक कि ट्रांस्पोर्टेशन कॉस्ट भी भारत की सरकार वहन कर रही है।

माननीय अध्यक्षः प्रमिला जी, प्रमिला जी, प्लीज।

श्री विजेंद्र गुप्ताः यहां पर इस सदन के समक्ष लोगों को गुमराह करने के लिए मैं कहना चाहता हूं अध्यक्ष जी किसान बिल पर चर्चा हो रही है, अच्छी बात है। देश के सामने सच जाना चाहिए और आज हम इस सदन के माध्यम से लोगों तक सच

पहुंचा रहे हैं लेकिन इसके साथ साथ इसी सदन में एक्यूआई 400 हो गया है, दिल्ली पूरा पाल्यूटिड सिटी है, इस समय पाल्यूशन से ग्रस्त है और जब विपक्ष के सदस्य कहते हैं कि सदन में दिल्ली की विधान सभा में क्या पाल्यूशन पर चर्चा नहीं होनी चाहिए।

माननीय अध्यक्षः अब क्ंक्ल्यूड करिए विजेंद्र जी।

श्री विजेंद्र गुप्ताः तो उनको बाहर निकाल दिया जाता है। आज दिल्ली के अंदर लिक्र पॉलिसी को लेकर विरोध हो रहा है। आज जो दिल्ली के।

माननीय अध्यक्षः विजेंद्र जी, अब क्ंक्ल्यूड करिए, क्ंक्ल्यूड करिए।

श्री विजेंद्र गुप्ताः अंदर विरोध हो रहा है लेकिन आपने एक दिन का सत्र रख कर।

माननीय अध्यक्षः भई क्ंक्ल्यूड करिए। अभी क्ंक्ल्यूड करिए विजेंद्र जी।

श्री विजेंद्र गुप्ताः विरोध करने पर भी यहां कोई चर्चा नहीं करता। एक तरफ राजनीति से प्रेरित इस सदन में चर्चा की जाए और दूसरी तरफ जहां जनता से जुड़े हुए मुद्दे हैं सीधे तौर पर दिल्ली की जनता से ये सदन दिल्ली की जनता के लिए है या फिर सिर्फ एक राजनीति का अखाड़ा बन कर रह गया है मैं यह आपके माध्यम से आपसे पूछना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद। श्री सौरभ भारद्वाज जी।

श्री सौरभ भारद्वाजः अध्यक्ष जी, एक तो ये है कि।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः अभी सौरभ जी को बोल लेने दीजिए, इसके बाद।

श्री सौरभ भारद्वाजः भई एक तो मेरा एतराज जो है अध्यक्ष जी, आप दर्ज करा लीजिए। मेरा एक एतराज है वो आप दर्ज कराइए। ओम प्रकाश शर्मा जी एक प्वाईंट बता रहे थे गुप्ता जी को, उन्होंने सुना ही नहीं उनकी बात। ये गलत बात है।

माननीय अध्यक्षः सौरभ जी आप। सौरभ जी आप अपने विषय पर आ जाइए प्लीज। सौरभ जी आप अपने विषय पर आ जाइए।

श्री सौरभ भारद्वाजः अब बता दो, हमें बता दो।

माननीय अध्यक्षः सौरभ जी, आप अपने विषय पर आ जाइए, चलिए क्यों सौरभ जी, क्यों विषय से भटक रहे हो। अब ये गलत बात है सौरभ जी। पिन आप मारते हो, फिर गड़बड़ होता है।

श्री सौरभ भारद्वाजः मेरी गलती है। तो विजेंद्र गुप्ता जी आज बड़े दिनों बाद बोले हैं और मैं उनकी बातचीत का बड़ा स्वागत करता हूं। मगर एक चीज मुझे जो लगी वो ये थी कि विजेंद्र गुप्ता जी को एक चीज का बार बार दुख सता रहा था, वो बार बार कह रहे थे देखो गोली नहीं चली, देखो लाठी नहीं चली, और 700 लोग मर गए तो गोली और लाठी भी चला लो। ये भी कर लेते, 700 लोग तो मार दिए आप लोगों ने, 700 लोग। मैं दावा करता हूं विजेंद्र गुप्ता जी।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः विजेंद्र जी, अब सुन लीजिए आप बीच में न टोकिए प्लीज। आपके बीच में डिस्टर्ब किया, मैंने एक एक को रोका, सबको रोका है मैंने, तुरंत रोका। तुरंत रोका है मैंने।

श्री सौरभ भारद्वाजः मैं एक छोटी सी चीज है वो ये कर लेंगे तो दूध का दूध, पानी का पानी हो जाएगा। 700 किसानों में से किसी एक किसान का घर चुन लो आप, किसी एक का और विजेंद्र गुप्ता जी चल दें और मैं भी चल दूंगा उनके साथ और उनके घर में जा कर कह दें कि देखो एक भी गोली नहीं चली, एक भी लाठी नहीं चली, वो इनको तभी की तभी, वो तभी की तभी।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः भई विजेंद्र जी, विजेंद्र जी उचित नहीं है अब ये, विजेंद्र जी आपको शोभा नहीं देता।

श्री सौरभ भारद्वाजः मुझे लगता है कि।

माननीय अध्यक्षः विजेंद्र जी, एक सेकिंड।

श्री सौरभ भारद्वाजः इतने सारे लोग।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः विजेंद्र जी, इधर देखिए, विजेंद्र जी मुझ से बात करिए आप, विजेंद्र जी। विजेंद्र जी आप सीधे बात मत करिए। श्रीमान विजेंद्र जी, विजेंद्र जी यह तरीका ठीक नहीं है, बिधूड़ी जी, इन्हें रोकिए। ये तरीका ठीक नहीं है। मैंने एक एक को रोका है उनको बात करने दो, वो आपकी बात मान रहे हैं।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः विजेंद्र जी अब बैठ जाइए आप। विजेंद्र जी।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः एक सेकिंड सौरभ जी, सौरभ जी एक सेकिंड। विजेंद्र जी, एक सेकिंड विजेंद्र जी आप एलओपी रहे हैं और आप नए विधायकों को कहते हैं आपको सदन की मर्यादा एक सेकिंड रूक जाइए, बंदना जी, रूक जाइए प्लीज, नहीं बैठ जाइए आप, नहीं आप बैठ जाइए। तो आप उनसे पूछें न फिर, आप बिधूड़ी जी को बोलना। अभी बिधूड़ी जी ने बोलना है न आपके बाद, आप बैठ जाइए।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः आपका नाम अच्छे पार्लियामेंटेरियन में है लेकिन आप ये जो कर रहे हैं ये उचित नहीं है। नहीं आप बैठ जाइए आप। बैठ जाइए। नहीं मैं ऐसे नहीं अलाऊ करूंगा बैठ जाइए। महेंद्र जी, बैठिए प्लीज। विजेंद्र जी। अरे आप समझो न वो हाइजेक करना चाह रहे हैं सदन को। आप उनकी उसमें आ रहे हैं। सौरभ जी से प्रार्थना कर रहा हूं।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः कुलदीप जी, मैं सौरभ जी, नहीं आप।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः विजेंद्र जी अगर इस पर चर्चा करनी है न, मेरे आफिस में चर्चा कर लेना, मैं और आप दोनों करेंगे। नहीं आप बैठ जाइए। नहीं, आज ही कर लेना न। हां आज ही कर लेना। बैठ जाइए। बैठ जाइए आप। चलिए सौरभ जी। अब माननीय सदस्य शांत। विजेंद्र जी आप 6 बार खड़े हो चुके हैं, ये छठी बार खड़े हुए हैं आप। इस बार खड़े हुए तो लास्ट वार्निंग है मेरी। नहीं लास्ट वार्निंग है। 6 बार खड़े हो चुके हैं आप। 6 बार खड़े हो चुके हैं आप। चलिए सौरभ जी।

श्री सौरभ भारद्वाजः मैं एक बात जो कहना चाहता हूं ये बड़ी अच्छी बात है अध्यक्ष जी, आप विधान सभा से गाड़ी करा दीजिए हमारे लिए, मैं और विजेंद्र गुप्ता जी पंजाब जायेंगे, 700 जितने लोग मरे हैं उनमें से एक इनके कहने से किसी के घर जायेंगे। हम आपके खर्चे पर जायेंगे, विधान सभा के खर्चे पर जायेंगे और वापिस आ कर रिपोर्ट यहां पर देंगे। वहां पर विजेंद्र गुप्ता जी को मौका दूंगा मैं और वहां पर ये बताएंगे।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः अरे भाई, अब आगे बढ़िए आप आगे बढ़िए।

श्री सौरभ भारद्वाजः तो वहां पर यह कह दें कि भई न गोली चली न लाठी चली, तुम्हारा आदमी कैसे मर गया वो बता देंगे कैसे मर गया। भई इन्होंने ही बोला। भई ये तो पंजाब में।

श्री विजेंद्र गुप्ताः मैं कह रहा हूं।

माननीय अध्यक्षः अरे आपने मुख्यमंत्री का 6 बार नाम लिया।

श्री विजेंद्र गुप्ताः तो क्या हो गया?

माननीय अध्यक्षः तो वो भी ले सकते हैं आपका नाम। नहीं वो भी ले सकते हैं। बात आपने रखी है। आप जिसका मर्जी आए नाम लें। एलओपी रहे हैं न आप? आप रहे हैं न? आपने जो बात बोली है उसका उत्तर दे रहे हैं।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः ये अब सातवीं बार खड़े हो गए हैं आप बीच में। सदन की बहस को आगे नहीं बढ़ने दे रहे। सातवीं बार खड़े हुए हैं आप। नहीं आप बैठ जाइए। राखी जी बैठ जाइए। नहीं मैं सुन नहीं रहा कुछ भी। बैठिए आप। चलिए।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः बैठिए।

सुश्री राखी बिरलाः ये उंगली दिखा दिखा कर बात कर रहे हैं, प्रत्यक्ष रूप से विधायक से बात कर रहे हैं, आप चेयर से बात करिए न। समय खराब करते हैं सदन का। आप यहां पर मस्ती करने आते हैं आप लोग। यहां पर आप समय बर्बाद करने आते हैं।

माननीय अध्यक्षः राखी जी, बैठिए प्लीज।

सुश्री राखी बिरलाः आप प्रत्यक्ष रूप से बात करिए। आप डायरेक्ट सदस्य से कैसे बात कर सकते हैं, उंगली दिखा कर बात कर रहे हैं आप अध्यक्ष जी से।

माननीय अध्यक्षः मैं माननीय सदस्यों से प्रार्थना कर रहा हूं।

सुश्री राखी बिरलाः कोई मर्यादा नहीं है क्या सदन की।

माननीय अध्यक्षः सदन के समय की सीमा है।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मार्शल्स, मैं अब बर्दाश्त नहीं करूंगा। मैं किसी कीमत पर बर्दाश्त नहीं करूंगा। राखी जी बैठ जाइए प्लीज। राखी जी बैठ जाइए प्लीज आप।

मैं अपने आप डायरेक्शन दूंगा जो देनी है। राखी जी बैठ जाइए। सदन की चर्चा, मैं माननीय सदस्यों से प्रार्थना कर रहा हूं सदन की चर्चा को आगे बढ़ने दें। वो आगे नहीं बढ़ने देना चाह रहे, आप उनके ट्रैप हो रहे हो उनके उसमें, आप समझ ही नहीं रहे बात को।

श्री सौरभ भारद्वाजः जी, जी। अध्यक्ष जी, एक बात जो इस सदन में कही गयी भाजपा के एक विधायक द्वारा कही गयी, मैं इनका नाम नहीं लेना चाहूंगा वर्ना इस बात पर ये फिर खड़े हो जायेंगे। कि संसद के अंदर जब ये कृषि कानून पास हुए तो आम आदमी पार्टी ने इसका सपोर्ट किया। मुझे लगता है कि इस सदन में खड़े हो कर इससे बड़े सदन के बारे में गलतबयानी करना सीधा सीधा विशेषाधिकार का हनन है इधर का भी और उधर का भी। ये बात ऑन रिकार्ड है। सबसे ज्यादा विरोध अगर कृषि कानूनों का किसी पार्टी ने किया और किसी नेता ने किया तो आम आदमी पार्टी ने किया, हमारे सांसद संजय सिंह जी ने किया और लोक सभा में हमारे सांसद भगवंत मान जी ने कहा, ये बिलकुल स्पष्ट है। इसके अंदर कोई दो राय नहीं है। और आज से नहीं, बिलकुल, दिलीप भाई बता रहे हैं बकायदा उनको सस्पेंड किया गया इस चीज के लिए कि ये कानून पास किए हैं। अध्यक्ष जी, इन कानूनों से भी बड़ी चिंता की बात इस देश के अंदर ये हो गयी है कि केंद्र सरकार के पास और भाजपा के पास अब इतनी बड़ी सोशल मीडिया की और टेलीविजन मीडिया की इतनी बड़ी एक आर्मी है इनके पास, इतनी बड़ी फौज है इनके पास कि ये सच को झूठ और झूठ को सच जब चाहे इस पूरे देश में प्रचारित कर सकते हैं और ये 3 कृषि कानून इस बात के सबसे बड़े टेक्स्ट बुक एग्जाम्प्ल हैं। मुझे लगता है कि आज के बाद जब भी इनकी सरकार जाएगी 2024 के बाद, तब बकायदा मीडिया के अंदर इस चीज को सिखाया जाया करेगा, टेक्स्ट बुक्स के अंदर ये चीज आयेंगी कि 3 ऐसे कानून जो हर लिहाज से किसानों के विरोध में थे, जिसमें साफ साफ, कोई भी आदमी जो बिलकुल सामान्य दिमाग भी रखता हो, उन कानूनों को पढ़ लेगा तो वो सीधा सीधा समझ जाएगा कि इन कानूनों के हवाले से आप देश के किसानों को उनकी जमीनों से बेदखल करना चाहते थे, सारी की सारी देश की किसानी अब बड़े बड़े कुछ उद्योगपति अंबानी हो सकते हैं, अडानी हो सकते हैं, और इनके कोई प्यारे

हो सकते हैं, उन लोगों की कॉरपोरेट फार्मिंग के हवाले करने के लिए ही ये कानून बनाए गए थे। जमाखोरी, जिसके खिलाफ सन 70 में, सन 80 के अंदर पिक्चरें बना करती थीं रोटी कपड़ा और मकान, काला बाजार, ये पिक्चरें इसके उपर बनती थीं कि कैसे देश में एक समय में काला बाजारी की जाती थी, जमाखोरी की जाती थी, अनाज की, दालों की जमाखोरी करके इसके दाम बढ़ाए जाते थे, मनमाने दाम पर उसको बेचा जाता था, देश की गरीब जनता को लूटा जाता था, इन्होंने उन कानूनों के जरिए जमाखोरी को कानूनीजामा पहना दिया, इन्होंने कहा कोई भी उद्योगपति कितनी भी जमाखोरी कर सकता है। अब आप ये सोचिए जमाखोरी करने से किसान का क्या फायदा होगा। कॉरपोरेट फार्मिंग लाने से किसान का क्या फायदा होगा, मंडियों को खत्म करने से किसान का क्या फायदा होगा और अध्यक्ष जी मैं कुछ दिनों पहले रोटरी क्लब की मीटिंग में गया था, बड़े बड़े लोग थे ग्रेटर कैलाश के, पंचशील के, आसपास के बड़े बड़े लोग थे और मैं जनरली इस तरीके की मीटिंग में जाता हूं मैं राजनीतिक बात नहीं करता और ऐसे ही डिनर था, उन्होंने मीटिंग की उसके बाद डिनर था तो मैं डिनर पर उन लोगों की बात सुन रहा था। इस तरीके से ब्रेनवाश्ड लोग थे, कोई कह रहा था कि यार देखा आपने ये बार्डर पर बैठे हुए है ब्लैकमेलर। मैंने कहा जी कौन बैठे हुए हैं? कह रहा है वो ब्लैकमेल करने तो बैठे हुए हैं सरकार को। इडियट्स को समझ में ही नहीं आ रहा कि ये जो कानून है ये तो उनके फायदे में है, ये तो उनको समझ में ही नहीं आ रहा। मैंने कहा जी ठीक है। कोई कह रहा था कि अरे वो तो पिज्जा पार्टी कर रहे हैं, वो तो फंडिंग आ रही है कनाडा से। कोई कह रहा है वो तो खालिस्तानी टेररिस्ट हैं। आप ये सोचिए अपने देश के बारे में हमने पढ़ा था सिक्स्थ के अंदर बताते थे कि 60% of our population is farmers. They are dependent on agriculture. 60 प्रतिशत देश की आबादी जो है वो एग्रिकल्चर पर, किसानी के उपर आधारित है। आप देश के 60 परसेंट लोगों के खिलाफ एक कानून ले आए और आपके पास मीडिया और सोशल मीडिया की इतनी बेपनाह ताकत है कि जो लोग उसका विरोध कर रहे हैं आपने उनको ही देश के विरोधी ठहरा दिया, आपने उनको खालिस्तानी बता दिया, आपने उनको टेररिस्ट बता दिया और आपके पास करीब 20 से 25 परसेंट एक आबादी है, एक आबादी है।

माननीय अध्यक्षः विजेंद्र जी, फिर आप टोक रहे हैं फिर। विजेंद्र जी आप टोक रहे हैं फिर।

श्री विजेंद्र गुप्ताः तो क्या हो गया सर?

माननीय अध्यक्षः कैसे टोक सकते हैं? नहीं क्या हो गया का क्या मतलब है ये। कैसे बात कर रहे हैं आप, क्या हो गया।

श्री सौरभ भारद्वाजः 20 से 25 परसेंट।

श्री विजेंद्र गुप्ताः ये ही तो बात ....

माननीय अध्यक्षः तो मुझ से बात करिए न आप सीधे। मैं रोका नहीं उनको। आप पूछ रहे हैं क्या हो गया।

श्री विजेंद्र गुप्ताः(अस्पष्ट आवाज)............

माननीय अध्यक्षः आपको इतनी तहजीब नहीं क्या हो गया फिर।

श्री विजेंद्र गुप्ताः(अस्पष्ट आवाज)............

माननीय अध्यक्षः बैठ जाओ। मैं सबको रोक रहा हूं।

.....व्यवधान..........

माननीय अध्यक्षः मैं सबको रोक रहा हूं। आप बोलते हैं क्या हो गया। बैठ जाइए अब आप।

श्री विजेंद्र गुप्ताः(अस्पष्ट आवाज)...........

माननीय अध्यक्षः विजेंद्र जी, बैठ जाइए। आप बैठ जाइए।

श्री विजेंद्र गुप्ताः(अस्पष्ट आवाज)...........

माननीय अध्यक्षः आप बैठ जाइए।

श्री विजेंद्र गुप्ताः(अस्पष्ट आवाज)...................

माननीय अध्यक्षः मैं सबको रोक रहा हूं। लेकिन किसी में हिम्मत नहीं हुई कि वो मुझे कहे क्या हो गया। आप बोल रहे हैं क्या हो गया। ये सदन है सब्जी मंडी नहीं है।

श्री विजेंद्र गुप्ताः आप(अस्पष्ट आवाज)............

माननीय अध्यक्षः मेरी बात सुनिए मैंने सबको रोका है लेकिन किसी ने मुझे नहीं कहा क्या हो गया। अब नहीं बैठ जाइए, अब जब चर्चा ठीक चल रही है मार्शल्स विजेन्द्र गुप्ता जी को बाहर करिए आठवीं बार खड़े हुए हैं। मैं इससे ज्यादा नहीं, आप बाहर करिए आठवीं बार खड़े हो गए आप भाषण में।

....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः आठवीं बार खड़े हुए, नहीं ये कोई तरीका थोड़े ही है। नहीं, मुझे कहते हैं क्या हो गया। मैं ऐसे सहन नहीं कर सकता, कोई बात नहीं। ये मुझे कहते हैं क्या हो गया आठ बार खड़े हो चुके हैं आप। जो 10 मिनट में खत्म होना था 20 मिनट कर दिए। आपने जाना है जाइए, आपने जाना है जाइए मैं ये अलाऊ नहीं करूंगा आठ बार खड़े होंगे, कोई तरीका नहीं है ये। कोई तरीका नहीं है। चलिए सौरभ जी। नहीं अगर शालीनता से बैठे, मैं बुला लेता हूं। शालीनता से बैठे तो मैं बुला लेता हूं। चलिए सौरभ जी।

श्री सौरभ भारद्वाजः अध्यक्ष जी, तो इस बात को।

श्री रोहित कुमारः बदतमीजी कर रहे हैं बार–बार।

माननीय अध्यक्षः एक सेकेंड, भई आप मत बोलिए कुलदीप जी नहीं सॉरी रोहित जी आप मत बोलिए प्लीज।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः हमारे पास कुछ नहीं है आपके इस फैसले के विरोध में मैं सदन से वाक–आउट कर रहा हूं।

माननीय अध्यक्षः आपने रख दिया न जी।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः बस इससे आगे कुछ कहने के लिए नहीं है।

माननीय अध्यक्षः मेरी बात सुन लीजिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः अध्यक्ष जी, बहुत हम आपका सम्मान करते हैं बहुत हमारे दिल में आदर है।

माननीय अध्यक्षः बिधूड़ी जी, मेरी बात एक बार सुन लीजिए। भई सोमनाथ जी यहां आ जाइए फिर। मुझे समझ नहीं आता क्या हो गया है आज। मैं करबद्ध प्रार्थना कर रहा हूं 7 बार वो खड़े हुए एक 10 मिनट के भाषण में उनके। अब आठवीं बार मैंने टोका मुझसे बात करिए तो कहते हैं क्या हो गया। यहीं तरीका है क्या सदन का आप सीनियर मोस्ट है मैं उनको ये कह रहा हूं अच्छे वक्ता है, अच्छे पार्लियामेंटेरियन है ये भी मैंने बोला। लेकिन ये कोई तरीका नहीं है।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः अध्यक्ष जी, क्या हमारे दिल पर गुजर रही है।

माननीय अध्यक्षः हमारे दिल पर क्या गुजर रही है।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः हमारी लीडरशिप के ऊपर किस तरह के आरोप लगाए जाते हैं किस तरह की भाषा प्रधानमंत्री जी के बारे में बोली जा रही है।

माननीय अध्यक्षः न कोई बात नहीं।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः और उसके बावजूद भी हम और उसके बाद।

माननीय अध्यक्षः ऐसा पता नहीं देश क्या–क्या बोल रहा है।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः हमारी लीडरशिप।

माननीय अध्यक्षः देखिए ये लोकतंत्र है कौन किसके बारे में क्या बोलता है।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः हमारी लीडरशिप को भी अपमानित किया जाएगा अभद्र भाषा का इस्तेमाल किया जाएगा और हमको बाहर निकाला जाएगा।

माननीय अध्यक्ष: नहीं वो अगर शालीनता से बैठे तो आप बुला लीजिए बाकी आपकी इच्छा है। शालीनता से बैठे बीच में टोके नहीं आप बुला लीजिए। चलिए आप जारी रखिए।

श्री सौरभ भारद्वाज: अध्यक्ष जी, इस चीज के लिए देश के अंदर चिंता की जरूरत है कि अगर आप देश की 60 प्रतिशत आबादी के खिलाफ कानून लाकर भी आपके पास ऐसे मीडिया चैनल है। आपके पास ऐसे टीवी न्यूज के एंकर है जो ऐसे कानूनों के लिए इतना बड़ा माहौल तैयार कर सकते हैं कि आपने जिसके लिए कानून बनाया वो तो कह रहा है कि ये कानून मेरे खिलाफ है और जिनका किसानी से कोई लेना–देना नहीं। जिनका किसानों से कोई मतलब नहीं जिन्होंने कभी किसानी की नहीं, वो लोग टीवी पर बैठकर बता रहे हैं कि नहीं ये कानून बहुत अच्छे हैं इनको समझ में नहीं आ रहे। अब ये कैसे कहा जा सकता है कि उनको समझ में नहीं आ रहा हम समझाने की कोशिश कर रहे हैं जिसके लिए कानून बनाया उसी को ही समझ में नहीं आ रहे ये बड़ी अजीब बात है और ऐसे प्रधानमंत्री नहीं समझा पा रहे हैं जो हर हफ्ते ऑल इंडिया रेडियो पर अपने मन की बात करते हैं। मतलब जो आदमी कितना समझाता है लोगों को हर चीज के लिए वो इतनी बार समझाते हैं, वो भी अगर किसानों को नहीं समझा पाए, तो मुझे लगता है कि उनके समझाने के अंदर कोई तो दिक्कत है और इतनी बड़ी बात जो महेंद्र गोयल जी ने कही मेरे दिमाग में वो स्ट्राइक हुई। ये हमारे देश में पहली बार हो रहा है अध्यक्ष जी कि इतने बड़े मतों से चुने गए प्रधानमंत्री एक खास भाषण किसानों को देते हैं और उस भाषण में कहते हैं कि मैं इन तीनों कानूनों को वापिस ले रहा हूं। उसके बावजूद प्रधानमंत्री द्वारा कही गई बात जो टेलिविजन पर प्रसारित की गई है जिसके ऊपर बार–बार वीडियो दिखाया जा रहा है। हमारे देश के 60 परसेंट अन्नदाताओं को प्रधानमंत्री की कही हुई बात पर भरोसा नहीं आ रहा। ये एक बहुत बड़ा ट्रस्ट डेफिसिएट है जी। अध्यक्ष जी, मैं अपनी बात जो है इसी बात के साथ विराम देता हूं और सरकार के कृषि मंत्री गोपाल राय जी जो रेज्योलूशन सदन के सामने लेकर आए हैं मैं उसके साथ जो है अपनी बात को भी आगे बढ़ाता हूं और उसके साथ हूं।

माननीय अध्यक्षः माननीय मंत्री गोपाल राय जी।

माननीय पर्यावरण मंत्री (श्री गोपाल राय): माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी प्रतिपक्ष के माननीय विधायक ने काफी जोर–जोर से इस सदन के अंदर ये बात रखी कि सरकार की तरफ से न तो लाठी चलाई गई, न वाटर कैनन चलाया गया, न गोली चलाई गई। इस देश के अंदर एक साल से ये आंदोलन चल रहा है चाहे वो मीडिया में हो, चाहे वो प्रतिपक्ष का कोई नेता हो, चाहे वो किसान आंदोलन संयुक्त मोर्चा का कोई नेता हो। किसी ने ये बात नहीं कही कि गोली चलाई गई इसलिए ये बात समझ से परे हैं कि गोली–गोली–गोली–गोली वाली बात सदन के अंदर रखने की मंशा क्या है। लेकिन मैं ये बात कहना चाहता हूं अध्यक्ष महोदय ऑन रिकार्ड ये 26 नवम्बर का ही दिन है जब पंजाब से किसान अपनी मांग को लेकर के दिल्ली की तरफ कूच किए थे। तो आज ही का वो दिन है अगर आप रिकार्ड में वीडियो उठाकर देखेंगे तो हरियाणा के बार्डर पर लाठियां भी चली थी, वाटर कैनन भी चला था सड़क खोदी गई थी ये किसान जो है वो दिल्ली न पहुंचे। मैं इस सदन के सामने ये भी बात रखना चाहता हूं किसान आंदोलन के दौरान करनाल के अंदर जिस तरह से सरेआम आर्डर देकर के और लाठियां चलाई गई। किसानों के हाथ–पैर तोड़े गए, सर फोड़े गए थे उसका विज्युवल सारे चैनल पर आपको मिल जाएगा और गोली की बात कर रहे हैं। अरे गोली तो छोड़िए देश के इतिहास में पहली बार गाड़ियों से किसानों को कुचला गया वो दर्दनाक मंजर पूरा देश जानता है। इसलिए मैं सदन के सामने कहना चाहता हूं कि कुछ बातों को रखकर के जिसका न कहीं रिकार्ड है न किसी ने आरोप लगाया। उन बातों की आड़ में आप 700 किसानों की शहादत को आप दबा नहीं सकते हैं। इस देश के अंदर अगर एक साल सड़क पर रहना पड़े तब याद आ जाएगा कि कैसे रहा जाता है ठंड में। कैसे ठिठुर कर के जिंदगी बिताई जाती है, कैसे तपती धूप में बैठा जाता है, कैसे बरसात को बर्दाश्त किया जाता था। टैंट के नीचे पानी भरा हुआ था और किसान सड़क पर बैठा हुआ था इसलिए मैं कहना चाहता हूं अध्यक्ष महोदय, इस तरह की बात कहकर किसानों की शहादत और आंदोलन और कुर्बानी को अपमानित करने की बात न की जाए। आपने लाठियां भी चलाई है और गाड़ियों से लोगों को कुचला है। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि अगर

गोलियां चलाने की मंशा है अगर गोलियां चलाने की हिम्मत रखोगे, तो ये किसान आपको नेस्तनाबूत कर देगा ये भी औकात हिन्दुस्तान का किसान रखता है। इसलिए ये बातें इस तरह के सदन के अंदर नहीं की जानी चाहिए थैंक्यू।

माननीय अध्यक्षः देखिए मेरे पास 10 माननीय सदस्यों के नाम आए हैं जो बोलना चाहते हैं। मेरे पास समय की सीमा है मैं नाम बोल रहा हूं रोहित मेहरोलिया जी का आया है, श्रीमान दिलीप पांडेय जी का आया है, गुलाब सिंह जी का है, सोमनाथ भारती जी का है, जून साहब का है, उपकार जी का है, कुलदीप जी का है, अखिलेशपति त्रिपाठी जी का है, बंदना कुमारी जी का है। मैं समय की सीमा को ध्यान में रखते हुए तीन लोगों को पांच–पांच मिनट के लिए समय दे रहा हूं। महिला है बंदना जी को समय दे रहा हूं, दिलीप पांडेय जी को दे रहा हूं हमारे चीफ व्हीप है और सोमनाथ जी को ध्यान रखिए प्लीज। बाकी से मैं क्षमा चाहता हूं समय की सीमा में नहीं दे पा रहा हूं बंदना जी, पांच में मिनट रखिएगा बात।

श्रीमती बंदना कुमारीः धन्यवाद अध्यक्ष जी, आज आपने बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दे पर मुझे बोलने का मौका दिया और शायद ये मेरे दिल से मेरी भावनाओं से जुड़ा हुआ मुद्दा है। अध्यक्ष जी, आज संविधान दिवस है संविधान दिवस की पूरी दिल्ली को पूरे देश को बहुत–बहुत बधाई। सदन में बैठे सभी लोगों को भी बहुत–बहुत बधाई। आज इस संविधान दिवस पर किसान आंदोलन शुरू हुआ था और अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से बताना चाहती हूं ये संविधान ने ही हमें अधिकार दिया है जो हम अपनी किसी बात को जब गूंगी, बहरी सरकार हो जाती है तो उन तक अपनी बात को हम पहुंचाएं आंदोलन के माध्यम से, धरने के माध्यम से, प्रदर्शन के माध्यम से और जब किसान साथी हमारे अन्नदाता भाई–बहन पूरे परिवार के साथ जब बैठे थे। तो जब–जब हमें मौका मिलता था, हम उनकी सेवा में जाते थे और उन लोगों की दुर्दशा देखकर बहुत ही दर्द होता था। जो किस तरीके से हम दो दिन तीन दिन आंदोलन करके हमारे भाजपा के साथी दिखा दे उस तरह का आंदोलन पूरे परिवार के साथ बुजुर्ग, बच्चे, महिलाएं सभी जिनको कहीं फ्रेश होने की भी जगह नहीं थी, खुले में कहां स्नान करेंगे, कहां खाएंगे। उनके लिए कोई ऐसी व्यवस्था नहीं थी। उन लोगों ने अपनी व्यवस्था खुद किस–किस तरह से बनाई और उसमें जो हमारे

बुजुर्ग किसान भाई, किसान साथी बहनों की शहादत हुई। आज उनको कह रहे हैं विजेन्द्र गुप्ता जी, जो गोली नहीं चली। मैं विजेन्द्र गुप्ता जी की इस बात का घोर विरोध करती हूं जो आपने कैसे कह दिया जो गोली नहीं चली। क्या गोली चलने को ही आप मौत कहते हैं क्या? जो गोली चलती तो मौत होती तो मौत मानते आप। सौरभ भाई ने आपसे कहा न जो चलने के लिए मैं भी कहती हूं एक किसान भाई के घर जिनके घर शहादत हुई है, किसान साथी की मौत हुई है उनके घर आप चलिए आपको पता चल जाएगा जो कैसे मौत को आप मौत मानते हैं। किस मौत को आप मौत मानते हैं। कोरोना से इतने साथी शहादत हुए हैं आप उसको भी कह दीजिएगा जो गोली चली क्या, गोली से कोई मौत हुई क्या। आप क्या चाहते हैं, कैसे मौत हो और ये इसमें आप क्या संदेश देना चाहते हैं देश को, क्या बताना चाहते हैं किस तरह का आप चैलेंज देना चाहते हैं? ये मैं नहीं जानती इसके पीछे आपका क्या मकसद है, मैं नहीं जानती विजेन्द्र गुप्ता जी। लेकिन जिस तरह से पूरे बार्डर पर जिस तरह से हमारे चारों ओर किसान साथी बार्डर पर बैठे हुए उन्होंने सर्दी बिताई, उन्होंने गर्मी बिताई, उन्होंने बारिश बिताई। सभी चीज को बिताकर के सारे मौसम को झेल के आज वो अपनी बातों को मनवाने के लिए और वो उनकी ही बात नहीं थी ये पूरे देश की आवाज थी। देश में छोटे–बड़े सभी किसान और हम सब जो हमारी आतिशी बहन ने कहा जो हम सब के टेबल पर कुछ साथी कहते हैं हम जूस ही पीते हैं सिर्फ, हम सिर्फ चना और गुड़ खाते हैं। उनको ये नहीं पता जो चना भी कौन उपजाता है, गुड़ भी कौन उपजाता है, जूस भी कौन उपजाता है वो शायद उनको नहीं पता। कुछ साथी कहते हैं ब्रेड और बटर खाते हैं अरे भई ब्रेड और बटर कहां से आता है। वो भी किसान भाइयों के मेहनत का ही फल होता है जो हम सब आकर टेबल सजाते हैं और हम सब खाते हैं। तो हम सभी साथी उन्हीं की मेहनत पर आज हम सब बैठे हैं और हम सब अपने–अपने घरों में अपने–अपने परिवार के साथ सुख शांति से बैठे हैं। एक बात अध्यक्ष जी जो बहुत ही पीड़ा देती है जो अभी वापस तो ले लिया गया बड़े धूमधाम से 19 नवम्बर को हमारे प्रधानमंत्री जी ने एक अनाउंस किया जो हम तीनों कानून वापस लेते हैं, हम क्षमा मांगते हैं। लेकिन तीनों कानून को तो वापस उन्होंने ले लिया। मैं कल ही पंजाब से आई हूं, पंजाब से जितने भी साथी धरने पर बैठे हैं उनके परिवार के ऊपर जो एफ.आई.आर. दर्ज हुई हैं। सभी

साथियों ने बहुत पीड़ा के साथ कहा जो पर्चे मैं नहीं समझती थी पर्चे किसको बोलते हैं। पंजाब में पर्चे एफ.आई.आर. को बोलते हैं। जो हम सब पर जो पर्चे दर्ज हुए हैं जो हम पर एफ.आई.आर. दर्ज हुई है वो उसके लिए उनका क्या सोचना है। उसके बारे में वो क्या सोचते हैं जो सभी जो वहां बैठा उस पर एफ.आई.आर. दर्ज, जो वहां दिखा टीवी में दिख गया उसको भी एफ.आई.आर. दर्ज कर दी।

माननीय अध्यक्षः बंदना जी कंक्लूड करिए प्लीज।

श्रीमती बंदना कुमारीः तो उन सब एफ.आई.आर. को क्या वापस लेंगे? 700 जो परिवार 700 से ऊपर भी हो सकते हैं उन परिवारों पर जो उनके घर के बुजुर्ग साथी या घर के जो जिम्मेदार साथी डेथ हुई। उनके लिए प्रधानमंत्री जी क्या कर रहे हैं वो मैं आपके माध्यम से प्रधानमंत्री जी से पूछना चाहती हूं क्योंकि आजकल उनका मीडिया शांत है 'पूछता है भारत' वो नहीं पूछ रहा है मोदी जी से जो क्या करेंगे उसके बारे में जो इतनी शहादत हुई है इतना नुकसान हुआ है। उसके बारे में वो उनसे कोई नहीं पूछता तो मैं आपके माध्यम से उनसे पूछना चाहती हूं जो उन सभी किसानों को जिनका नुकसान हुआ है जिनके ऊपर बड़े–बड़े एफ.आई.आर. दर्ज हुए हैं। जिनकी शहादत हुई है उन पर हमारे प्रधानमंत्री जी क्या कर रहे हैं और साथ ही माननीय मंत्री गोपाल राय जी ने जो संकल्प हमारे विधान सभा के अंदर सदन में प्रस्तुत किया है मैं उनका पुरजोर समर्थन करती हूं। जय हिन्द जय भारत।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद–धन्यवाद। सोमनाथ भारती जी, सोमनाथ जी 5 मिनट में पूरा करिए।

श्री सोमनाथ भारतीः अध्यक्ष महोदय, आपका बहुत–बहुत धन्यवाद। मैं आपके आदेश से खड़ा हुआ हूं माननीय गोपाल जी के संकल्प के समर्थन में। अध्यक्ष महोदय, साथियों ने बहुत सारी बातें रखी मैं इस बात को ऑन रिकार्ड लाना चाहता हूं कि हमारे नेता और दिल्ली के मुख्यमंत्री माननीय केजरीवाल जी के नेतृत्व में हर तरफ से डे वन से चाहे लोकसभा हो, राज्यसभा हो, दिल्ली की सड़क हो, दिल्ली का बार्डर हो किस प्रकार से केजरीवाल जी ने हर तरफ से किसानों का साथ दिया ये काबिले तारीफ है। ये जानते हुए भी कि उनका इस प्रकार से खुले में समर्थन और बेबाकी से

अपनी बात रखने का अंजाम मोदी सरकार बदला के रुप में लेगी, लिया। लेकिन मैं साथियों को कहना चाहता हूं कि ये बहुत बड़ी बात है कि केजरीवाल जी ने हर तरफ से संजय सिंह जी को कहा राज्यसभा में, भगवंत मान जी को कहा लोकसभा में, हम सब साथियों को बार–बार बार्डर पर भेजा, किसानों के पास भेजा। हम लोग सबकुछ हर तरफ से साथ दिया वो स्टेडियम नहीं दिया मोदी जी को कि भई किसानों को आप बंद कर सको। तो मैं केजरीवाल जी को आज इस बात की बधाई देता हूं कि जिस प्रकार से उन्होंने हर तरफ से आम आदमी पार्टी को इस काम पर लगाया, किसानों के संघर्ष में साथ खड़े हुए आज हम सब देख रहे हैं वो एक हिन्दी में स्टेटमेंट आता है झुकते हैं सब झुकाने वाला चाहिए। किसान साथियों ने पूरे देश के अंदर ऐसा हा–हाकार मचाया कि आखिरकार आना पड़ा और माफी मांगनी पड़ी। अब होता ये हैं कि भई इस पार्टी में एक ही आदमी है लोग मुझे पूछ रहे थे कि भई जब माननीय मोदी जी ने मन की बात में ये बात कही। मैंने कुछ भाजपा के साथियों को फोन किया कि भई किसी से सलाह–मशविरा भी हुआ आपका या नहीं हुआ। वो कहते हैं जी हमें कोई पता नहीं। हमको भी मन की बात से मालूम पड़ा। अब मातम छाया हुआ है भाजपा के साथी मैं उनको धन्यवाद देता हूं बधाई देता हूं कि भई इतनी ऐसे व्यक्ति के स्टेटमेंट्स को भी आप डिफेंड कर पाते हो पता नहीं कहां से आप ही जज्बा ला पाते हो। दुखी तो ये भी है ठीक कह रहे हैं और नौएडा में जो मीडिया चैनल है वहां सारे रो रहे हैं अब क्या करें हम। वो कह रहे हैं नहीं–नहीं ये तो बड़ी मतलब डिफेंड करते हुए भी वो दिख रहे हैं कि भई पता नहीं अब क्या होगा। मैं जो राइट बिंग है जो माइल्ड डिसेंट आया है उसको एक ने स्टेटमेंट निकाला कि भई टाइम्स ऑफ इंडिया में छपा था वो कि किस प्रकार से राइट बिंगर भी अब डिसेंट दे रहा है कि भई हम तो राजी नहीं है इस प्रकार से लेकिन उनका डिसेंट देखिए बड़े इन्ट्रेस्टिंग है। वो ऐडिटोरियल छपा स्वराज मैगजीन है टाइम्स ऑफ इंडिया का उसमें जगन्नाथन जी ने ये बात लिखी है कि "Narender Modi does not easily back off when confronted with difficult political challenges, but he has done so this time. Whether this will reduce him to a lame duck for the remaining half of his second term or not remains to be seen." अब ये भाजपा के कट्टर समर्थक भी कहने लगे हैं कि एक साल के जद्दोजहद के बाद इसमें कि भाजपा के नेताओं ने

कोई कसर नहीं छोड़ी किसानों को गाली देने में, आतंकवादी कहने में, खालिस्तानी कहने में और वो माननीय मोदी जी ने खुद पार्लियामेंट के अंदर ये बात कह दी कि आंदोलन जीवी जो परजीवी है आज किसानों ने सिद्ध कर दिया कि आंदोलन जीवी तो है लेकिन एक व्यक्ति और एक पार्टी चुनाव जीवी भी है। 2015 में लैंड रिफार्म से एक पहले वापस किया था फिर चुनाव आया। चूंकि माननीय अमित शाह जी ने कहा कि भई उत्तर प्रदेश नहीं जीतेंगे तो देश नहीं जीतेंगे 2024 में। तो हार जैसे दिखने लगी। ये किसान प्रेम नहीं है ये हार जो दिख रही है ये स्वप्रेम है। स्वप्रेम से इतने भरे हुए हैं मोदी जी और भाजपा पूरी पार्टी कि ये जो एक साल किसी ने मवाली कहा, किसी ने क्या–क्या नहीं कहा। वो जिसने गाड़ियां चलाई उत्तर प्रदेश में उसने कहा था एक सेकेंड में ठीक कर दूंगा। उसने कहा था जो इनके गृह राज्यमंत्री है अजय मिश्रा जी किसानों को धमकी दी थी कहा था एक सेकेंड में ठीक कर दूंगा। कहा था ये जानो मैं एमएलए, एमपी तो बाद में बना उसके पहले बहुत कुछ था। ऐसे व्यक्ति को गृह राज्यमंत्री बना रखा है और आज भी जिसके बेटे ने किसानों को कुचला वो आज भी गृह राज्यमंत्री है। तो भाजपा ने ये सिद्ध कर दिया कि किसान प्रेम में नहीं जो हार दिख रहा है उस कारण से इन्होंने ये बिल वापस लिया है।

माननीय अध्यक्षः अब कंक्लूड करिए सोमनाथ जी, कंक्लूड करिए प्लीज।

श्री सोमनाथ भारतीः अध्यक्ष महोदय, एक बात और मैं कहना चाहता हूं अभी पदमश्री दिया है एक बड़ी एक्ट्रेस है कंगना रनौत। क्या स्टेटमेंट दिया है एक स्टेटमेंट नहीं है उनके खिलाफ भाजपा के प्रधानमंत्री हो, चाहे गृह राज्यमंत्री हो, चाहे गृहमंत्री हो, चाहे भाजपा के नेता हो। कंगना रनौत की इतनी हिम्मत हो गई इस देश के अंदर कि सिखों को खालिस्तानी टेरेरिस्ट कह दिया। ऐसा damning statement किसानों के विरोध में सिखों के विरोध में और एक स्टेटमेंट नहीं है न तो कैप्टन अमरिन्दर साहब की तरफ से है, न कोई कांग्रेस की तरफ से है। संज्ञान किसने लिया इस बात का मैं बधाई देना चाहता हूं हमारी पार्टी के सदस्य है राघव चड्ढा जी। संज्ञान लिया आम आदमी पार्टी के नेता ने।

माननीय अध्यक्षः कंक्लूड करिए सोमनाथ जी हो गया प्लीज।

श्री सोमनाथ भारती: सिखाने की ठानी आम आदमी के पार्टी के नेता ने।

माननीय अध्यक्ष: प्लीज अब कंक्लूड करिए।

श्री सोमनाथ भारती: अब दिल्ली के सदन में जब बुलाया जाएगा जब पूछा जाएगा भई ये तो पदमश्री दे रहे हैं ऐसे लोगों को। लेकिन मैं अपनी पार्टी के साथी पर गर्व करता हूं कि उस साथी ने इस बात का संज्ञान लिया कि सिखों का इंसल्ट हम बर्दाश्त नहीं करेंगे। किसानों का इंसल्ट हम बर्दाश्त नहीं करेंगे। हमारी पार्टी सिखों और किसानों और पूरे देशवासियों के साथ पहले भी खड़ी थी आज भी खड़ी है अध्यक्ष महोदय। अध्यक्ष महोदय, जो एक साल लंबा चला ये 700 साथियों ने जान गंवाई।

माननीय अध्यक्ष: भई अब सोमनाथ जी क्ंक्ल्यूड करिए प्लीज।

श्री सोमनाथ भारती: बस एक लाइन।

माननीय अध्यक्ष: नहीं अब नहीं।

श्री सोमनाथ भारती: मैं ये देख रहा हूं कि जिस प्रकार से भाजपा के समय भी चूंकि शुरु में जब मैं थोड़ा आ रहा था तो देखा की भाजपा के साथी कहीं बैठने जा रहे थे तो मैंने पूछा की कहां बैठने जा रहे हो बोले की हम मूर्ति ढूंढ़ रहे हैं कहां बैठेंगे तो अगर गोडसे की मूर्ति होती तो वहां बैठते ये। अब मैं आपसे गुजारिश करता हूं कि भाजपा के साथियों का थोड़ा मन का भाव समझें एक गोडसे की मूर्ति लगवाएं कैंपस में जहां ये बैठ सकें गांधी जी के नीचे बैठने में इनको आपत्ति है। जो गांधीवादी पार्टी, गांधीवादी विचार ये कहां गांधी जी की मूर्ति के नीचे बैठ सकेंगे ये। मैं ये देख रहा हूं कि जो गोली की बात चल रही है तो गोडसेवादी पार्टी वो तो गोली की बात करेगी।

माननीय अध्यक्ष: अब क्ंक्ल्यूड हो गया सोमनाथ जी।

श्री सोमनाथ भारती: मैं माननीय गोपाल जी के स्टेटमेंट से जो उन्होंने रिजोल्यूशन रखा है इस सदन के पटल पर सहमत हूं और साथ में मांग करता हूं

कि जो एमएसपी, चूंकि जैसे विदड्रा किया इन्होंने गुरु पर्व के दिन, मैं गया था वहां बार्डर पर किसानों ने कहा जी विश्वास नहीं है हमें जब तक ये वापस नहीं होता।

माननीय अध्यक्षः भई सोमनाथ जी अब क्क्ल्यूड करिए आपको मैं बार–बार रिक्वेस्ट कर रहा हूं।

श्री सोमनाथ भारतीः देश के प्रधानमंत्री का स्टेटस ये हो गया किसान विश्वास नहीं कर रहा। एमएसपी पर कानून बनना चाहिए साथ में जितने 700 लोगों ने जानें गंवाई सबको एक करोड़ की राशि मिले परिवार को सहायता राशि मिले जो माननीय केजरीवाल जी ने शुरुआत की दिल्ली के अंदर। अध्यक्ष महोदय, जो नौकरी मिले परिवार में एक एक को और जो केसेज हुए है जो एफआईआर हुई हैं जो पर्चे दर्ज किये गये हैं उसको वापस किये जाएं। जब ये करेंगे तब जाकर घावों पर थोड़ा मरहम लगेगा आपका बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः श्रीमान दिलीप पांडे जी।

श्री दिलीप पाण्डेयः बहुत–बहुत धन्यवाद अध्यक्ष महोदय आज के इस विषय पर अपनी बात रखने का मौका देने के लिए। हमारे सदन के बहुत सारे सम्मानित साथियों ने आज के इस महत्वपूर्ण विषय पर तीनों काले कानूनों के अलग–अलग पहलूओं पर अपनी सार्थक बात रखी है। हकीकत ये है अध्यक्ष महोदय की इन तीनों कानूनों की वापसी की घोषणा ही सीधे–सीधे सत्ता के अहंकार की हार है। मां भारती के सच्चे सपूतों के साहस की जीत है और मैं बहुत ज्यादा कानून और उसकी डिटेल्स पर नहीं जाउंगा लेकिन बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण रहा, दुखद रहा कि कुतर्क प्रस्तुत किए गए आज इस सदन के पटल पर। औसतन प्रतिदिन एक साल हुआ इस आंदोलन को औसतन प्रतिदिन दो किसानों की जान गई है और डिफेंड करने की बेशर्मी की सीमा ये है कि कहा जा रहा है कि गोली से तो नहीं मरे फिर तो सारे अंग्रेज जिन्होंने हिंदुस्तानियों की हत्या की वो सब यह कहकर बच सकते हैं कोई लाठी से मरा होगा तो कह देगा गोली से नहीं मरे, कोई गोली से मरा तो कह देगा न्यूक्लियर बम से नहीं मरे कुतर्क की पराकाष्ठा देखी आपने। कानून भी ऐसा बनाया एसडीएम का वीडियो वायरल हुआ हरियाणा के एसडीएम का जो लाठियों से आंदोलन की रीढ़ को तोड़ने के लिए

पुलिस वालों को आदेश देता हुआ दिखा और यही कानून वैसे ही डीएम एसडीएम को इसमें न्यायाधीश की भूमिका में रखता है ऐसा कानून बनाया है। आप देखिए बनाने वाले लोग कितने तेजस्वी हैं। महोदय, मैं तो आभार व्यक्त करना चाहूंगा इस पूरे आंदोलन में दिल्ली के माननीय यशस्वी और देश के सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री माननीय अरविंद केजरीवाल जी का कि जिन्होंने केन्द्र की सरकार के दबाव में आकर अपने स्टेडियम को जेल नहीं बनने दिया। जिन्होंने जब सरकारों ने बिजली देना बंद कर दिया तो बिजली की सप्लाई करी। पानी की मुसीबत खड़ी करी किसानों के सामने तो पानी पहुंचाया। इस आंदोलन को जिंदा रखने के लिए किसानों का साहस काफी था लेकिन कहीं कोई कमी रही तो वो दिल्ली की सरकार की ओर से उसे पूरा किया गया। माननीय मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी की तरफ से, विधायकों की तरफ से पूरा सहयोग किया गया मैं इसके लिए हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं धन्यवाद करता हूं महोदय। वहीं दूसरी ओर मैं सोच रहा था कि केन्द्र की सरकार के मंत्री लोग भोजन कैसे करते होंगे रात में। कोई आतंकवादी बता रहा है किसानों को, कोई खालिस्तानी बता रहा है किसानों को, कोई आंदोलनजीवी कह रहा है उन किसानों को तो उनके द्वारा उगाया गया अनाज इनके पेट में जगह कैसे पा रहा है। महोदय मैं बहुत संक्षेप में हम सबकी सदन की जो मांग है वो रखना चाहूंगा कि 700 से भी अधिक जो किसान शहीद हुए हैं उनके परिवारों को एक करोड़ रुपये की सम्मान राशि, जीवन–यापन सम्मान जनक तरीके से हो सके इसके लिए नौकरी की व्यवस्था की जाए और किसानों की ये मांग कि जब तक ये बिल सर्वोच्च सदन से पास नहीं होते हम वहां बैठे रहेंगे हम इस मांग के भी साथ हैं और किसानों के सम्मान में कभी–कभी लगता है सत्ता को कि वो सबसे शक्तिशाली है, सबसे हिम्मती है किसानों के सम्मान में अपनी लिखी हुई एक छोटी सी कविता पढ़कर अपनी बात को खत्म करूंगा कि

सबसे हिम्मती कौन है

सबसे हिम्मती वो नहीं है जो ताकतवर है,

सबसे हिम्मती वो नहीं है जो ताकतवर है

जिसके पास गुंडों की भरमार है, जिसकी सरकार है,
जो पैसे वाला है या जिसका सिस्टम में बोलबाला है
सबसे हिम्मती वो नहीं है।
सबसे हिम्मती होता है वो गरीब किसान
जिसे डर है बारिश से, बर्फ से,
या जिसे डर है कि सूखा न पड़ जाए कहीं।
जिसे डर है बैंक से, सूदखोरों से,
फसलखोर कीड़ों से, जानवरों से,
खाद के लिए मची हाहाकार से,
जिसे डर है खाद के लिए मची हाहाकार से
लाठियों की बौछार से, गांव के जमींदार से,
अपनी चुनी हुई सरकार से,
किस्मत की मार से, बेटी के ब्याह से,
जिसे डर है बेटी के ब्याह से,
मां की झुकती कमर से और बाप के घुटने से निकली आह से,
बेटे के खिलौनों की चाह से और बीवी की परवाह से,
जिसे डर है फिर भी वो इन सबसे नहीं डरता,
फिर भी वो इन सबसे नहीं डरता
धरती का सीना चीरता, बीज बोता, अनाज उगाता, दुनिया का पेट भर जाता है',

यह गरीब किसान सबसे हिम्मती है,

इसकी हिम्मत से ही हमारी सांस,

सरकार और ये दुनिया चलती है।

मैं इस सदन की ओर से देश के मां भारती के सपूतों को मैं सलाम करता हूं, उनकी हिम्मत को सलाम करता हूं और उम्मीद करता हूं कि उनके साहस से ये दुनिया आगे भी चलती रहेगी, बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः श्रीमान बिधूड़ी जी।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी (माननीय नेता प्रतिपक्ष): आदरणीय अध्यक्ष महोदय, दिल्ली के माननीय विकास मंत्री श्री गोपाल राय जी जो प्रस्ताव लेकर आए हैं उसकी आवश्यकता नहीं थी। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने तीनों कृषि कानूनों को वापस लेने की घोषणा कर दी। मुझे बहुत अच्छा लगता कि आज ये सदन दिल्ली में बढ़ते हुए प्रदूषण पर नई शराब नीति जिसका दिल्ली के लोग गली–गली में विरोध कर रहे हैं। पेट्रोल और डीजल पर माननीय मुख्यमंत्री जी की सरकार टैक्स कम करे। दिल्ली के किसानों की जो दुर्दशा हो गई है यदि उस पर आज ये सदन चर्चा करता तो मुझे बहुत अच्छा लगता। माननीय अध्यक्ष जी, दुनिया में ऐसा कोई दूसरा उदाहरण नहीं है कि कोई सरकार देश के लगभग 11 करोड़ किसानों को या उनके खाते में 93 हजार करोड़ रुपया डाल दे। आदरणीय अध्यक्ष जी, देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को मैं इस सदन में बहुत–बहुत बधाई देना चाहता हूं कि उनके कुशल नेतृत्व में जहां कृषि का उत्पादन बढ़ा पिछले 7 सालों में लगभग कृषि का उत्पादन ढ़ाई गुणा बढ़ गया। किसान जो फसल पैदा करता है उसकी कीमतों में ऐतिहासिक बढ़ोत्तरी हुई है चाहे वो धान है चाहे गेहूं है। धान और गेहूं के ऊपर 50 परसेंट से ज्यादा बढ़ोत्तरी हुई। आदरणीय अध्यक्ष जी क्योंकि यहां आंकड़े भी पेश किये जा रहे थे मैं देश में जो फसलों के दाम जो बढ़े हैं आदरणीय मोदी जी की सरकार के रहते हुए गेहूं पर 41 परसेंट बढ़े हैं, धान पर 43 परसेंट बढ़े हैं और मसूर की दाल पर 73 परसेंट बढ़े हैं, अरहर पर 40 परसेंट बढ़े हैं,

सरसों पर 52 परसेंट बढ़े हैं और चना पर 65 परसेंट की बढ़ोत्तरी हुई है, मूंगफली पर 32 परसेंट की बढ़ोत्तरी हुई है। अध्यक्ष जी मैंने कहा कि रिकार्ड प्रिक्योरमेंट हुई है उसकी मैंने चर्चा की अब मैं आंकड़ों के द्वारा बताना चाहता हूं इस माननीय सदन को और इस सदन के सभी माननीय सदस्यों को कि गेहूं की खरीद में 36 प्रतिशत बढ़ोत्तरी हुई है, धान की खरीद में 114 प्रतिशत बढ़ोत्तरी हुई है, उड़द उसमें 294 फीसदी की बढ़ोत्तरी हुई है, मूंग में भी भारी बढ़ोत्तरी हुई है, अरहर में आपको हैरानी होगी यह सदन रिकार्ड चैक कर सकता है 994 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है क्या इस सदन को इस देश के यशस्वी प्रधानमंत्री को बधाई देनी चाहिए या नहीं देनी चाहिए। आदरणीय अध्यक्ष जी, सरसों और जो चना है उसकी जो खरीद हुई है उसके बारे में मैंने चर्चा की है जो रकम खर्च की गई है जो भी खरीद हुई है। गेहूं की जो खरीद हुई है पहले से 85 परसेंट ज्यादा धनराशि मोदी जी की सरकार ने गेहूं की खरीद पर खर्च की है। धान पर 192 प्रतिशत और इसी तरह से अरहर पर 1371 प्रतिशत बढ़ोत्तरी हुई है। सरसों और चना की जहां तक बात है उसमें भी बड़ी भारी बढ़ोत्तरी हुई है। अध्यक्ष जी, मैं एक बात जरूर कहना चाहता हूं कि हम दाल और तेल आयात करते उसके ऊपर हमारा बहुत सारा फोरन एक्सचेंज बर्बाद होता है क्या इस सदन को इस देश के प्रधानमंत्री को बधाई नहीं देनी चाहिए कि हम जो दालें आयात करते थे, तेल आयात करते थे अब पहले के बनिस्बत बहुत कम हो गया है और आदरणीय अध्यक्ष जी मैं इस ऑनरेबल हाउस को बताना चाहता हूं कि दलहन की खरीद में 4689 परसेंट बढ़ोत्तरी हुई है उसी की वजह से आयात कम हुआ है। आदरणीय अध्यक्ष जी, तिलहन पर 803 परसेंट की बढ़ोत्तरी हुई है तो क्या इस सदन को देश के प्रधानमंत्री को बधाई देनी चाहिए या नहीं देनी चाहिए। आदरणीय अध्यक्ष जी, जैसा की मैंने शुरु में कहा कि देश के प्रधानमंत्री ने देश के लगभग 11 करोड़ किसानों के खाते में हर 4 महीने में 2–2 हजार रुपये डाले हैं और यह रकम लगभग 93 हजार करोड़ रुपये बनती है देश के प्रधानमंत्री का किसानों के प्रति और इस देश के गरीबों के प्रति जरा प्रेम देखिए एक तरफ उनकी लीडरशिप में उत्पादन बढ़ता है, फसलों की अच्छी कीमत मिलती है और दूसरी तरफ इस देश के किसानों को देश के प्रधानमंत्री ने जो सुविधा दी है उसकी मैंने बात की है इस देश के 80 करोड़ गरीबों को नेशनल फूड सिक्योरिटी एक्ट के तहत 4 किलो गेहूं 2 रुपये प्रति किलो

के हिसाब से और 1 किलो चावल 3 रुपये प्रति किलो के हिसाब से और कोरोना काल में 4 किलो गेहूं मुफ्त और 1 किलो चावल मुफ्त देश के प्रधानमंत्री ने कम से कम ढ़ाई लाख करोड़ रुपया देश के गरीबों के लिए मुफ्त राशन पर खर्च किया है तो ये सदन इसके लिए देश के प्रधानमंत्री को बधाई दे कि उन्होंने किसानों की भी चिंता की है और गरीब की भी चिंता की है ये है देश के प्रधानमंत्री का ये है जादू जो उन्होंने किया है।

माननीय अध्यक्षः बहुत–बहुत धन्यवाद आप कंक्ल्यूड करिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः मैं खत्म कर रहा हूं अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः खत्म करो प्लीज।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः अध्यक्ष जी, मैं खत्म कर रहा हूं। मैं ये जरूर चाहूंगा दिल्ली के माननीय मुख्यमंत्री जी से कि अनेकों जो किसानों के हित में जो योजनाएं प्रधानमंत्री जी ने बनाई हैं उनको दिल्ली में लागू किया जाए। आदरणीय अध्यक्ष जी, माननीय मुख्यमंत्री जी यहां बैठे हुए हैं उन्होंने घोषणा की थी 2018 में कि यदि आज मोदी जी की सरकार ने 2000 रुपये प्रति क्विंटल के हिसाब से गेहूं का दाम तय किया है तो उनकी सरकार 50 परसेंट एक्स्ट्रा देगी मतलब 1000 रुपया प्रति क्विंटल के हिसाब से दिल्ली के किसानों को देगी ये घोषणा माननीय गोपाल राय जी ने भी की, बताएं कि 4 साल में क्या ये सरकार किसी एक किसान को एक पैसा भी 2000 प्रति क्विंटल के हिसाब के साथ एक्स्ट्रा दे पाई क्या इनको ये अपना वादा पूरा करना चाहिए।

माननीय अध्यक्षः कंक्ल्यूड करिए बिधूड़ी जी प्लीज हो गया 12 मिनट हो गए हैं।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः गांवों का लाल डोरा नहीं बढ़ा।

माननीय अध्यक्षः नहीं बिधूड़ी जी अब हो गया।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः बिजली के नाम पर किसानों को लूटा जा रहा है।

ट्रैक्टर को कमर्शियल व्हिकल डिक्लेयर कर दिया गया। दिल्ली के सैकड़ों गांवों की जमीन, खेती–बाड़ी की जमीन बरसात के पानी में डूब गई और ये सरकार दिल्ली के किसानों को एक पाई पैसा अभी तक आर्थिक सहायता नहीं दे पाई क्या इस सदन में चर्चा होनी चाहिए या नहीं होनी चाहिए।

माननीय अध्यक्षः 12 मिनट हो गए हैं, बिधूड़ी जी अब नहीं।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः दिल्ली के किसानों की जो दुर्दशा की है दिल्ली की सरकार ने आज इस हाउस में अध्यक्ष जी आप हमको चर्चा करने दीजिए।

माननीय अध्यक्षः नहीं अब बैठिये समय हो गया।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः इस हाउस में चर्चा हो दिल्ली के मुद्दों को लेकर।

माननीय अध्यक्षः सुन लिया पूरा सुन लिया मैंने जितना समय अलाऊड था।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः इस हाउस में आप लीडर आफ अपोजिशन को 10 मिनट नहीं दे रहे हैं।

माननीय अध्यक्षः मैं 12 मिनट दे चुका हूं सभी सदस्यों को 5 मिनट दिये हैं इनको 12 मिनट दिये हैं। नहीं और नहीं बिधूड़ी जी। मैं और नहीं आपने अपनी सभी बातें रख दी हैं।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः आदरणीय अध्यक्ष जी, कृषि यंत्रों पर सब्सिडी दी जाती है प्रत्येक राज्य में।

माननीय अध्यक्षः मैं आग्रह कर रहा हूं।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः दिल्ली एक ऐसा राज्य है जहां कृषि यंत्रों पर सब्सिडी नहीं दी जाती। किसान का मुआवजा बढ़ाया नहीं गया। किसान की जो जमीन एक्वायर होती है उसके बदले में alternative residential plot नहीं दिया जा रहा। किसान यदि उसकी मृत्यु हो जाए तो उसके बच्चों के नाम पर जमीन ट्रांसफर नहीं हो रही है इससे बड़ा पाप क्या हो सकता है।

माननीय अध्यक्षः बिधूड़ी जी बैठिए धन्यवाद–धन्यवाद।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः अरे आपने तो किसानों की जमीन आज कौड़ियों के दाम पर लूटी जा रही है।

माननीय अध्यक्षः बैठिए, अब बैठिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः पूरे देश में मुआवजे की राशि बढ़ी।

माननीय अध्यक्षः किसानों की जमीन कौन लेता है सबको मालूम है।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः पूछना चाहते हो दिल्ली में एक भी किसान की मृत्यु नहीं हुई और दिल्ली के किसान।

माननीय अध्यक्षः ये किसानों के विषय में गलत बयानी कर रहे हैं।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः नहीं अब नहीं।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः अध्यक्ष जी, सवाल किया गया है जवाब सुनो।

माननीय अध्यक्षः नहीं अब नहीं।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः जवाब सुनने की हिम्मत रखो।

माननीय अध्यक्षः किसानों की जमीन डीडीए एक्वायर करती है।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः जवाब सुनो, अध्यक्ष जी जवाब सुनो, दिल्ली के किसान इस आंदोलन में शामिल नहीं हुए। मुख्यमंत्री जी ने अपील की दिल्ली बंद करने की दिल्ली बंद नहीं हुई।

माननीय अध्यक्षः ठीक है हो गया।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः दिल्ली के किसानों ने मोदी जी में अपनी आस्था व्यक्त की।

माननीय अध्यक्षः ठीक है अच्छी बात है बैठिए–बैठिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः मैं दिल्ली के किसानों को बहुत बधाई देना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्षः बस धन्यवाद, बहुत–बहुत धन्यवाद हो गया। हो गया बिधूड़ी जी अब हो गया। माननीय उप–मुख्यमंत्री श्रीमान मनीष सिसोदिया जी।

.........व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः श्रीमान मनीष सिसोदिया जी माननीय उप–मुख्यमंत्री।

माननीय उप–मुख्यमंत्री (श्री मनीष सिसोदिया): बहुत–बहुत धन्यवाद अध्यक्ष महोदय, मैं आज सबसे पहले तो तमाम देशवासियों को इस सदन के माध्यम से संविधान दिवस की बहुत–बहुत शुभकामनाएं देना चाहता हूं क्योंकि इस संविधान की बदौलत ही यह व्यवस्थाएं हैं, यहां बैठे लोग हैं, यहां बैठे लोगों के अधिकार हैं और इस सदन के बाहर देश के तमाम लोगों के अधिकार हैं और उनके प्रति व्यवस्थाएं हैं। इस वक्त मैं बाबा साहब को भी याद करना चाहूंगा जिन्होंने इस देश की डायवरसिटी को समझते हुए economic social diversity को समझते हुए एक ऐसे संविधान की रचना की जिसमें सबके हितों का समावेश हो सके। ये आसान काम नहीं था लेकिन उनके दूरदर्शी व्यक्तित्व को उनके अनुभव को और अपनी पीड़ा को जिस तरह से उन्होंने देश की समस्याओं के समाधान में बदला, आने वाली पीढ़ियों के समाधान में बदला आज संविधान दिवस के अवसर पर उनको मैं जरूर नमन करना चाहूंगा। आज ही आम आदमी पार्टी का स्थापना दिवस भी है। तो मैं सभी आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं को और उन कार्यकर्ताओं की मेहनत के बदौलत यहां बैठे एक–एक सदस्य को बधाई देना चाहता हूं। बार–बार कहा जाता है आम आदमी पार्टी आन्दोलनजीवी है ।अभी भी विपक्ष के कुछ साथी भी कह रहे थे बिल्कुल हमें आन्दोलनकारी होने पर गर्व है। हमें गर्व है कि हम आन्दोलन की कोख से निकले हैं। हमें गर्व है कि हम आन्दोलन की एक आवाज हैं। हर उस आदमी की आवाज है, हर उस आदमी के लिए हम एक आन्दोलन हैं जो अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देना चाहता है, जो महंगी बिजली से दुखी है, जो पुलिस की लाठी से दुखी है, जो

भ्रष्टाचार से दुखी है, जो राजनैतिक निष्क्रियता भ्रष्टाचार और इन सबसे आगे से जा चुका है। हम हर उस आदमी के लिए आन्दोलन है। हम आदमी पार्टी के रूप में पार्टी नहीं है, हम आन्दोलन है, हमें इस बात पर गर्व है। किसी को प्रोब्लम हो तो वो जाने, किसी की नींद उड़ रही हो तो वो जाने। अध्यक्ष महोदय, आज का ये सदन विशेष रूप से किसान आन्दोलन की जीत और उसके एक साल पूरा होने के मौके पर आहूत किया गया है। मैं इस सदन के माध्यम से इस देश की किसान शक्ति को नमन करना चाहता हूं, उनको बधाई देना चाहता हूं, जिस तरह से उन्होंने इस देश की आने वाली पीढ़ियों के लिए एक शान्तिपूर्ण आन्दोलन का रास्ता रखा। उसका एक प्रेरणा पूर्ण एक साल का पूरे एक वर्ष का खाका रखा कि सत्ता को जब अहंकार हो जाए और सत्ता चंद लोगों के फायदे के लिए देश के तमाम लोगों को और खासतौर से किसानों, मजदूरों, गरीबों को कुचलने का प्रयास करें तो किस तरह से शान्तिपूर्ण आन्दोलन के जरिए सत्ता को झुकाया जा सकता है। मुझे लगता है देश के इतिहास में गांधी जी के बाद पहला ऐसा एक आन्दोलन चला, हमेशा बहुत–बहुत आन्दोलन हुए, छोटे समय के लिए हुए, छोटे–छोटे सैक्टर में हुए जो देश भर में एक शान्तिपूण ी और सफल आन्दोलन के रूप में जिसको याद किया जाएगा किसानों की मांग के उसमें। मैं उनका इसके लिए धन्यवाद भी करना चाहता हूं कि उन्होंने वापिस लोकतंत्र में लोकतान्त्रिक मूल्यों में लोकतंत्र में उठने वाली आवाजों की औकात को स्थापित किया है, उसके लिए मैं उनको धन्यवाद करना चाहता हूं। अध्यक्ष महोदय, किसान आन्दोलन का एक साल का इतिहास देश के लोकतंत्र के इतिहास में एक नया अध्याय लिख गया है और इसको आने वाली पीढ़ियों को पढ़ाया जाना चाहिए कि किस तरह से धैर्य के साथ, किस तरह से तमाम तरह के आरोपों के साथ तमाम तरह के अत्याचारों के साथ, तमाम तरह के लांछनों के बावजूद किसान ने बहुत धैर्य के साथ इस आन्दोलन को किया। इसको आने वाली पीढ़ियों को पढ़ाया जाना चाहिए इस आन्दोलन को। इस आन्दोलन की आवाज पूरे देश में पहुंची, पूरी दुनिया में पहुंची। देश भर के किसानों को इसने एकजुट किया और आन्दोलन शुरू होने के कुछ दिन के अंदर ही इसने एक जुट कर लिया था। लेकिन अफसोस कि इस देश के किसानों की आवाज को प्रधानमंत्री के कार्यालयों तक और प्रधानमंत्री के दफ्तर में बैठे हुए माननीय प्रधानमंत्री जी और उनके तमाम हुकमकारों तक पहुंचने में एक

साल लग गया, ये भी याद किया जाएगा। जब ये याद किया जाएगा कि इस देश के किसान शान्तिपूर्ण तरीके से देश की राजधानी के बार्डर पर बैठे रहे थे तो ये भी याद किया जाएगा कि सत्ता में बैठे प्रधान मंत्री जी किसानों की मांग को एक साल तक अनसुना करते रहे और उनके विरुद्ध तरह–तरह के षडयंत्र रचाए जाते रहे। देश के पुराने सौ साल के इतिहास में देखें तो अध्यक्ष महोदय, बहुत आन्दोलन हुए हैं। देश में किसानों के बहुत आन्दोलन हुए हैं। लेकिन जिस तरह से पूरे देश के किसानों को एक साथ जोड़ने का काम इस आन्दोलन ने किया मैं उसके लिए किसान आन्दोलनकारियों को बहुत–बहुत बधाई देना चाहता हूं। सरकार ने इसको बहुत हल्के में लिया था। इसीलिए उन्होंने ये योजना बनाई थी कि जब किसान दिल्ली में आएंगें, दिल्ली में जन्तर–मन्तर पर अपनी आवाज उठाने के लिए आ रहा था, सरकार को अपनी आवाज सुनाने के लिए आ रहा था तो उन्होंने योजना बनाई भारत सरकार ने, केन्द्र में बैठी हुई सरकार ने इनकी सरकार ने कि निपट लेंगे दिल्ली में आने दो, दिल्ली पुलिस तो हमारे पास है। लेकिन इनको ये नहीं पता था कि इस दिल्ली में अरविंद केजरीवाल जी भी बैठे हैं वो भूल गए थे। जब इन्होंने साजिशें रची कि किसानों को स्टेडियम्स को जेल में तबदील करके, बंद करके किसान आन्दोलन को कुचल दिया जाए, उस वक्त केजरीवाल जी ने किसानों के साथ खड़े होकर इस दिल्ली के स्टेडियम्स को जेल में नहीं बदलने का जो साहसी फैसला लिया उसने किसान आन्दोलन को एक बहुत मजबूती दी। मैं उसके लिए अपनी दिल्ली सरकार को और मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी को भी किसानों के साथ बहुत मजबूती से खड़े रहने के लिए बधाई देना चाहता हूं। किसान पूरी तरह से मानसिक रूप से तैयार होकर आए थे क्योंकि जिस तरह का एक साल का आन्दोलन चला। इसमें कोविड की महामारी भी आई, इस दौरान सर्दी आई, गर्मी आई, इस दौरान डेंगू जैसी चीजें आई और जिस जगह पर वो बैठे, जिस बार्डर पर वो बैठे दोनों बार्डर्स पर अगर देखें, दोनों तीनों बॉर्डर्स में से खासतौर से दो बॉडर्स पर जिस तरह के कूड़े के पहाड़ इक्कट्ठे किये गए हैं वहां कोई आदमी जाकर खड़ा होता है तो उस कूड़े की बदबू वहां उड़ रहे चील, कौऐ वहां देखकर कोई भी आदमी बैठने से पहले सौ बार सोचता है। लेकिन किसान हिम्मत के साथ वहां पर जाकर बैठा, उसके लिए उस किसान को मैं नमन करता हूं। उस किसान को मैं सलाम करता हूं अध्यक्ष महोदय। उस

बदबू के बीच में और उस कूड़े कचरे के दायरे में जाकर वो बैठा। अध्यक्ष महोदय, जिस तरह से किसान आन्दोलन चला उसमें देश के नौजवान भी शामिल हुए, देश का बौद्धिक वर्ग शामिल हुआ, शिक्षक शामिल हुए, छात्र इसमें शामिल हुए। जिन लोगों ने इस किसान आन्दोलन को सफल बनाने में उनका साथ दिया मैं उनको भी धन्यवाद देना चाहता हूं लेकिन साथ–साथ मुख्य मंत्री जी बोले उससे पहले एक चीज मैं इस सदन पर रखना चाहता हूं कि जब ये रिकार्ड में लिया जाए कि किसान आन्दोलन सफल रहा, देश के तमाम सोचने वाले लोग, समझ रखने वाले लोग, रोटी खाने वाले लोग सबने उनको समर्थन किया उस वक्त देश के प्रधान मंत्री और भारतीय जनता पार्टी केवल और केवल किसान आन्दोलन को विदेशों से प्रायोजित आतंकवादियों का आन्दोलन, खालिस्तानियों का आन्दोलन, किसान तो है ही नहीं ये, कुछ पूंजीपतियों के द्वारा समर्थित आन्दोलन है, सरकार के विरोधी आन्दोलन है, इस तरह के प्रसारित करने पर लगे रहे। हालात तो तब और ज्यादा शर्मनाक थे और उसको मैं रिकार्ड पर देना चाहता हूं कि जब राज्यसभा में सभापति ने जकार्ता में हुई हवाई दुर्घटना में मारे गए 06 जनवरी, 2021 को जकार्ता में हवाई दुर्घटना हुई वहां पर 62 लोग मारे गए, उनको श्रद्धांजलि दी इस देश की राज्यसभा ने लेकिन 700 किसानों का जिक्र तक नहीं किया इस देश की राज्यसभा ने क्योंकि वहां पर किसान उसमें मारे गए। अध्यक्ष महोदय, भारतीय जनता पार्टी के लीडर्स ने किसानों के खिलाफ क्या–क्या नहीं बोला, क्या–क्या अपशब्द नहीं कहे, क्या–क्या उनके ऊपर लांछन नहीं लगाए लेकिन उसके बावजूद किसान जिस मानसिक तैयारी के साथ आए थे, मुझे लगता है हमको इन किसानों से धैर्य सीखना चाहिए। सम्मान सीखना चाहिए कि लोकतंत्र में जब सामने वाला बहुत आरोप लगा रहा हो तो किस तरह से शान्ति, गरिमा के साथ, विद्वता के साथ में बैठकर इसकी लड़ाई लड़ी जा सकती है। देश के कृषि मंत्री ने तो एक चिट्ठी लिखी आन्दोलन के 22वें दिन। उन्होंने तो किसानों के नाम लिखा, उसमें लिखा कि जिन लोगों ने 1962 के युद्ध में देश की विचारधारा का विरोध किया था वही किसानों को गुमराह कर रहे हैं। क्या–क्या बातें कही उन्होंने। प्रधान मंत्री जी ने खुद कहा कि किसान आन्दोलनजीवी हैं और विदेशी विध्वंसकारी विचारधारा से प्रेरित होकर यहां पर बैठे हुए हैं, प्रधान मंत्री जी ने कहा। उन्होंने बता दिया कि हम.... इस तरह से केन्द्र सरकार ने ऑफिशियली करीब सौ करोड़ रूपये का बजट

खर्च किया किसान आन्दोलन को बदनाम करने के लिए। भारतीय जनता पार्टी ने जो किया वो तो किया ही किया, केन्द्र सरकार ने टैक्स पेयर्स के खाते से करीब सौ करोड़ रूपये का खर्च किया विज्ञापनों पर। टीवी पर विज्ञापन चलवाए गए, अखबारों में विज्ञापन छापे गए। इस बात के विज्ञापन किये गए कि किसान आन्दोलन विदेशियों द्वारा चलाया जा रहा है, ये किसान आन्दोलन देश के खिलाफ है। केन्द्र सरकार ने यह किया ये भी बात रिकार्ड में रहनी चाहिए। अध्यक्ष महोदय, मैं अंत में ये ही कहना चाहता हूं कि किसान आन्दोलन को बहुत–बहुत धन्यवाद। किसान नेताओं को बहुत–बहुत धन्यवाद देते हुए कि बात सिर्फ किसान की नहीं है, बात लोकतंत्र की है। बात हम सबकी अगली पीढ़ियों की है, उनकी उम्मीदों की है। लोकतंत्र से जो उम्मीद रखते हैं उसकी जीत का ये आन्दोलन था, उसकी जीत के लिए मैं और उस आस्था को विश्वास को लोकतंत्र में कायम करने के लिए मैं किसानों को, किसान संगठनों को, किसान कार्यकर्ताओं को सबको बहुत–बहुत धन्यवाद देता हूं कि आपने हम सबका भरोसा जिन्दा रखा है। आप सबने हम सबके अंदर उम्मीद जगा कर रखी है। मैं माननीय मंत्री गोपालराय जी के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं। बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः माननीय मुख्य मंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी।

माननीय मुख्यमंत्री (श्री अरविंद केजरीवाल) : अध्यक्ष महोदय, आज ही से पूरे एक साल पहले किसान आन्दोलन शुरू हुआ था। केन्द्र सरकार द्वारा जो तीन काले कानून पारित किये गए बिना किसानों से पूछे, बिना जनता से पूछे, अपने अंहकार में। लोकसभा और राज्यसभा के अंदर जो इनका बहुमत है लोकसभा में बहुमत है, राज्यसभा में भी काफी सीट हैं, उसका जो इनका अंहकार है कि हम तो कुछ भी पास करा लेंगे उस अंहकार रहते जो इन्होंने ये काले कानून पास किये। इनको लगता था कि किसान आएंगे थोड़े दिन आन्दोलन करेंगे, चीखेंगे, चिल्लाऐंगे फिर घर चले जाऐंगे। पिछले साल 26 नवम्बर को यह आन्दोलन दिल्ली और दिल्ली के बार्डर पर शुरू हुआ। आज पूरा एक साल हो गया और उनका आन्दोलन सफल रहा। सबसे पहले मैं देश के किसानों को तहे दिल से बहुत–बहुत बधाई देना चाहता हूं। इस आन्दोलन में सब लोग शामिल हुए। कोई प्रत्यक्ष रूप से, कोई अपने–अपने घर

से दुआऐं भेज रहे थे। जो भी इस देश का भला चाहते हैं सबने इस आन्दोलन का समर्थन किया। महिलाओं ने, व्यापारियों ने, स्टूडेंट्स ने, पत्रकारों ने, बुजूर्गो ने, यूथ ने, बच्चों ने, इस धर्म के लोगों ने, उस धर्म के लोगों ने, इस जात के लोगों ने, उस जात के लोगों ने सब लोगों ने इसका समर्थन किया। सबने दुआऐं दी इसकी सफलता के लिए। सभी देशवासियों को मैं बधाई देना चाहता हूं। खास कर मैं पंजाब के किसानों को बधाई देना चाहता हूं क्योंकि उन लोगों ने इस पूरे आन्दोलन की अगुवाई की। उन्होंने इस पूरे आन्दोलन की लीडरशिप की। जिस तरह से बहुत बड़े स्तर के ऊपर ट्रैक्टर–ट्रॉली पंजाब से आए, यहां पर आकर बैठ गए। पंजाब की इन महिलाओं को मैं बधाई देना चाहता हूं जो कंधे से कंधा मिलाकर यहां पर कई दिनों तक इस आन्दोलन में बार्डर के ऊपर उनके साथ बैठी हुई थी। सर्दी में, गर्मी में कितनी बाधाएं आई इनको, कितनी इन्होंने तकलीफें सही। मतलब मेरे को याद है पिछली बार हम अभी तो उतनी सर्दी नहीं पड़ी है लेकिन पिछली साल जब कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी हम सोचा करते थे कि हम अपने घर में इतने सारे हीटर लगाकर बैठे हैं और इतनी रजाई के अंदर बैठे हैं ये किसान बार्डर के ऊपर पता नहीं कैसे बैठे होंगे, कैसे सो रहे होंगे खुले आसमान के नीचे। फिर गर्मी आई, डेंगू आया, कोरोना आया सारी बाधाओं को वो करते हुए अंत–पंत में किसानों की जीत हुई तीनों कानूनों को वापिस लिया गया। मैं समझता हूं कि शायद ये इन्सान के इतिहास में, दुनिया के इतिहास में सबसे लम्बा आन्दोलन था। मैं और कोई ऐसा आन्दोलन नहीं जानता। भारत में 1907 में एक आन्दोलन हुआ था वो भी किसानों का आन्दोलन था। पंजाब के किसानों का आन्दोलन था और वो अंग्रेजों के खिलाफ हुआ था वो नौ महीने चला था, 1907 में हुआ था। उसके बाद अब किसानों को आन्दोलन करना पड़ा अपनी सरकार के, चुनी हुई सरकार के खिलाफ ये बारह महीने चला। दुनिया का सबसे लम्बा आन्दोलन। सबसे अहिंसात्मक आन्दोलन, संयमित आन्दोलन। सत्ता पक्ष ने इनको भड़काने में कोई कसर नहीं छोड़ी। षड़यंत्र करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। गालियां देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उनको कुचला गया। लखीमपुर का जो इन्सीडेंट है बहुत ही दर्दनाक इन्सीडेंट है कि सरेआम सडक के ऊपर इतने लोगों के सामने हजारों लोगों के सामने किसानों को गाड़ी से कुचल दिया गया और इतनी हिम्मत हो गई कि अगर सुप्रीम कोर्ट इन्टरवीन नही करता तो ये उसको गिरफ्तार भी नहीं करते

जिसने कुचला था। ये तो सुप्रीम कोर्ट की वजह से इन्हें गिरफ्तार करना पड़ा। लेकिन किसान बेचारा शांत रहा। वो केवल अपने अर्जुन की आंख की तरह अपने आन्दोलन पर केन्द्रित रहा। सात सौ किसान शहीद हो गए, सात सौ किसान। अपने ही देश में, अपनी ही चुनी हुई सरकार के खिलाफ लड़ते–लड़ते सात सौ किसान शहीद हो गए। उन सभी किसानों को मैं नमन करता हूं। लेकिन एक खुशी की बात ये है कि उनकी आत्मा को अब शान्ति मिल रही होगी क्योंकि उन्होंने जिस चीज के लिए शहादत दी वो अंत में लक्ष्य पूरा हुआ और किसानों की जीत हुई। कितनी गालियां दी गई इन लोगों को। एन्टीनेशनल है, अपने देश के किसान एन्टीनेशनल हैं। अगर अपने देश के किसान एन्टीनेशनल हैं तो ये सारे जो बैठे हुए हैं उधर वो क्या हैं फिर। जो गालियां दे रहे थे वो क्या है फिर, वो नेशनल हैं? एन्टीनेशनल है, खालिस्तानी हैं, आतंकवादी हैं, चाईना के एजेंट हैं, पाकिस्तान के एजेंट हैं पता नहीं क्या–क्या किसानों को गालियां नहीं दी गई। कभी किसी ने सोचा नहीं था आजाद भारत में एक ऐसा दिन आएगा जब अपने किसानों को इस तरह की गंदी–गंदी गालियां दी जाएगी। किसानों ने पलट कर इसका जवाब नहीं दिया। किसान शान्ति से बैठे रहे। इतनी हिंसा की गई, इतने वाटर कैनन इनके ऊपर बरसाए गए लेकिन इनकी हिम्मत के सामने सरकारों के वाटर कैनन का पानी सूख गया। सड़क के ऊपर कीले ठोकी गई लेकिन इनकी हिम्मत के सामने सरकार की कीले भी पिघल गई। बैरियर लगाए गए सब किया गया इनको लेकिन इनकी हिम्मत नहीं तोड़ पाई ये सरकार और अंत–पंत में इस सरकार को झुकना पड़ा। इनके अंहकार को तोड़ दिया इन किसानों ने। जिस तरह से आजादी की लडाई लड़ी गई थी, ये किसी आजादी की लड़ाई से कम नहीं था। सबसे बड़ी बात ये हुई कि ये किसानों की जीत नहीं है ये जनतंत्र की जीत है, भारत की जीत है। इस देश के अंदर जो पिछले कुछ सालों से लोगों का डैमोक्रेसी के ऊपर से भरोसा उठता जा रहा था कि यार इस देश के अंदर तो कुछ चलता ही नहीं है, इनकी मैजोरिटी आ गई है ये कुछ भी कर लेते हैं, किसी के खिलाफ भी ये करते हैं वो करते है, रेड मारते हैं लोगों को तंग करते हैं, डैमोक्रेसी तो बची ही नहीं देश के अंदर। ऐसा इनको भी लगता है इनसे जब प्राईवेट में बात करो ये भी बहुत दुखी, ये भी सारे बहुत दुखी हैं। लेकिन ऊपर से आर्डर आते हैं कि भई यहां पर जो ज्यादा तेज बोलेगा उसको पद मिलेगा। तो इनकी मजबूरी

है पर ये हैं सारे अपने ही। दिल से ये सारे अपने साथ हैं। सो जनतंत्र की जीत हुई है। जनतंत्र में लोगों का भरोसा बढ़ा है बहुत ज्यादा। ये एक तरह से हवन था। उस हवन में हम सब लोगों ने भी अपनी तरफ से एक चम्मच घी का डाला। जब हमारे को फाइल आई हमारे पास कि किसान आ रहे है पंजाब से चल पड़े हैं, बार्डर पर पहुंचने वाले हैं, उन किसानों के लिए स्टेडियम्स को जेल बनाया जाएगा तो मेरे को अपने अन्ना आन्दोलन के दिन याद आ गए उस टाइम हमें भी जेलों में रखा गया था। इन्हीं स्टेडियम्स के अंदर हम भी रहे हैं हमने भी रातें काटी हैं इन्हीं स्टेडियम्स के अंदर। तो मैं समझ गया कि ये स्टेडियम्स के अंदर इनको पटक देंगे सबको किसानों को और आन्दोलन खत्म। फिर तुम स्टेडियम में बैठे रहो जितने भी दिन बैठना है तुम करते रहो तो हमने मंजूरी नहीं दी। बहुत नाराज हुई केन्द्र सरकार बहुत नाराज हुई। वैसे ही बहुत तंग करते हैं मैने सोचा थोड़ा और तंग कर लेगे क्या फर्क पड़ता है, तो बहुत नाराज हुए। बार्डर के ऊपर जितनी जरूरत पड़ी, जब–जब जरूरत पड़ी पानी की, खाने की, टॉयलेट्स की हमने पूरी मदद की किसानों की। तो हमने अपनी तरफ से जो भी हो सकता था पूरी किसानों की मदद की। एक चीज मैं देख रहा हूं मतलब बेशर्मी की भी हद होती है जब ये तीन काले कानून लाए गए तो भाजपा वालों ने चारों तरफ वाह क्या मास्टर स्ट्रॉक है और जब ये तीनों कानून वापिस लिए गए तो बोले वाह क्या मास्टर स्ट्रॉक है। मतलब मैं ये ही कह सकता हूं मुझे बहुत दया आती है आप लोगों के ऊपर। क्या गत बना दी आप लोगों की आपके नेताओं ने। ऐसा भगवान किसी के साथ न करे। किसानों की जो मांगे हैं, अभी जो पेंडिंग मांगे हैं हम उनका पूरा समर्थन करते हैं। टेनी साहब को तुरन्त केन्द्रिय मंत्री मंडल से बर्खास्त किया जाना चाहिए। मुझे नहीं पता कि केन्द्र सरकार की क्या मजबूरी है। कुछ तो मजबूरी होगी जो उस एक आदमी का बोझ लेकर केन्द्र सरकार अपने कंधे पर ढो रही है। क्यों नहीं उसको हटा देते। मुझे नहीं पता कि उनकी क्या मजबूरी है, कुछ मजबूरी होगी जरूर लेकिन पूरा देश मांग करता है कि ऐसे व्यक्ति को तुरन्त बर्खास्त किया जाए। एमएसपी की उनकी जो डिमांड है वो बिल्कुल जायज है इसके ऊपर भी हमने बहुत अध्ययन किया है। ये राजनैतिक तौर पर नहीं मुझे लगता है अगर एमएसपी लागू हो जाता है तो देश की एग्रीकल्चर सैक्टर को बहुत बड़ा फायदा होगा। पूरा का पूरा बदल सकता है। जितने केसिज झूठे केसिज इन लोगों के ऊपर

लगाए गए हैं वो सारे वापिस लिये जाएं और जो सात सौ किसान शहीद हो गए हैं उनके परिवारों को उचित मुआवजा दिया जाए। किसान जब तक वहां बैठे हैं किसान तय करेंगे वो कब उठना चाहते हैं, जब तक किसान वहां बैठे हैं हम किसानों के साथ है पूरी तरह से किसानों के साथ हैं। हर कदम पर उनके साथ हैं। गोपाल राय जी द्वारा जो यहां पर प्रस्ताव पेश किया गया है मैं उसका पूरा समर्थन करता हूं।

माननीय अध्यक्षः अब माननीय विकास मंत्री श्री गोपाल राय जी चर्चा का उत्तर देंगे वो संकल्प को पारित करने का अनुरोध करेंगे।

माननीय विकास मंत्री (श्री गोपाल राय): माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन ने पिछले एक साल के किसान आन्दोलन का जो दर्द है, जो पीडा है और जो साहस है और जो सफलता है, उन सभी पहलूओं पर अपनी बात को रखा है। मैं इस सदन के सामने जो संकल्प है उसे पारित करने का अनुरोध करता हूं।

माननीय अध्यक्षः अब श्री गोपाल राय जी माननीय विकास मंत्री द्वारा नियम 90 के तहत प्रस्तुत संकल्प सदन के सामने हैः–

जो इसके पक्ष में है, वो हॉ कहे,

जो इसके विरोध में है, वो न कहें,

(सदस्यों के हॉ कहने पर)

हॉ पक्ष जीता, हॉ पक्ष जीता। संकल्प स्वीकार हुआ।

सुश्री राखी बिडला, सुश्री भावना गौड़। यह सदन दिनांक 26 नवम्बर, 2021 को सदन में प्रस्तुत प्रश्न एंव संदर्भ समिति के प्रथम प्रतिवेदन से सहमत है, ये प्रस्ताव सदन के सामने है :–

जो इसके पक्ष में है, वो हॉ कहे,

जो इसके विरोध में है, वो न कहें,

(सदस्यों के हॉ कहने पर)

हॉ पक्ष जीता, हॉ पक्ष जीता। प्रस्ताव पारित हुआ।

अब सदन को अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित किया जाता है। इससे पहले मैं सदन के नेता व माननीय मुंख्य मंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी, माननीय उप–मुख्य मंत्री श्री मनीष सिसोदिया जी, सभी मंत्रीगण, माननीय नेता प्रतिपक्ष श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी जी तथा सदन के सभी माननीय सदस्यों का हार्दिक आभार प्रकट करता हूं।

मैं साधना चैनल का भी आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने आज इस कार्यवाही को निःशुल्क अपने चैनल के माध्यम से जनता तक पहुंचाया है। इसके अलावा सत्र के संचालन में सहयोग देने के लिए विधान सभा सचिवालय तथा दिल्ली सरकार के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ–साथ विभिन्न विभागों और सुरक्षा एजेंसियों तथा मीडिया का भी धन्यवाद करता हूं। अब मैं माननीय सदस्यों से अनुरोध करूंगा कि वे राष्ट्रगान के लिए खड़े हों।

राष्ट्रगान :

माननीय सदस्यों से प्रार्थना है एमएलए लॉज में भोजन की व्यवस्था है, लंच ले करके जाएं।

अब सदन की कार्यवाही अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित की जाती है।

....

© दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी राज्यक्षेत्र शासन अधिनियम, 1991 की धारा 18 (2) के उपबंधों तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली विधान सभा प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली के नियम 281 (2) के प्रावधानों के अंतर्गत प्रकाशित तथा ग्राफिक प्रिंटर्स, स्मैट फॉर्म्स, नई दिल्ली–110 007 द्वारा मुद्रित।